

लेखक सारू प्रकाशक :
ललित प्रकाशन, जोधपुर-७
पैली छापी : वि०सं० २०३१
कोरणी : गोविन्द कल्ला

मोल : दस रुपिया
Price : Rs. 10/-

कंवल् पूजा

(राजस्थानी भासा)

सत्येन जोशी

(सारा अधिकार लेखक रा)

KANWAL POOJA

(Rajasthani Novel)

Satyen Joshi

Lalit Prakashan
JODHPUR-7

दगर्द :
हिमावय प्रिण्टर्स, जोधपुर

सन् १९६१ में पँलड़ो बार जँसलमेर गया अर तय पू जगजग जुलाई १९६८ तक उठई रँयो । जँसलमेर री घोगा घरती री हवा अर पाणी मे चाणै काई जाइ हो कै म्हारो मन उठई रमग्यो । जँसलमेर म्हागे रग-रग मे अजू रमै, अर ता-उमर म्हारै रू रू मे जँसलमेर री सोरंम आवनी रँवैली । मोनै जँडै पोळै भाटै री हवेलियां, मिन्दर, मूरतियां अर रँवासियां री निरमळ अर साचो मनेहु, गडसीमर री पांणी, गोवा चौक अर मोटा-मोटा घोरां री घुड, म्हारै मन नै मोय लियो । लागै कै म्हे जलम-जलम सून जँसलमेर री ई रँवासी हूँ । छोटै सून मोटो, हर जात-धरम री, दूकानदार सून लेय सरकारी मुलाजिम अर सामाजिक कार्यकर्तावा सून ओळखाण; मोद अर मुळक भरी बाता, अर लाड कोड री मनवारा, कद भूल सकूँ ? नी भूलू ।

राजस्थानी भासा मे लिखण री प्रेरणा मनै भइसा (जन कवि 'उस्ताद') सून मिळी; वारै ई घड़ियोड़ी माटी हूँ ।

सन् १९६३ में जँसलमेर हाई स्कूल मे, इतियास रा अध्यापक सरगवासी श्री भभूतिमलजी परमार सून ओळख व्ही । वे ई साच पूछै तो मनै इतियास री अलेकां कथावां मे रम घोळर पायो । वे ई मनै ई उपन्यास लिखण री प्रेरणा दी । ई बिच्चै मास्टर सा'ब अबाणचक देवलीक व्हेगा पण वांगी दियोड़ी भभूत अजू म्हारै कनै सम्मालियोड़ी ह्यो ।

ई उपन्यास नै अकर लिखियो, वेलिया नै मुणायो । वा री समभावण अर भोळावण सून केई कुमिया पूरी व्ही अर उपन्यास री काया पलटगी । कुमियां अजू वी व्हे सकै अर व्हेला, पण ओ भागै बघण मे मददगार व्हेला, ओ ई विस्वास है ।

उपन्यास री भाव भोम माथे सरपांत में, की कँवणो अबखी रँवैला, पण इतियास री अधार लेय नै उपन्यास लिखण रँ कारणै, इतियास री चरचा करण में अणूताई निजर नी आवै ।

सून तो इतियास री साच, नुंवी-नुंवी खोजा सून बदळती रँवै, ई बास्तै इतियास री अधार कूड़ी पड जावै, पण ई कथा मे, जित्ती बी कूड निजर आ सकै वो कल्पना री साच है । इतियास नै कूड़ी बतावण री हठ नी ।

गजनवी री सुलतान मँमूद, ईसवी सन १००४ मे माटी राजा विजयराज माथे हमलो कियो । इतियासकार, माटी राजा विजयराज नै भाटिया, मोटा भीरा

अर भाटियानगर री राजा बतायो है । मैमूद रै समै रै भाटी राजा री राजधानी 'तम्रोठ' हो । ई बात री प्रमाण जैमलमे री तवारीख, जैम्व टॉड अर मुंहता नैणसी री ह्यात हत्याद सू' मिलै । ई सारू म्हारी भी कोल है के भी हमलो तम्रोठ मार्घ दिह्यो ।

प्रो० मोहम्मद हबीब (मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ में इतिहास अर राजनीति शास्त्र रा प्रोफेसर) आपरी पोथी 'सुलतान महमूद ऑफ गजनी' में, ई हमलें रा कारण दरसाया है ।

अलउल्बी अर प्रो० हबीब री कंवणी है के राजा, हारग्यो अर दुसमण रै हाथे पड़ण री जागा कटार खाय मरग्यो । उल्बी आपनै कंवै, के सुलतान जद पाछो जावण लागो तद बी नै बीत फोडा पड़िया, बी री सारी फौजां मष्ट ब्हेगी अर अकेलै सुलतान रा प्राण बचिया । जैसलमेर री तवारीख अर मुंहता नैणसी री ह्यात में लिखियो है, 'राव विजयराम मार्घ सिन्ध कानी सू' मोटी फौज आई । राव बढी अलाहा-सिद् ही । बी ऊपर देवीजी री पूरण किरपा हो । वो मन में संकळप कियो के फौज पाछो जावै तो कंवळपूजा करूं । बात कणी नै जताई नी । देवीजी रस घाया । बेढ हई । विजयराम जीतो, मुगल भागा । जद राव कंवळ-पूजा करण सारू तलवार काधेनू माण्डो तो देवीजी बोलिया, मां.....मां..... । म्हे पूजा मांनी । अर देवी आपरी चूड़ दी । राव चूड़ासा कहाया ।'

या सारी बातों नै सोचिया-समझियां, जको नतीजो मिलियो, वो ई उपन्यास नै पड़ियां सू' ई हाथे लाग सकै ।

कथा में राव अर मैमूद रै इलावा हूजा नाव, घटनावां अर बलांण, उपन्यास री जरूरत सू' पैदा दिह्या, क्यू' के इतिहास, अपणें आप में बीत ई रूखो विषे है, अर जद तक ई नै चीकणो नी कियो जावै, तद तक भी रुचै कोनी ।

विश्वास करूं के भी उपन्यास राजस्थानी भासा रै पढाकड़ा, इतिहासकारां, आलोचकां अर चायेतां नै दाय आ सकेला ।

जोशिया री खटकल'

जोधपुर १०

सत्येन जोशी

कान खड़ा रहेगा । नैण कानों में घुमगा । सुरता, धवण रँ सरणी पड़गी ।

पग, कानां रँ हलाया हलण लाग । भीणी-भीणी चाँदणी बादलां
सागँ घाँख मिचूणी रमण मे मस्त ब्हियोड़ी । काळजै मे अक सजब तिरस री तूठणी
रहेगी । मिनखा रा कान, पूरँ सरीर भर मन नँ मिन्तर सकँ, आ बात आज घी नँ
पँलपोत समझ मे आई ।

नैनी सुई रँ नाकँ मे सूँ निकळतोड़ँ पतळँ डोरँ रयूँ, भीणी राग मे गावणे
री सुर, जाणे किए दिसा सूँ भाय'र काना नँ बाध नियो । बावला कान, बी सुरीली
राग री पीछी करण सार पगा नँ हूकम हलायो । पग भागँ घणणा सर ब्हिया ।
रात री पँलो पोर है ।

सबासी तर सबासी । दो दिन रँ ओजकँ री घाड़ग । वो दोन्यूँ हाथां नँ ऊँचा
उठाय, सरीर नँ ताणियो, अक भटकी दिमी भर पाछी संभळियो । पाकेलँ नँ बाधियां
भावतो जाएण, वो अक घोरँ माथे बैठग्यो । च्याहँ कानो मोठ दोड़ाई भर घोरँ री
मुखमली गादो माथे पसरग्यो । मुठियां मे रेत भरनँ, बांसूँ पाछी रेत नँ खळकावण
लागो । सूँ-सूँ करतो बायरियँ री अक भोलो भायो । रमत में घान्दी पड़ग्यो । सरीर
में घोड़ी सी घूजणी छूटी । वो उठ'र घालस मोड़्यो । सबासी, भागळ खुड़काई,
कपड़ां नँ भटक'र वो ऊनी ब्हियो । अक छिन मार नैण मून्दिया । भाँस्या खोली ती
घीं कने अक दूजो ऊमो हो ।

‘बोल माऊ !’

‘ठाकरां ! सूट री माल यूँ फोती पचँ ।’

‘हूँ ?’

‘हाँ ।’

‘मा तलवार देखी ?’

‘हाँ.....हाँ.....हाँ.....!’

‘भणो दाँता सूँ तोड़ दी ।’

‘हूँ ?’

‘हाँ ।’

‘मा तोड़'र बताव, जे जवान री पाकी रहे ।’

‘तट-तट ।’

घीं नँ रँतो भायो जद बी रँ हाथ में तलवार रा दो टुकड़ा हा । वो माथ
मेकसी हो । वो दूजोड़ँ नँ जोषण री गरज सूँ घठी-वडी निबरां दोड़ाई, एण कटेई

सूँ बास नो भाई । नीचें भुक'र, बी पंजा रा सैनाण हेरण लागी । बी न ऊँघी दिसा में पगरखियां रा सैनाण निजर भाषा, पण अँ सैनाण तो बीं रो खुदरी पगरखिया रा हा ।

ई पैला के, घो कीं सोचें, बीं रे काना न कोई सुर बेघावी । वो बावळें बतूळियें दाई बी उवाज री दिसा मे नाठण लागी । जो दिसा में वो दोइयो जावतो, सर्मिली दिसा सूँ बादळा रा भुण्ड, चन्दरमां नै डाक'र सपाटे दोइ रेंया हा । बीं रे सरीर माथें वारी-वारी सर चानणो भर छिया रें-रें न व्हेती । अँक छिन साह बीं नै भावरी असवारो री चेतो भायो ।

भाज वो घणकरी माल लूट'र लायी है । साण्ड मार्थ सोनै रा भाभूण, चान्दो री टिकलियां भर मोतियां री वेसुमार जकीरो । दो मोटा बोरा में लादिपोडी । भाज वो अँक चवदे बरस रें छोरें री गरदन उडाई, अँक मन्द री टांगां तोड़ी, दो मिनतां नै तलवार सूँ घामल किया । अँक बीस बरसा री विधवा नै राण्डाप री जूण सूँ मुगती दिराई । सिङ्गा पड्यां पैला वो सीव में घुसग्यो । अँघ मुलतान रा सिपाई राज रें परवाणे बिना नो आ सकै । वो हमें बेफिकर है ।

हा, म्हं बीस बरसां री जवान हूँ, पुरो साढ़ी छे फुट रो, सोनी भ्रमसी घांगळ, हाथ गोडां तक डीगा, रग रातो, डोल लौठी । ढकणे मे बीडियोई काच में मूणडी देख मुळकियो । दंडी खोल, अँक किरचो बाकें मे घातिवो, मूँछां माथें हाथ फेर, बट लगावण साह घांगळो भर अंगोठेरें बिचन मूँछां रा नैना वालां नै लेय'र अंगोठें री अँक रगड़की लगायो ।

गावणे री भीणो भर मदरी सुर ठेठ कानां कनै घाय पूगो । हमें बीं रा कान घणा उतावळा व्हेगा । बी नै लागो, हमें जे वो ई सुर नै बन्द नो कियो तो बी री काळजो फाट जातो । बी री अँक हाथ काळजे री जाया जा पूगो । बीं री काळजो जोर-जोर सूँ घक-घक करतो हो । बीं नै पसरियोडा, डोगा घोरा रें लारलें पासी सूँ माय री लपटी उठती सी दीखी । लाय रें मांय सूँ चिणगारियां फूटती भर बीं रें फूटण रें समथें ई बीसाळया निकळती । वो दोइ नै घोरें रें हंगर माथें बढायी । सठें हमे माय री लपटां कोनी हो । वो बीजोई पासी री ढाळ उतरण लागो । बीं नै मखायो, वो समन्दर रें मांय उतर भायो है । बी री कण्ठ मूख रेंवो है । वो दोनूँ हाथ नीचा लेजा'र घोबो भरियो । घोबो भर मूण्डे मे सबदछो लियो । रेत सूँ जीम भरगी । धू-धू कर वो रेत नै धूकण लागी । इनरें मे वो रें काना मे कोई मंथी पुनी मुलीजो ।

‘पूनम !’

‘है !’

‘भाव, म्हारै लारै बाजा ।’

वी रै भागै कोई नो हो, पण वी नै लागती कै वो कियो रो पीछी करती
वाल रैयो है ।

‘आगली अंक मन्दिर रा किवाड़ खटखटाया । माय सून भम-भम भाभरियां रा
बोल सुणीया । वो किवाड़ खुलता ई भ कार रो पीछी करती भागै बघण
लागी ।

मोजड़ियां बारै खोल, वो पग उबराणी व्हेगी ।

‘पाणी ।’

‘अठै पाणी रो काई काम ? दाह पीवो ।’

वो सुप-सुप सात-घाठ चुल्ला चसोड़ लिया । हमे की मांस में सांस आयी ।
नैणां मे अेक चमक वापरगी । हमै सै की ऊबळी अर साफ दोसण लागी । दस-बन्दरा
अपसरावां रो अेक भूलरी आय, वी नै घेर लियो । वो भागै बघण लागी । घेरी वीं
रै सागै-सागै भागै बघण लागी । सामे सिंघासण भायै अंक बोत ई फूटरी अपसरा
वीणां-बजा रैयो है । वो सुर नै मोलख लियो । वी अपसरा रो राग खीरै दाई वीं
कानी लपकी । वी नै लागी कै वो बळ रैयो है । वो, वी अपसरां कानी दोन्यून हाथ
पसार्या । भूलरी अदीठग्यो । अपसरा वी रै बापा मे भूलगी । वी नै लागी, वी रै
सरीर मे लाम सुलगगी है । वो पाछो भूलरै सून धिरग्यो । केरु भागै पावण्डा घर्या ।
अेक अपसरा मोछी व्हेयी । भीत मायै अेक पूतळी मडगी, हाथ मे वीणा लियोड़ी,
भांगळियां तारा नै अम्भोड़ रैयो है । नैण माया मून्दियोड़ा, बा नीची धुन कियोड़ी
मगत है । वो हाथ लगायो । भांगळिया हेम सून ठरगी ।

‘मा तो भाटे रो मूरत है ?’

ही-ही कर भूलरै मांय सून अेक अपसरा हैनी अर मूरत रै बाजू जाय चिरगी ।
अेक पग रै अेक अंगोठे मायै पूरै सरीर रो भार समाळ, बीजै पग नै लारली कानी
घोड़ी ऊँचो कियोड़ी, ई पग रो पजो बीजोड़ पग रै गोड़े रै लारले हिमै सून घड़ियोड़ी,
अेक हाथ सारस रै पंख दाई फैलियोड़ी, हवाळी, कळाई सून ऊपर उठियोड़ी । अंगोठे
अर वी रै पाखती री भांगळी रै मेळ सून अेक छल्लो बणायोड़ी । बीजोड़ हाथ रो अेक
भांगळी नोचलै होट नै टुबं बाकी भांगळियां अंगोठे मायै अेक बीजो सून चिरियोड़ी ।
चितवन घोड़ी खांगी । कमर मे घोड़ी सी घांट, नैणां मे उग्माद, होटां मायै मोठा सी
मुळरुण । गू पियोड़ा कैंसां री चोटी सार गुगु घांटा लायोड़ी, कमरबन्द सून घोड़ी
नीची । पेट मे दो सळ । सूंटी, फांक री सकल धारण कियोड़ी ।

अेक अपसरा पगां मे भाभरिया बांधण लागी । अेक दोन्यून पगां

छोड़ा कर सारे सूँ ओढ़ियां नै ऊँची उठाय आपस में चिपोली । हाथ दोनों, माथे सूँ घोड़ा ऊपर जावे । अंगोठा आपस में भिड़ियोड़ा । पूरी छेती माथे घांगळियां आप रो जोड़ागत सूँ नुक्का भड़ायोड़ी ।

‘ई’ नै खुद रे रूप रो कीं घणौ गुमात है ? कै पछै घा खुद ऊपर हूळै है ? कद सूँ दरपण मे मूण्डो देख रेयी है । ओक हाथ सूँ माँग भरे । भजूँ माँग नी मरीजी ? आ मरीर नै यूँ बयाँ कर मोड़ ऊभी है ?”

वो अंटळ सूँ काच निकाळ खुद रो मूण्डो बी मे देखियो । डब्बी खोल’र ओक किरची बाकें में घती । की सवाद लागी । ओक किरची बिसरकी । सीरी घाययो । बी नै लखायो वो हळकी व्हेगी है । जीव में सोराई घाययो ।

ठीक ! तो ईं रे गळें मे मृदंग लटकायोड़ी है ? बी रो हाथ मृदंग माथे घाप देवण साह लपकियो । घांगळियो मे ओक भन्नाटो चालगयो । भाटें रो भूँडी लागी । वो घांगळियाँ नै बाकें में घत, चूस लो । बारें काड, दो-चार फटका दिया । भजूँ भन्नाटो चालती हो । वो घांगळियाँ पाछी बाकें मे घतली ।

वो गिणनी करी, पूरी सोळा अपसरावाँ ही । सोळा रो सोळा जाणे भौता में बीड़ियोड़ी । ओक ओढ़िया ऊँची कर, पंजा रे बट्ट, गोडा भुकाय नीची व्हेपी ही । हाथ जोड़’र किणो रे ध्यान मे मगन । ओक रो ओक टांग पूठ कानी ऊँची उठायोड़ी । वो टांग रे अंगोठें नै बीं रो ओक हाथ भपड़ राख्यो । बीजी हाथ, माथे ऊपर हथाळी नै मुगट बलायोड़ी । ओक फेहें ओक टांग ऊँची उठाय गोडे माथे टेक राखी । हाँ, आ बंसरी बजा रेयी है । भरे ? आ ईं रो ओक माथण कमर ऊपरले सरीर नै खाँगी कर दोन्हूँ हाथ ऊपर उठाय, मजोरा बजाय रेयी है । ओक गहड़ रो मुठा बलायोड़ी, तो ओक ओर नाच में मगन । ओक रे हाथा में भारती रो याळ । हाँ, ओ पूजा निरत है ।

वो चमकायो । आ कुण ? सांमी माँ-जायी ऊपी है । अर देखो, हमें सरम कर नैणां नै हाथां सूँ ढाँप लिया है । वो आपरे ओक हाथ सूँ खुद रा नैणं ढाँप लिया । भारी बधग्यो । बी रो हाथ नैणां सूँ रिंगत सोने माथे घायगयो । वो खुद रे नीने नै मुट्ठी में भरण रो मसखरी करी । बी रे मुण्डें सूँ ओक तिमकारी निकळगी । वो दोन्हूँ होटां नै घापमरी मे दबाय वा ऊपर जीभ फेरी । बीं नै लागी बी रे होटां सूँ सेत भूवे ।

हमें वो माँयती घेर में जाय पुगी । वो सोचियो—सोवाँ काने कित्ती घन हो ? कित्ती पुरमत हो ? कंडो चहनी हो ? वो मन मे मरुद्धर लियो ‘वो ओक मिन्दर पुणवासी ।’

परकमा में वो ओक-ओक भाटें माथे फूटरी गहत चियोड़ी, भाँन-भाँत रा देव

बूँटा । श्रेक-श्रेक भाँटे ऊपर श्रेक-श्रेक जोड़ो लुगाई मरद रो, मदगीलाई में भल्लूमियोड़ी । वो निरणी कियो — भांगला लोग कितरा बेसरम हा । मिन्दरां में झँड़ी मूरतियां लगावण रो काँई काम ? वो गिणती करो, कोई चार बीसी ऊपर चार मूरतियां रो, मुतलब श्रेक ई निकळतो । वो भ्रमल रो श्रेक किरचो बाके में घती । डब्बो रें काच सूं श्रेक मूरत माथे पळकी करण लागो । इतरें में दो लूँठा सरीर बीं रा दोन्यू हाथां ने काठा कस'र पकड़ लिया । बीं ने घोस'र श्रेक कोटड़ी में लेयग्या, भर जोर सूं धक्का देय भांगणे पटक दियो । सरीर भदीठग्या ।

ई कोटड़ी में सामोसाम देवी रो श्रेक मूरत । जागती दो जोतां । धूप घर केसर रो घोरम-घोर मंक । घोड़ी सी धुंघो कजळीजतो । श्रेक मड़द काळी भंसे जेडो डोल, डरावणा गेण, मोटी-मोटी काळा केसां रो लटा, लिलाड़ माथे तेल चोपड़ियोड़ी । होट झँड़ा राता जाणे रगत घेपड़ियो । उमर घघगावळी । पंतीस-चाळीस रें नैडी । सामो श्रेक सोळा-सतरां बरसां रो काचो कोमळ नार उघाड़ें डोल ऊभी है । ईं ने कोई लाज-सरम बी कोनी ? वो मरद दाह रो श्रेक तासळो बीं ने धामियो । वा गट-गट पीपणी । गेणां में उजब उभाव भर, वा ईं नुं'वोड़ें पुरंस ने इचरज सूं निरखियो ।

‘...तू...तू...!’

‘हूँ ! भर तू...पू...न...म ।’

‘तू...म्यारळो नांव क्यान जाणे ?’

‘नांव काँई, म्है त्यारळें पूरें खानदान ने जाणूँ ।’

‘पण, तूं ओई कुण ?’

‘क्यूँ ? तूं मने उठावण रो सोगन नी खादी ? ले, उठाले, हमे ।’

‘पण ओ मिनख...?’

इतरें मे पाखती बैठो मिनख श्रेक तलवार वां दोन्यू रें बिबी ताणली ।

‘बळ सूं जीतो भोगी, उठावो । पण याद राख, घेय भावोड़ी जीवती पाछो कोनी जावे !’

‘मोमजी तलवार...?’

‘नामरद ।’

‘यूँ ।’

‘पूनम !’ वो घाँस्यां बारें काह तलवार पूनम सांमी तोणी । पूनम श्रेक सात रो मारी भर तलवार नोचे पड़गी । पूनम तलवार माथे पण घर बोल्हो, ‘नामरद ! बळ म्है तो उठा पण, घर ले धें तलवार’ ।

वो पूरी तागत लगाई पण पूनम रो पण टम सूं मन नी धिंधी ।

'ठीक, म्हे फ़ैसली करूँ ।' नारी मुर बोल्हो ।

'मन्जूर ?'

'हाँ ।' दोनूँ ह़ैकारो दियो ।

'कवळपूजा करे सो मने पावो ।'

'कवळपूजा ? म्हे की नी जाणूँ । पूजा म्हे किणी रो नी करूँ । पूजा तो सोंग करे म्यारळी ।' पूनम बोल्हो ।

'म्हे करूँ कवळपूजा । मने ओई पूरो विसवास ।'

'सून्दो नेण !'

'सून्दिया ।'

पलक भपकवां ई बी भैसे रो मूण्डकी भागणे खिरगी । नारी बीं रे ठोकर मारी ।

पूनम रो हाथ पकड़ नारी बी नै बारै ह्यार्ई । अन्धारै मे जाणे कितरा पागो-
तिथा चढी, उतरो, फेहं चढी । अन्धारो भणवाग, सूम्मे नी, हाथ नै हाथ । पूनम नै
सागो, कोई बी नै काठो भीच लियो है । बी नै कठई सूँ निवास मिळ रेंयो है । बी
रो पूरो सरीर अ़ेक उजब तणांव में दूटण नागो । वो बावळी व्हे ज्यूँ जोर-जोर सूँ
बकण लागो, 'यसोघरा...यसोघरा' ।

'पूनम !' नारी कड़क'र बोली ।

'काई ?'

'ह़ै यसोघरा नी, चम्पा ओई चम्पा ।'

'तो यसोघरा ?'

'मुळतान रो राजकंवरी ? बापड़ी हमे देवदासी बणगी ओई ।'

'पण म्हे तो सुणीं कै वा...?'

'हाँ, म्हे बी बी रे बारै मे सुण राकी ओई घर काल नै सोंग म्यारळ' बारै मे
बी घणकरी बातं करैला । खैर ! तूँ मिळवो चाओ यसोघरा सूँ ?'

'हाँ, काई वा...?'

'हाँ, ओई । पण तूँ देख नै बीवै तो नी ?'

'म्हे काळ सूँ बी डरूँ कोनी ।'

'काला, काळ सूँ तो मे कोई डरै ।'

'ह़ै कोनी बीवां !'

'तो पछै भाव भाज तने मिळाय हूँ काळ सूँ ।'

चम्पा, पूनम नै नागा घोरां माथे ले घाई । वा घजूँ उघाड़ी ई ही । पूनम
रो चोनेणो मे बी नै निरख, पूनम रो भाक्पा फाटी रेंगो । घीरे-घीरे वो चम्पा रै
का नै नेणां सूँ पोवण लागी ।

‘तैनं सायत परमातमा खुद बैठे’र घड़ी हंती?’

चम्पा खुद री सोभा सुण सरमायगी भर नेण नीचा कर लिया । नेण नीचां करता ई, बीं नै चेतो भायी के वा.....लाज छिपावण सार कीं कोनी हो । वा पूनम रै सरीर सूं ढांप लीची खुद री उघाड़ी देही ।

धीमै-धीमै पिघळण लागी हेम । अचाणचक बतूळियो बावड़ियो ।

(२)

तनोट, घूड़ रै समन्दर में बसियोडी है ।

घठे सूं बीस-पच्चीस कोस दक्खण-पूरब मे मगरा भर छोटा-मोटा झंगर इण बात री साख भरै के कोई जुग मे घठे अघाग समन्दर हवोळा सेतो ही ।

भाटी राजपूतां रै इण दुरगम गढ तनोट नै पास-पाडोस रा रेवासी ‘नगर’ भर सुलतान मौमूद गजनवी भर उल्बी भाटिया नगर रै नांव सूं भोळलै । तन्नोट गढ री निरमाण, राजा केहर, आपरी कुळ देवी तन्नोराय रै नांव मार्य सख करायो पण गढ री निरमाण पूरी ब्हिया पैला ई वो देवलोक ब्हेणो । बीं रै तारै बीं री बेटो राव तन्नो, ई गढ री निरमाण पूरी कियो । तन्नो री पाटवी बेटो राव विजयराज ही । तनोट रै पच्छिम में सिन्धु नंदी बौवती, भर उठे ई सिन्ध प्रदेश ही जठे वाराहा री राज हो । दक्खण-पूरब मे मुल्तान री राज हो । वाराह राजरी सीवा, तनोट राज सूं मिलती ही, ई वास्तै छोटी-मोटी छटपट रात-दिन ब्हेनी ई रैती । वाराह, भाटिया री बादुरी भर घुतराई सूं मन ई मन मे बळता । वे भाटियां रा दुसमो ब्हेगा । वाराहां री भी कौल ही के तनोट री जमीं वारी है भर भाटी उठे मांडाणी कब्जो कर राखियो है । ईं सार वाराह, मौमूद ने पूरी इमदाद देवण री बचन दियो ।

मुल्तान में लंगा राजपूतां री राज हो । लंगा री बी तनोट माथे भांख बळतो । वां री बी भी ई कंवणी ही के भाटी राजा वां रै राज री धणकरी जमीं दाबली है । विजयराज रै बाप तन्नो रै जीवतां यकां बी वाराह भर लंगा मिल’र मुल्तान कांनी सूं तनोट माथे हमलो कियो हो । च्यार दिन तक घमसाण लड़ाई चाली । लंगां साथे म्लेच्छ, यवन, खिची, खोर, जोड़या, जुद भर सय्यद इत्याद बी घोड़ां माथे बैठ, तकरीबन दस हजार री फौज लेय ने घावी कियो । ईं में वे खास रूप सूं हुसैन शाह री इमदाद ली भर बी ने अगाडी कर दियो । चौथे दिन राव तन्नो आपरै बेटे विजयराज रै सारी दुरग सूं वारै घाय जुद् कियो । बाप-बेटा मिल नै दुममणा ने भूण्डा रगवोळिया । सबसूं पैला वाराह भागिया । वां पछे सैंग यवन,

म्लेच्छ, लगा इत्याद जान बचाय उल्टा पगों भागा । ईं जुहू में भाटियां री जीत सूं डरने, झूटा (बूटा) राजपूत, विजयराज साह नारेळ भेजियो भर घावरी बेटी परणाय बेलीयो कियो ।

तनो पाछें, राव विजयराज सिंघासण सम्भाळियो । की बरसां पाछें मुल्तान माथे भरब रा करमाती मुसलमान चढ घाया भर लगां री जहां छोद दी । राजा मारघो गयो ।

तनोट रें उतर में शाहीवंस री राजा जयपाल राज करतो । बीं री राज पंच-रथ [पजाब] नांव सूं भोळखीजतो । अठे री राजा अनंगपाल भीमूद गजनवी री बीत बीरतां सूं मुकाबलो कियो पण जीतण साह बीं कने फोज भर साधनां री कमी हो, ईं वास्ते दुखी होय'र वो बळी मरग्यो । बी रें लारें बी री बेटी जयपाल मादी माथे बोठी । वो आपरें बापरो बदळी लेवण साह बीत मोटी फोज खड़ी करी भर हिन्दू राजावा सूं मदद मांगी पण भीमूद री फोज रें मुकाबलो वो बी जी टिक सकियो क्यूं के हिन्दू राजा बी री मदद करी कोनी । वो गजनवी नै चौध देवणी कबूल कर, पिंड छुड़ायो । भाटी राजा, ईं जयपाल रा मातेत हा ईं वास्ते वानें बी गजनवी नै चौध चुकावणी ही पण वे चौध देवण सूं नटग्या । ईं वास्ते गजनवी, भाटिया माथे हमलो करण री तेवड़ी ।

तनोट रें देखण में लोढ़ वंस रें परमार राजावा री राज ही । ईं री राज-धानी लोढ़वा ही, जठे सूं होय'र काक नदी बौवती । भी इलाकी मगरें री है भर सडाळ रें लागतो ई है ।

पूरब दिस कानी भाटियां री राज खूब फैलिघोड़ी हौं भर मळगी मळगी जाग मण्डावर [मण्डोर] राज री सीवा तक पूणती । मण्डावर राज फळोदी तक घायोड़ी हौ ।

भारत सूं भरब भर मध्य एसिया सूं जुगा पुराणो बीपार री खाती हौ । यां देसां री भारत सूं बीपार, काबुल, कन्धार, अफगानिस्तान, सिन्ध मुल्तान भर भाटी राज रें भारग रें जरिमे व्हेतो । भरब देसा रा केई मोटा-मोटा सीदागर भारत में बीपार ग्यातर जावता-जावता रेंत । मध्यभारत में जावण री सुभीती री भारग सिन्ध, भाटिया भर अठे सूं बाहुड री हौ । बाहुड, पूण्यां पछे अक मारग गुजरात कानी जावती तो डूजी पूरब भर उतर दिस कानी । ईं मारग में तनोट री साम मोतब हौ । थोरों रें घणाग दरियाव में घो म्हांत अक टापू दाई हौ । जातरा सूं पाकिघोड़ा, भूसा-तिरसा सीदागनां री अठे भाय सुस्तावण री पुरमत मिलती । अठे री जळ इम-रत दाई हौ भर ईं घरती री नेह वारी सारी पाकेली मिटा देतो । ये लोग अठे दो-चार दिन धारांस करणे पछे भागे जावता । राजा सूं इजाजत लेय भी लोग दो-तीन रेंत बसेरा अठे बणवाया ।

राजा की इण सहूलियत अर दरियादिली रै बढलै अँ योग राजा ने नेग चुकावता अर अरब री केई कीमती चीजा, मलीचा, फानुस, मेवा, मुखमल, जरी इत्याद राजा रै भेट घरता । हरेक भेट रै साथे अँक असफिया सँ भर्योड़ी चान्दी रो घाल बी व्हेती । या री बोली अर बरताव बीत मीठी अर अपणायत भर्यो ही, ई वास्ती यां लोगां सँ परजा री बी बोन मेळ-जोळ बघयो । यां लोगां रै परताप सँ ई भाटी राज इत्ती बीमघसाळी हो । रैतां-रैतां कीं सोदागर अठे ई बसग्या । वे लोग अठे बडा-बडा गोदाम बणाया, बगीचा लगाया अर केई कुवा अर तळाव खुदाया । वाने ई घरती सँ अँडी लगाव दिह्यो कँ वे अठे टाळ खुदरे मुलक मे बी पाछा जावण साह राजी कीती हा ।

(३)

बूटा राणी, लाळसा भरी निजरां सँ पापरी मानेनण डावड़ी गुलाब कानी देख मुळक दी ।

“गुलाब ! आज तो तेने देखिया ई नसी चढ़े ई ।”

पछे एक ऊण्डी सांस खंचना यका महाराणी केहू बोली —

“जे तू मड़द व्हेती ?”

“इग्या करी महाराणी सा !”

गुलाब, राता मदमाता नैया साथे पल्लकां री आँधी पड़दी करेता थैकां बोली ।

“आज उमस घणी ओई, गुलाब ।”

गुलाब खिड़कियां रा किवाड़ खोल दिया अर चँवरें हुँलावण लागी ।

“गुलाब ! तिस लागी ।”

भारी मांय सँ केवड़े जळ री गिलास भर, गुलाब महाराणी नै निजर करी ।

“तू, अजू काली ओई ।”

गुलाब नकै सँ मुकडगी ।

“तू नाड ओई, अणसमझ, डोकी ।”

गुलाब रै नैयां री रातड़ अर चँरे री गोरी रंग, पल भर मे उडायी ।

“खिड़कियां बन्द करदी ।”

गुलाब खिड़कियां बन्द करदी ।

“अप घा, म्होजे नैडी ।”

महाराणी गुलाब नै खुद रै नजीक खांच, वो रै गाला ऊपर तक लया र ओक

लाम्बी सास खांची ।

“हे, गुलाब ! तू साच-माच गुलाब ओई वो ई रंग, वो ई रूप, वो ई सुगन ।”

मुरझायोडी गुलाब री कळी केहू खिसगी ।

“भ्यारळी कांचळी रा बन्धणा ढोला कर, जीव घबरीजे ।”

दो हाथ महाराणी की बरस कानी बधिया, भांगलियाँ रै परस सून महाराणी रै सरीर मे भरणादी चालग्यो ।

“गुलाब ! रयारळो भांगलियाँ सून ती लाय सिल्लयें ।

भांगलियाँ बाकें मे घत गुलाब बांनं ठण्डी करण री कूड़ी कोसिस करी ।

“उमिमा !” दूजो हावड़ी कानी देख महाराणी बोली ।

“अन्नदाता !”

“तूं म्यारळो मूण्डो काई देखें ? जा चमेली री चोटो पकड़ ल्याव ।”

उमिया चंवर भागलें मेल भोय सून अदीठगी ।

“किस्तूरी !”

“इम्या व्हे तो पलकां बिछाळें ।”

“बी, म्यारली नुं बी भोड़णी में तारा ऋग्म्या कै नीं ?”

“चन्दरमा री कसूर भौई ।”

‘जा ल्याव, देखा’

किस्तूरी लटगी ।

“दाखू !”

“अन्नदाता, कोई कसूर व्हेगी काई ?

“अबै केसां मे अणुतो तेल मत लपोळ, जा ग्हावण री सार कर ।”

दाखू दाँत काढती दड़बड़ीमगी ।

“सुन्दर !”

“माई-बाप, हयालियाँ में थूकौ ।”

“इबै पग चारणी घणी व्हेगी । देख ! ई हावे पग नै घणी दाब दियो ।

खैर, जा, दाता रै मैलां मे मीठ नांख ।

लारें रंगी गुलाब हावड़ी, महाराणी री खास मानेतण ।

“गुलाब ! भेय आ म्यारलै नैड़ी । भरे ! भाज तू कुम्भळापोडी बयूं भौई ?

“नी केत ? ऊ है, कोनी ।”

“गुलाब ! रयारळें सरीर में काई बेप भौई जीव नी व्हे कै तेंन छोड़ू ।”

“छोड़ दी, महाराणी सा, व्हे, व्हे.....”

“तू मने तोह दे गुलाब ! भाग दे, मने मरोड़ नांख ।”

“महाराणी सा ।”

“गुलाब ! जाणें बयूं मने सस्तावे, तू लुगाई नी मड़व भौई”

“महा.....”

“गुलाब ! रयारळें सरीर में उजब सुगन भौई नैणां मे उजब मस्तो, परस भरणादी ।”

“है, है—....”

“हां, गुलाब ! जाणै वयूं तयारळें परस सूं म्है बावळी व्हे जावूं ? म्यारळी कांचळी

“कसदू ?”

“नी खोलदें भर हा, म्यारळी ओढणी ?”

“डील ऊपर— --”

“नी, बीत तपत ओई, डील उघाडो ई सवावें ।”

“महाराणी सा”

“है”

“साथळां ती— --”

“है, काली किणी री देखी ओई माथळा अंडी ? नेळें री घम्ब देख्यो ?”

“है !”

“हां, देख, से की देख” ।

जाणै वयूं गुलाब ने लखायो के वा लुगाई नी मडद ओई, बी रें सरीर मे अक भरणाटी, सरीर मे अक सुगन, नैणां मे मस्ती, परस में चिणगारी ओई । वा, महाराणी ने काठी पकड'र बी सूं कुस्ती करण री तेवडली । महाराणी मुखमल रा नरम गिहें माथें लुटण लागी । गुलाब री पांखडिया बिखरणी । घचाणवक भेर बाजण सूं रामत मे घान्दी पडग्यो । संग डावडियां दडबडावती घाय पूगी । डील उघाडो महाराणी नरम सूं भाख्यां मीचली ।

(४)

घरां में घुसियोडा गैला, दिन ऊगता ई घाहूं दिसावां मे निकळग्या । रात री ठस्योडो घून, बंतळ री गेडियां रें सा'रें पाळो चालण लागो । डांगर, दुवार्यां हन्दा घाण छोड, गळियां सूं बजार घर बजार सूं रोई रें मारग चराई भर पेट भराई री जुगाड मे जुडग्या । बाभण, झोळी लटकाय, पेटियो पकावण री घून मे घळू भग्यो । घट्टियां सूं घमोडा खाय, घरवाळियां, पिणपारियां री पलटन वणाई । बेरें ऊपर खाली घडा री घरणाट, डेकली री डोठाई ने फटकारण लागो । बाणियो, बोवणी री बिळिया सूं बन्धियोडो, कलेवी सायें घात ख्यायो । बाळद, बजार में पगत जमाय बिकण री बारी बांघण लागी । डेरों रा डोडोदार, घमलवांणी कर, ह्याळो री रंग पाको कियो । प्रिस्थी रें घरम सूं घापियोडो, मडकल मुकनी; माडोणी मन ने मार, बजार री नाड पकड, भावी रें मंवरजाळ में मंवरग्यो । बीने बैठोडो बनडो मूछां छंटवाय, दरपण माथें दोरी व्हेण लागी । रूगळो, मदगल में भांभरियो रा भिणकारो सूं मर्योडा कानां, पिचडियोडा नासां भर घुंझी घालियो

नं मोणी देवतो, रमत मे लागो । हळधर, नुबे नारां री जोड री पूछां मरोड, हळ हांकण लागी ।

रेण भर ठारी सूं सुकडीजता चूलां रें नख सूं, निवास घर नाक सूं, धूंबो ऊठण लागी । छोरिया, गोबर री उडीक मे गळी गळी री परकमा में पाद सूं पण री मोयना तोडण लागी । क्रूसियो छांगा नै हाकल करो । साण्डां री टोळी लेव घोसियो घोरां मे घमा चौकडी माण्डो ।

सं की वो ई है । रात नै जकी काम मधूरो छोड्यो हो वो भ्राज पूरण करणो है । काल रें उषार की भ्राज भुगतवणो है । भावण वाळै काल री जुगत, भ्राज रें सवाल सूं सैन्धी है; भ्रगडा-भ्रगटा, पूजा-पाठ, लेण-देण, व्याव-सगपण, सिरावण-व्याणू, भमल-दारू, गेर-गोठ, भ्रगडा-सम्प, सुख-दुख, डोर-मिनख दिवस-रेण, लुगाई-मडद, छोरा-छोरियां, जड-चेतन, राजा-रंक, सैगां री श्रेक पड़पंच । घकै, वी नै घकावो की चुगावो, की धुड़ावो । कीं घड़ी, कीं मांगी । मरो-मारो । जलमी-मरो । परणी, श्रेक सूं दोय, दोय सूं चार घर भ्रागें जितरी सरघा उतरी सभा । उमाव, पोमाव, न्याव, इन्वाव, बणाव, देखाव, लाड-प्यार, भ्रगडा घर सम्प सैग वे ई खेल । पीढियां रमती माई, आपां रमां, भावण वाळा रमसो । ओ ई रासो, ओ ई पासो । डाढो-डाढ बँवतें पांणी रें रेलें दाई है जीवण ई नगरी री । सैग भावरें हाल मे मस्त; काम मे कळीजता । आळस उडावण सारू अमल, दुख बिसरावण, मदगल उपजावण दारू, जूण सुघारण सारू दान, पुत्र भजन, भाव, पूजा-पाठ । बस्ती काई है, नरसिंगां री न्यात जूझारां री स्वात, मिनख जूण री भाट, बीजां रा ठाठ ।

इतिमास घणो पुराणी कोनी, पुण पांणी परखियोडी तलवारां री पळकी, भ्रजूं भ्रांविषां मे चिलकी करे । बसतां ई तनोट नै जूझणो पड्यो पाडोसियां मूं । पाडोसो, जका, प्रीत पाळण री जेजागा, ईडे बांधो, सम्भ री जागा साकी भाण्ड्यो । ओ ई कारण हे कं तिलवार रें जेक कोनी ताणो । बांधां मे बांधटां सातर घोष नो रेव्यो ।

चोसती गांडी रें घवाणुचक श्रेक धक्की लागी । पड्डे में बळ पड्गो, बळदां रा नधूण। कुवमा, पिण्डलियां मे मछियां चड्गो । सींगडा जमीं मे घुमोड, वे जोर मूं हांक मारी । ऊवर बेठी सैग सवारियां दिपकै सूं हडबडामो । गीत री सार रें पोडी कडियां, सटकणी । मूछां रें बट देवता, तिरछी निशेरा सूं गोरेड्यो नै निरसता मतवाळा मोटपारां रें मूछा रें बासां में ताण घांयणो । नैणां मे मदरी जाणां, भी, घजूमो घर सोई उतरण्यो । बेर रें टेठ मूण्डे भागें भांयोडी देकसो, गिड-गिडी रें नणुण-नणुण घूमण रें सागें ई पाछो गंटी बीड्यो । हापां मूं रास छूटणो ।

जे मिहकर भाग्यो । बासण रें हाव मूं पेटियो वड्यो । दो गूलरिया, बीऊ एक दुनै मायें टूट पड्या । बीच बिज्रियोडी बाजरी नै पालनी ऊमो श्रेक

गाय चाटगी । एक बी रें सींगां सूं भिदरए लागी तो बीजोड़ी बी री पूंछ खाँवण रें सोम मे जबाईं माथें सात साय गानदानी गुर मे घनायए लागी । पिणवारयां रें माथें रा घटा घड़ापड़ घूड माथें दुळग्या । हड़बड़ाट मे घापी मूती कर, भागए री फिकर मे, भूरियो भाँबो धोनिये री साग देवणी भूनायो । बोधो, बाणियो ऊरचूक ध्ये, दो रा चार घड़ा गिणग्या । लिया बी मू दूणा रिपिया गिरायक नै पाछा पकड़ा दिया । घोसां रें हाथ सूं सीजियोड़ी पाट री हाँडी छूटगी । मुरमनी सोहर री जागा, बलनी ऊरळो भास लियो । बड़ियो तिणयतां री जागा खुदरी चार घांगळियां बाइली । रमभूड़ी देका भरियोईं टाबर नै साक मे दाब, सँग गावा, गोबर मू सपोळ लिया ।

इम, इम, इम, इम, घड़, घड़, घड़, घड़, घड़, घटापड़, घड़ापड़ घम, घड़, घड़ापड़, घड़घड़, घम । पूं पूं छं, पूं, पूं पूं पूं पूं छं, घड़ घम, घड़ घम रुक रुक'र बोड़ी बोड़ी ताळ सूं च्यारूं मेर गुंजगी । बस्ती रा सँग सोण हाथ रा काम छोड़, घड़बड़ाय घरां रें बारणं प्राय ऊमा । सैगां री निजरां गढ़ रें बीं बुरज माथें घटकगी जठं सूं घामं नै गुंजावए याळा ततीहा ऊठता हा । सें कोई बगना छिद्योडा भेक बीजें नै घूरए लागी । सजब मी घबरा'ट सूं काळजो धक धक करए लागी । गूधी बैवती गंगा मे बिना कोई हड़बड़ाटे रें अचाणवक भायें ईं तोफाण सूं च्यारूं मेर गार-मेर मचगी । जीवण अनिरुधं मे भूलगी । घावण वाळें काल रें भी सू उजव घणघणावणी घावण लागी । समझारां री जुम्मी बघगी । घण-समझा सातर घाडी रूणी, टाबरां रें रांमत एण माइतां सारू भाफन भा पड़ी । लुगायां चूईं माथें घड़ी घड़ी हाथ फेर, ऊँचो चढ़ावण लागी । तीर, तलवार, भाला, खाण्डां री ताळ सम्भाळ रही । देखतां देखता चौबटे में लोक घणमावती भेली रूणी । पलक भयतां च्यारूं मेर ऊँटां माथें नागी तलवारां लियोडा घसवारां री तातो लागगी । सँग भेक दूजें रें सामो जोवण लागी । "भा भेर वयूं बाजी भाऊ ?" भेक अघगावळी उमर री मोट्यार, पाखती ऊभे भेक दूजें मोट्यार नै पूछयो ।

"कोप घौईं ।"

"कै री ?"

"जुट री ।"

"साकी ?"

"है ।"

"धाँवी रूणी" भेक तीजो मिनख बिचवें बील पड़यो ।

"कुण घौईं घाडवी ?" पैलोड़ी मिनख पूछियो ।

"रूहे कुण ? भापां रा पाडोसी, कै लगा, कै बाराह ।" तीजोड़ी मिनख पाछो सपेली दियो ।

"है । बी री बापड़ा री बाईं हीमत ? घागली बी खायोड़ी कोनी खूटी"

दूजोड़ी मिनख बड़की दियो ।

“हाँ, सो तो मोई । पण भापणी तो वां सूं ई दुसमणी मोई” तीजोड़ी मिनख भापरै कथण रे सबुत मे तरक दियो ।

“दुसमणी रो काई ? भा तो करी घर वही ।” दूजोड़ी मिनख बात भागै बघाई ।

“पण ‘राव’ तो खुद चला’र की सूं ई बैर कोनी घातियो ।” पैलडी मिनख डरती डरती बोल्थो ।

“तूँ केरूँ नाड व्हे ज्यूँ बात करै ।” दूजोड़ी मिनख थोड़ी मोह्यां चढ़ा’र बोल्थो ।

“भरे, थां व्यूँ भापसरी मे भळूभा ?” श्रेक होकरो बीच मे पड्यो ।

“भळूभां कोनी, ई नाड रो बात मोई । समझे ई कोनी ।

“समझो तो था तीनूँ जणां ई, पण ऊण्डो बाता नै समझण सारू मोह्या जोडजै” बूढो खुद रो मूछां भर घोळी दाढो माथे हाथ फेरता थकां बोल्थो ।

“हाँ, म्हे तो धान खावां ई कोनी” दूजोड़ी मिनख थोड़ी मूण्डी मचकोळ’र बोल्थो ।

“हाँ, समझ रो ठेकी तो या रे नावै ई बिहयो मोई ।” तीजोड़ी मिनख पैलडे रे टिह्लो देवतां थकां श्रेक भाँख दबाई ।

“भला घरां रा दीसो थां दोन्यूँ” बूढो थोड़ी दुखी बिहयोड़ी बोल्थो ।

“सो तो मोई” दूजोड़ी भर तीजोड़ी, दोन्यूँ श्रेकें लागे बोल्या ।

बूढो बिराजी होय’र बीजी कांती मूण्डी फेर लियो । तीनूँ जणां हसण लागे ।

तड़ तड़ तिड़ धिम, तड़ तड़ तिड़ धिम ।

“नगरवासी हृसियार ! बेलियां, बूढ़ा, मोठ्यार ! जीवणी व्हे तो द्यो तसवारां रे धार, कै मर, कै मार, जलमभीम रो भार उतार, सुरगा सिधार, दुसमण नै फटकार, हाथां सूं नीसरपोड़ी भगत, कोनी भावै बार बार । जै मां तन्नी रो, जै राव विजय राज रो । तनोट रा सेंग मढ़द-मोठ्यार, बूढ़ा, जूझार, लुगायां, टाबर पावणां-पाई, सेंग मुणी भाई । अपरंच राव विजयराज भाटी रे राज रा लुगायां-मढ़द ! बाँव मुणाऊँ पांनड़ी, इग्या दरबार रो । सगळा मुणजी कान खोल, सीवाई चढ़ भायो दुसमण, बीं नै द्यो रगदोळ ।

मरदां मूँछो देवी बट्ट,

दुसमण हाकै जावै नट्ट,

तसवारां रो परसो पांणी,

भाटी कूळ रो साज बचाणी ।

मरदां जुद् री करो तेंग्यारो,
जलमभोम प्राणां सूं प्यारो ।
घण, घन, टाबर नै समभावो,
ठीक ठिकाणें, बैग पुगावो ।
मोसर-मियां घाज सूं टोटें,
नगदी-गेणा द्यो भाखोटें,
जमा राज मे करदयो सारा,
घान, घास, घी रा भण्डारा ।
माथमते गढ मे व्हो भेळा,
राव घोथ, इग्या देवैला ।
इण इग्या नै जो नी मानें,
उणरो दण्ड राज दे जाणें ।

तड तड, तड घम, तड घम, तड घम,
तड तड तड घम, तड घम, तड घम..... ।

(५)

लोडियो लवार, रैवती राइको, वीरमो भांभी, सांवती सोनार, नैवली नाई,
भूरियो भाट, चुनियो चारण, बिरदियो बाणियो, कोडियो कुमार, बादरी बडियो,
खोमडो खाती, भोमो भील, मुकनो मीणो, पेमियो पंवार, रुधियो रावत, कितनो
कलाळ, देयो दरजो, करणो करसो, किरपू किराड, मंगलू मांगण्यार, घामजी
आचारज, भोमजी भाटी, सोमजी सिसोदिया, रुधजो राठोड, लाखणजी लस्करिया,
तेजाजी तोमर, परतापजी परमार, बरजागजी बूटा, लूंकजी लंगा, जवारजी जैन,
बालूजी बुध, सुरजोजी साकळद्वीपी घर घीगडजी घाडेत, सैग गढ में भेळा विह्या ।

राज दरबार लाणो । राज विजयराज पधार्या । सैग लोण ऊमा व्हे, खम्मा-
घणो भरज करो । निधरावळ व्हो । राव सिधासण माथे विराजमान विह्या । पुखजी
प्रोहत, राव सूं इग्या लेय, नगरवासियां नै तेडावण री मत्तो समभायो । जलमभोम
री रुखाळी सातर तन, मन, घन भरपण करण री सौगता व्याखूं मेर गूजी । जै
तसो देवो घर जै राव विजयराज री घुनियां सूं आभो गूजण लागो । राव अक अक
मानखें सामो निजर फेकी । जो सूं भी राव री निजर मिळो, वो घनभाग व्हेगो ।
राव साखू जीवण भरपण करण री हूस दोवडी व्हेगी । जोस री सजब समो
बंवग्यो । बाया फडकावता सैग गढ सूं नीचें उतरिया । नैणां सूं नीन्द रेंण भर
भाखमिचूंणी रमती रेंयो । सुपनां मे केई साका मंडग्या । केई गमग्या, केई ^{रमग्या} रमग्या,
केई जुभार विह्या, केई बेमार विह्या, केई मुळजिया, केई भुळसिया । स

राण्डोली व्हेगी पून रा जीरा, सूना भांगणां सूं ममखगियां करण लागे । गूलरिया, पाणी साहू बिलखण लागे । पिणघट रें पोचो फिरग्यो । डाळा मूना व्हेगा । नागा रुंख, सूख'र हूँठ व्हेगा । अक रात भर जाग रेंयो, बीजी रात, बायो बातां गे बंतळ, तीजी रात, बारिमां बन्धगो, चौथी रात, हूई भणमैन्वी, पाचमी रात कंवारी, बीतगी । छठी रात, सातमी रात, आठमी रात भर नमो रात.....भर गिणती भूलियोही अक रात ।

(६)

राव विजयराज रा दस हजार सिपाई अस्तर-सस्तर सू तीस, तयार हा । गढ रें माय छः खण्ड बणियोडा हा । गढ रें परकोटे सूं बिपती पठियाळां ऊपर पठियाळां बणियोडी हो । नोचें सू यां पठियाळा मे ऊपर पोंवण रो मारग परकोटे रें मायती कांती दो अरू तयार कियोडा परकोटा रें दिव्चें हो । ऊपर नोचें रा पागोतिया, भीत मे अक मोटें भाटें नें अळगो सरकायां सूं ई लादता । अक अक पठियाळ कम मू कम बीस हाथ लाम्बो, सात हाथ चवडी भर पाच हाथ ऊंचो हो । भागें मूं अ पठियाळा कवूतरां रा खाना व्हे ज्यूं निजर भावती । पण अ सारी पठियाळां अक ई माय रो कोनी ही । सवां रो न्यारो न्यारो माय भर काम हो कोई कोई पठियाळ मे तो हजार सिपाई खडा व्हे सकी, जितरी जागा ही । सबसूं ऊंची पठियाळ, घरती सूं तीस हाथ ऊंची ही भर सबसूं ऊपरली भागणे सूं कोई तीन सौ हाथ ऊपर । गढ रो घेरो कम सूं कम डेढ दो मोल रें मांय हो । या पठियाळा मे जागा जागा मोटा मोटा बगारा कियोडा हा भर वारें पाखती अक भंत रें बरोबर रा बीजा बगारा मांय सूं लीपियोडा हा । पांरी डाळ, बारली कांती ही । यां बगारा में गढ रो मांयली कांती सूं कोई चीज मेलता ई वा सीधी गढ रें वारें जाय पडती । पांरा मूण्डा, मायती कांती चवडा पण बारली कांती सांकडा हा । यां रें नंडा केवें तीणा, वारें दुसमण माये मोठ राकण साह हा । यां पठियाळां में मोटी मोटी चार-पांच भट्टियां खुदियोही हो भर पाखती लकडियां रा डेर लागोडा हा । भट्टियां माये पाणी भर तेल रा बडाव चढायोडा हा । पाखती रा बगारा, गरम तेल भर पांणी मूडण साह हा । ई भांत कोई चार सौ बडाव भर कुंढिमां भाडूं दिसावां मे राखियोही हो ।

अक-अक बडाव सारें तीन-तीन रें दिसाव मूं भाटियाणियां तयार ही । यां रें मार्गे ई अक अक मडद सिपाई मदद मे हो । मार्गे ई छोटी मोटी केई होलियां भर होसा पडिया हा ज्यासू तेल भर पांणी वारें ऊंघायो जातो । ई काम साह दो मोटा तिरदार, दस सपतिरदार भर केई मर्जनी लुगायो मुकर हो । भट्टियां, ई कुंण सूं खुदियोही हो कें काम पडिया मे जोडर रें काम में बी घा सकें हो ।

तंस रो पठियाळां मूं ऊपरमी पठियाळां में तीरन्दाज हा । या तीरन्दाजां रा

तीर कम सूं कम पांच सौ हाथ री मार करण वाली सगती रा हा । अठै बी निचली पठियाळा दाई भीता मे तीणा कियोड़ा हा ज्या में सूं तीर, बारै कानी छूटता । अठै तीणा ई दग सूं कियोड़ा हा कै या में सूं छोड़्योड़ा तीर गड सूं ढाई तीन सौ हाथ आगे ऊभी फौज रै सिपाइया रै सीनां नै बीच देता । पण नीचै सूं चलायोड़ा तीर यां तीणा माय सूं गढ़ माय नी पूग सकता क्यूं कै ढाई तीन सौ हाथ आगे सू या मे तीर पूगावण वाळा तीरन्दाज सुलतान री फौज मे गिणती रा ई हा । पठियाळा मे हजारों बाण भर तरकसां रा ढेर लायोड़ा हा । यां में अग्निबाण बी भेळा हा । त्रिसूल रै आकार रा, अरघन्दराकार, भर काटीला नुका वाळा भांत भांत रा बाणां रा ऊपरा ऊपरी ढिगला लागोड़ा हा । तीरन्दाजां री फौज रा पांच सौ सिपाई, दो सिरदार भर पांच टोळी रूखाळ अठै तैनात हा ।

सबसूं ऊपरली पठियाळ माथे डगळ घर गोळा रां ढेर हा । ओ गोळा ऊपर सूं गुहाया जाता, जका कै सीधा दुखमणा माथे पड़ता ई बारी भगनाळ खोन देता । पण यां नै घरकावण री घडी तद आती जद दुसमण खाई नै पाट गड री भीतां ऊपर चढ़ण री मती करती । गोळां रै अ्रेकानी खाण्डां रा ढिगला लागोड़ा हा । बलवान हाथा सूं फेंक्योड़ी खाण्डो अ्रेक बार मे कम सूं कम पांच दुसमणा री माथो काटण री खिमता राकती । खाण्डा फेंकण सारू अ्रेक हजार सिपाइया नै खात रूप सूं सिखावण दी गई । सिखावण मे यां लोगां सूं भेसा कटवाया । भेसा नै काट, जद खाण्डो जमी मे धुस जाती तद सिपाई नै प्रवीण मानियो जाती । ओ काम अ्रेक ई हाथ सूं भर अ्रेक ई बार में करणो पड़ती । खाण्डाधारियां रा सरीर लोवै रा बणियोड़ा हा । अ्रेक खाण्डाधारी री खुराक, कम सूं कम चार बकरां री मांस ही । या री तोल, चार सूं छः मण रै बिच्चे ही । फेरू बी यां मे इती फुरती ही कै ओ लोग घोडां री लगाम पकड़्योड़ा कम सूं कम दम कोस दौड़ सकता । खाण्डा फेंकण री जागा मोटी सुरंगां दाई बगारा हा ज्यां में अ्रेक सागै चार आदमी खड्या रै सकता । पण इता मोटा बगारा राकण री धेय ओ ई ही कै अ्रेक सिपाई अठै सूं आराम सूं साण्डो फेंक सकै । गोळां री भार बी चार मण सू लेर दस मण रै बिच्चे ही । बगरां ताई याने पुगावण सारू घाटियां बणायोडी हो । कम लागत सू ई यां नै ऊपर खिसकाण री जरूरत ही । बारली ढाल सरू द्धैतां ई गोळी घपणै घार बारली कानी लपकती । घड्डी दिया सू वेग बघ जाती घर बार खाली जावण री कम गुंजाइस रैती ।

ओ गड इती मोटी ही कै कम सूं कम पच्चीस हजार मिसख अ्रेकें सागै समो सकता । गढ़ में बीत सारा मेल, सभा भवन, राजनिवासण सांमे फेलियोड़ी घांगणी, सिपाइयां भर चाकरां रै रैवण खातर घर-बी बणियोड़ा हा । बीचोबीच में देवी

तमो गी जकी कै राजा गी कुळदेवी हो,। विताल, फूटरी बारीगरी रो बेजोड़ नमूनी, मिन्दर हो । मिन्दर र माय सून ई मुग्ग रो मारग हो । मुग्ग तमोद सून घणी घागो जाय डेट राटाळ माय पुगती । देवी रो घी मिन्दर की जमीन र माय घुसियोही वई ज्यून बलायोही हो । गरमग्रह ती घी सून नीबी घायोही हो ।

राव विजयगव जुद्ध सारू पूरो त्यारी कर चुका हा । सार्की गी तेडी जात ई जागा जागा सून राव रा मिरदार भान घापरी मरदा सारू घोड़ा, जेंद, घन-घान, सस्तर इत्याद लें'र कदका ई तमोद पुग चुका हा । छत्तीम भानरा घोड़ा भेळा ब्हिया? प्रवीह, जका निरभे हा । बिना कोई हिवक रें भे घोड़ा भिहणी जाणता २ ग्रहराव, जका सापा रा राजा दाई घाल चलता । ३ घाफू जका नितराचार पांच तोला भमल खाय जाता; घोडी खुद मर जावती पण सवार न रणखेत सून काढ़ भल्लो ने जायन ई प्रण त्याजती । ४ भजोका, ज्यानं घेक छिन रो चैन नी पडतो । भे भट्टपोर जीण कसियोड़ा घसवार न उवायी रणखेत में घडिया रैता । भेराकिया खास करनं जुद्ध मारू त्यार कर्पोड़ा हा । ६ किरणाळा, घणा फूटरा घर किरणाळ दाई दिव दिव करण वाळा ७ कोडीधर, जका रो भेक भेक रो मोल करोडां रिपिया । ८ खेचर, जका जद दोडता ती भेडी लखावती कै घोडी जमीं माय नी, भसमान में उड रैयो है । ९ चक्षलल्ला, जवारा नैण गता जाणें लोई वारें नैण में भसटपोर उतरयोही ई रैवें । १० चवळ घोड़ा ११ तोलार, १२ पमंग १३ मुसकण इत्याद घणां ई घोड़ा भेळा ब्हिया । 'यारें इलावा १४ फणघर, ज्यांरी घाटकी घर किलज्जी शेपनाग दाई, १५ वपसकबडाळा, ज्यां सून भूमाकडजी बी भेभीत वई जावें । १६ मलफाणी घोड़ा, सेर दाई उछळ नें दुसमण मायें दूट पडता १७ मुसकणजात रा मुस्की छोड़ा, १८ हेह, जका दुसमण नें हेरनं वार करता, १९ सपतास जका सूरज रें सात घोडां रो सगती वाळा । बीजी भांत रा घोडां मे २० विडगा, २१ हेवर, २२ साकुर, २३ खंगा, २४ भासग, २५ उरिपा, २६ मालाणी, २७ सिन्धवळ २८ मुलतानी, २९ चितकवरो रो तो कोई छे ह्यो न पार । भात भांत रें गुणां वाळां घोडां रो, जमघट लाग्योही हो । ३० पाणीपया, जका पांणी मे निरता हुया भमवार, नें जेंवावा मोरवी लेता । ३१ गंगेटिया, गंगापार रो तळेंटी रा, ३२ हुंजजादर, ३३ उडणभ्रमर, ३४ ऊपरस्या फोरणा (ऊंघा फिरनं वार करणवाळा) ३५ चपल-चरण-विम्तीणं घर गालिहोत्रि प्रतिष्ठा सिद्धा घोड़ा बी विजयराज रो फौज मे सामल हा ।

यां घोड़ा नें गंगा मिनाम कराया । गीठ ऊपर चन्दन रो लेप कियो घर पांच वर्ण वाळी जीणा या ऊपर कसी । जीणां मे रणघर, जीण पघर, गुडिपघर, मोहपघर घर कातलीयाली पापर भणगिणत ।

नोट : घोड़ा, जीणा घर पत्ताणा रो बलाण काग्हड दे प्रबन्ध सून लिमो गयो है ।

ऊंटी भर साण्डो ऊपर पल्हाण कसियोडा हा। पल्हाण बी पांच मोत रा। कुली कुंकूरोल, बोडोयानागपण, बाजती वज्जाठली, बेसरा बहिरणां भर पलपळोरा गूछा।

चार हजार सिपाई गढ रो हखाली भर बचाव साह मांय तंनात कर दिया गया। गढ रै परकोटे सू चिपती बारली कानी कोई सी हाथ चवड़ी खाई ही। आ खाई चाळोस-पचास हाथ ऊण्डो ही। खाई मे उतरण साह भर तळ सू ऊपर चढण साह कोई आसार कोनी ही। खाई रै अेक कानी गढ रो परकोटी हो तो बीज किनारे मोटी-मोटी थम्बळियां गाडियोडी हो ज्यासू सगता ई घोरां रा डूगर छाती फुलायोडा ऊवा हा। यां रै नैहाई खेजडां भर बावळियां रा गुच्छा हा। ई खाई मे अेक खासियत आ बी ही कै ई मे धूड भेळी नी व्हेतो। बी नै बतूळिया उडाय नै पाछो किनारां माथे लाय जमा कर देता। खाई मे बेई जिनावरा रा सडियोडा हाडका बासता। अठे गिह्यां रो अेक-छन राज हो। जोदतो कोई मिनख मांय पड जावतो तो अे गिह कागला बी नै चूट-चूटनै खा जाता। अज्राण पडिया मिनवा नै रसा रो निसरण्यां किले रै परकोटा मे किणोडा तिणा माय सून लटकायनै बडो मुमकल सू बचावो जातो पण जिनावरां नै बचावण रो तो सवाल ई कोनी हो। अेकर ई मे अेक माथो ऊट पड्यो। बी रो दुरगत देखनै लोगां रो काळजो घणो ई बळपियो पण सेंग लाचार हा। दुसमण साह आ खाई मोन रै कुर्व सरखो हो।

गढ में दो बरस लग खावण-रोवण रो माममी रो भगपूर भण्डार हो। यूँ रसद मगादण साह गढ रो सुरंग रो मारग बी जापतै रो हो। ई सुरंग मे बळदागाडी आराम सून आ जा सकती। सुरंग अेक पक्की नैर समोन बणियोडी हो घर मारग में जागा-जागा हवा भर चांनणे साह बिलां दाई छोटा-छोटा सीणा कर, वां मे भूंगळियां घालदी। सुरंग मे घोडा दौड लगा सके इतो खुलासो हो। यूँ आ ई सुरंग बिरत्वा रत मे नैर रो काम देती। सुरंग रो, मारग मे आवण वाळें हरेक गांव मे अेक द्वार हो। पण लोगां नै आ ई ठा हो कै तळा मे पाणी भरण साह नैर बणायोडी है, वयूँ कै घं द्वार, तळां रै किनारें ई व्हेता भर जे कोई अज्राण घादमी ई द्वार में घुस बी जातो तो डूंगर ऊपर जायनै पाछो बारें निकळ जातो। वयूँ कै मुख्य-द्वार तो ई नैर में आजू-बाजू मे व्हेता। यां द्वारां रो फाटकां उणी रंग रै भाट रो व्हेती भर ई ढंग सून घरियोडी व्हेतो कै अेक-दो मिनख यां नै हिलाय बी नी मकता। सबसूँ मोटी बात तो आ कै किणी नै वेम व्हे ई वयूँ कै नैर रै मांय अहं कोई नैर कै सुरंग है। ई सुरंग रो निरमाण केई बरसां में पूरी विहवी हो भर राज रा खास घादमिया रै सिबाय ई रो किणी नै बेरी ई कोनी। धूड भरी आविद्या रै मोमम मे सुरंग रै मारग ई अमीर-उमरावां रो आणी-जाणी रैतो। बिरत्वा रत मे आ नैर रो काम देती भर जुद् रो बिळियां रसद इत्याद पोचावण में गुप्त मारग रो काम देती।

(७)

यसोधरा घर रुकमणी, देवी नै साढांग दण्डोत की । पछै स्वामी श्री रा चरण परस नै धापर हाथ धाखियां घर माथै ऊपर लगाया । संगीत रा सुर मूज उठिया । स्वामी श्री मुद्द सकरा री खयाज, पूजै काळै मूं धोमी लय पे प्रलाप रै सागे छेडियो । प्रलाप री गूंज सू बतल घर चांचू बन्द व्हेगी । क्याहं मेर साज घर संगीत री घर फेनग्यो । स्वामी श्री रै कंठ में प्रोज, मिठाम, दरद घर पकाव हो । सुणए वाळा री प्रातमा संगीत रै ममदर मे हिनोरां लेवणी सह कर देवती । त्रिताळ रा बोल मूदंग माथै ताक ताक तिरकिट घित ता, ता सुणीजता । अकर तौ यसोधरा अचम्बे मे पडियोड़ी घरथ भरी निजरां सूं स्वामी श्री नै निहारण लागगी । संगीत रै सुरां सू ई निरत री ताळमेल हो । निरत मे बिरकण, मुदावां, भाव, प्रमि-नय घर अग सचाळन, संगीत री लय घर ताळ सू जुड़ियोड़ा व्हे । सो मूदंग माथै पड़ती थाप रै सागे ई जाभरिया री भएकार बां बोलां नै प्रगटावती । सहनाई घर तुरेई सू निकळियोडा, मुद्द कोमल घर मोड़ नै धवण कर प्रातमा प्रानन्द विभोर व्हे जातो । बिचै-बिचै मुरकियां, सुरग जेई सुख री अनुभव करावती ।

मुद्द सिवा निरत चालै हो । सिवजी, समाधी में लीन हा । बां रै सान्त रूप सू मंग मुगध हा । निरत री लय रै साथे ई सिवजी री रूप बदलियो । सान्त अवस्था नै त्याग सिवजी प्रलयकारी ताण्डव सह कर दियो । संगीत री लय दूणी व्हेगी । ताना रा पलटा, मूदंग मे ताळ रा तोड़ा घर निरत में सिवजी री संहारक रूप निरख नै घड़घड़ी छूटण लागगी । यसोधरा ऊपर मारी सभा मण्डव मुगध घर प्राप्त व्हेगी । घर यसोधरा.....? राव विजयराज आज घणा समाव भरियोड़ा हा । वे अकचित व्हे, स्वामी श्री रै संगीत घर यसोधरा रै निरत री रस चाखै हा । संगीत री लय दूणी सू चौगुणी व्हेगी घर ई रै सागे ई निरत री गत बी बघगी । लय चौगुणी सू छःगुणी तक बघगी । जांभरियां री भएकार अजूं बी साफ-साफ मूदंग रै बोला रै परवाणै सुणीजती । ई साह सगळा रा कान, नैण घर चित रै सागे ई सांस बी अक जागा ठैली । यसोधरा री देहो घर-घर पूजती गो दोमण लागी । मूदंग रै बोलां री ततकार हमे साफ-साफ कोनी सुणीजती । सहनाई तारसतह माथै गूंजण लागगी । स्वामी श्री री कंठ हमे रकियो हमे रकियो, ई अवस्था तक पूग चुकी हो । बा री कंठ बारै नीसर चुकी हो घर गळे री नयां भुजंग प्यूं फेनगी । यसोधरा री देहो पसीनै सू सिनान कर चुकी हो । धी री सारी परवास भोज चुकी हो घर बी रै मांय सू बी री काची चिटक प्यूं भांकी देहो माथै बोवा री हलकी सो उलाड़ साफ निजर आवगी । गावा सरीर सू चिप चुका हा । रगत जेई बी रै रातें मुख घर संहार री मुदा नै निरख घेड़ी लयावती कं सिवजी सैरुय घरती माथै उतर नै हमे

सिन्धी री नास करण वाळा है। यसोचरा यो सेंग बातां सूं घणजाण, बरोबर जांभरियां सूं भणकार निकालती। वीरा पग पवन सूं बी तेज अर लगोनग चालता हा। मृदंग बजावण वाळी कद सूं ई सम लावण सार तडका तोड रेंयी ही। अचा-एचक यसोचरा री देही घरती माथे लुडकती-लुडकती बची। जाणे अेक दम कठे ई सूं बिजळी बडकी कै तागे दूगे। जाणे अजाण नोन्द मे सूना लोना माथे आमो छिटक पड्यो, जाणे सितार री तार, ससर मे घावता ही दूट पड्यो। अणचेत लोग चाणचक चमक पड्य; वयू कै ठीक बी बिळिंग अेक तुणे सूं उवाज आई 'सुमान प्रल्लाह'।

'सुमान प्रल्लाह' री गूज सूं स्वामी श्री री ध्यान चूकयो, मृदंग बजावणियें रा हाथ रुक्या। संगीत रुक्यो अर यसोचरा री देही घरती माथे लोथ दाई पड्यो। हाहाकार मचयो। 'जय देवी तन्नो', 'जय स्वामी श्री', 'जय देवी यसोचरा' सूं मण्डप गुंजायमान व्हेगे। यसोचरा री देही माथे अेकै सागे चार-चार पलां सूं हुवा करी-जणो सर व्हेगी। गगाजळ रा छांटा देय बी नें चेत मे लाया। वीरा सारा गाबा पसीनें सूं आला तडबा व्हियोडा हा। मुख मण्डळ माथे पसीनें रा टोपा अ्रंढा ओपता जाणे मोती भडियोडा है। जाणे करणारस साक्षात प्रगट व्हियो है। राव विजयराज; स्वामी श्री अर यसोचरा ने बघाई दी। यसोचरा तोची नाड कियों मन ई मन जाणे कीं रस री सवाद लेती रेंयी। बी रा नेंण आघा निन्दाळका सा लागता। स्वामी श्री यसोचरा रें बारें मे राव विजयराज नें देवण जीग जाणकारी दी।

दूजी कांती ज्युं ई लोणां री निजरां बी उवाज समचें घूमी अर वे फाटी री फाटी रेंयगी। सठें ती दूजी ई खेल ही। अेक बीस-इक्कीस बरसां री मोट्यार अेक हाथ मे रगत सूं भरियोडी तलवार अर दर्ज हाथ मे अेक कटियोडी माथो लियोडी ही। अेक लोथ पागती पड्यो ही। जांणें चाणचक काळो नाग सभा रें बिच्छें घाय-ग्यो व्हे। लोग डर नें आगा व्हेगा। वो लोथ अर मोट्यार रें च्यारु कांती मण्डळ बणयो। मण्डळ रें बिचवें श्री घादमी ई भात ऊभो हो जाणे की व्हियो ई नी। वी रें चेरें ऊपर किल्ली तरें रा भाव निजर नी आवता। पण बी री मूण्डो दिप-दिप करती। नेंणां मे उजब चमक ही, डोल भरियो पूरो। कद, हाई-नीन पूजता हाथ। रग गोरी अर वेस सिरदारा वाळी। काना मे मुक्किया, गळें मे मोतियां री कण्ठो अर ऊजळा बुराक गाबा।

धोडी ताळ, वो, सूं ई ऊभो रेंयी। पछें वो आपरें दोळें मण्ड्यें मण्डळ कांती निजरां घुमाई अर बी खागा ई घूम'र पाछो सागें दिमा कांती मूण्डो कर लियो। वी रें घूमणें रें सागें ई लोग लारें खिसकण सागा। हमें वो मुळकियो। हांथ मांयलें कटियोडें माथे नें, वो जमी माथे फेंक दियो अर रगत सूं भरियोडी तलवार नें धोतियें

(५)

यसोधरा घर रुकमणी, देवी नै मागटांग दण्डोत की । पछै स्वामी श्री रा चरण पस नै घापर हाथ मोलियां घर माथे ऊपर लगाया । संगीत रा मुर गूज उटिया । स्वामी श्री मुद्द सकरा रो खयाच, 'जूजै काळें मूं घीमी लय मे घनाप रै सागे छेड़ियो । अलाप री गूज सू बतळ घर चो-चू बन्द व्हेगी । च्याहं मेर साज घर संगीत री घर फेलागी । स्वामी श्री रै कंठ मे भोज, मिठास, दरद घर पकाव हो । सुणए वाळा री घातमा संगीत रै समदर मे हिलीरां लेवणी सह कर देवती । त्रिताळ रा बोल मृदंग माथे ताक ताक तिरकिट धित ता, ता मुणीजता । अकरै तौ यसोधरा अचम्बे मे पडियोही घरय भरी निजगं सू स्वामी श्री नै निहारण नागगी । संगीत रै मुरा सू ई निरत रो ताळमेल हो । निरत मे धिरकण, मुद्रावां, भाव, अभि-नय घर भग सचाळन, संगीत री लय घर ताळ सू जुड़ियोड़ा व्हे । सो मृदंग माथे पडती घाप रै सागे ई जांभूरियां री भणकार वां बोला नै प्रगटावती । सहनाई घर तुरेई सू निकळियोडा, मुद्द कोमल घर मीड़ नै श्रवण कर घातमा ध्यानन्द विभोर व्हे जातो । बिच्चै-बिच्चै भुगकियां, सुरग जैई मुख री अनुभव करावती ।

मुद्द सिवा निरत चालै हो । सिवजी, समाधी में लोन हा । वां रै सान्त रूप सू संग भुगध हा । निरत री लय रै सागै ई सिवजी री रूप बदळियो । सान्त अवस्था नै त्याग सिवजी प्रलयकारी ताण्डव सह कर दियो । संगीत री लय दूणो व्हेगी । ताना रा पलटा, मृदंग में ताळ रा सोड़ा घर निरत मे सिवजी री संहारक रूप निरख नै घड़घड़ी छूटण लागगी । यसोधरा ऊपर सारो समा मण्डव भुगध घर प्राप्त व्हेगी । घर यसोधरा.....? राव विजयराज आज घणा समाव भरियोड़ा हा । वे अकचित व्हे, स्वामी श्री रै संगीत घर यसोधरा रै निरत रो रस चालै हा । संगीत री लय दूणो सू चौगुणी व्हेगी घर ई रै सागे ई निरत री गत बी बघगी । लय चौगुणी मूं छःगुणी तक बघगी । जांभूरिया री भणकार भजूं बी साफ-साफ मृदंग रै बोला रै परवाणै सुणीजती । ई साह सगळां रा कान, नैण घर कित रै सागे ई सांत बी अंक जागा ठैरणी । यसोधरा री देही घर-घर धुजती गो दोमण लागी । मृदंग रै बोला री ततकार हुये साफ-साफ कोनी सुणीजती । सहनाई तारसतक माथे गूजण लागगी । स्वामी श्री री कंठ हमें रुकियो हमें रुकियो, ई अवस्था तक पूग चुकी हो । वां री कंठ बारै नीसर चुकी हो घर गळे री नसां भुजंग वपूं फेलागी । यसोधरा री देही पसीनै सू सिनान कर चुकी हो । बी री सारो पेरवास मीज चुकी हो घर बी रै माथे सू बी री काची बिकक वपूं भांरती देही माथे बोबां री हळकी सो उलाड़ साफ निजर घावनी । गावा सरीर मूं चिप चुका हा । रगत जैई बी रै रात मुख घर संहार री मुद्रा नै निरख भेदी लगावती कें सिवजी सेरु घरती माथे उतर नै हमें

सिण्टी री नास करण वाला है। यसोधरा यां सैग बातां सूं अणुजाण, बरोबर जांभरियां सूं भरणकार निकालती। वीरा पग पवन सूं बी तेज अर लगोलग चालता हा। मृदग बजावण वालो कद सूं ई सम लावण सार तडका तोड़ रेंयी हो। अचा-एचक यसोधरा री देही घरती माथे लुडकती-लुडकती बची। जाणे अेक दम कठे ई सूं बिजळी कडकी कें तारो ह्मी। जाणे अजाण नोन्द में सूता लोणां माथे आभो छिटक पड्यो, जाणे सितार री तार, ससक मे आवता ही टूट पड्यो। अणुचेत लोग चाणचक चमक पड्यो; क्यू कें ठोक बी बिळिंग अेक खुणे सूं उवाज आई 'सुभान अल्लाह'।

'सुभान अल्लाह' री गूँज सूं स्वामी श्री री ध्यान चूकग्यो, मृदग बजावणिये रा हाथ रुकग्या। संगीत रुकग्यो अर यसोधरा री देही घरती माथे लोथ दाई पड्यो। हाहाकार मचग्यो। 'जय देवी तन्त्री', 'जय स्वामी श्री', 'जय देवी यसोधरा' सूं मण्डप गुंजायमान व्हेगी। यसोधरा री देही माथे अेकें सागें चार-चार पक्षां सूं हवा करी-जणी सरु व्हेगी। गगाजळ रा छांटा देय बी ने चेतें मे लाभा। वीरा मारा गाबा पसोनें सूं आला तडका व्हियोडा हा। मुख मण्डळ माथे पसोनें रा टोपा अंडा ओपता जाणे मोती भडियोडा है। जाणे करुणारस साक्षात प्रगट व्हियो है। राव विजयराज; स्वामी श्री अर यसोधरा ने बघाई दी। यसोधरा नीची नाड़ कियां मन ई मन जाणे कीं रस री सवाद लेती रेंयी। बी रा नेण आधा निन्दाळका सा लागता। स्वामी श्री यसोधरा रें बारें मे राव विजयराज ने देवण जीग जाणकारी दी।

दूजी कांनी ज्यूं ई लोणां री निजरां बी उवाज समचें घूमी अर वे फाटी री फाटी रेंयगी। उठें तो दूजी ई खेल हो। अेक बोस-इक्कीस बरसा री मोठ्यार अेक हाथ मे रगत सूं भरियोडी तलवार अर दर्ज हाथ मे अेक कटियोडी माथो लियोडी हो। अेक लोथ पागती पड्यो ही। जाणे चाणचक काळी नाग सभा रें बिचणें घाय-ग्यो व्हे। लोग हर ने आगा व्हेगा। बी लोथ अर मोठ्यार रें च्यार कांनी मण्डळ बराग्यो। मण्डळ रें बिचवें ओ आदमी ई मांत ऊभो हो जाणे की व्हियो ई नी। बी रें चेरें ऊपर किली तरें रा भाव निजर नी आवता। पण बी री मूण्डो दिप-दिप करती। नेणां मे उजव चमक हो, डील भरियो पूरी। कद, दाई-नीन पूजता हाथ। रग गोरो अर वेस सिरदारा वालो। काना मे मुक्किया, गळें मे मोतियां री कण्डो अर ऊजळा बुराक गाबा।

थोडी ताळ, वो, यूं ई ऊभो रेंयो। पछें वो आंवरें दोळे मण्ड्ये मण्डळ कांनी निजरां घुमाई अर बी जागा ई घूम'र पाछो सागें दिगा कानो मूण्डो कर लियो। बी रें घुमणें रें सागें ई लोग लारें खिसकण लागा। हमें वो मृळकियो। हाथ मांयलें कटियोडे माथे ने, वो जमी माथे फेंक दियो अर रगत सूं भरियोडी तलवार ने धोतिये

माथे पूंछ'र ग्यान में घुमेड़दी । हमें वो उठे सून बहीर द्हेए लागी । लोग भा'गा सिसक'र वीं सारु मारग कियो । वो चार पावण्डा ई भागे बधियो बूझा के दो सिपाई वीं सून थोड़ा भळगा सामे घाय'र ऊभग्या ।

"ठैरजा !"

वो ठैरग्यो ।

"राव रो दग्गा सून तू बन्दी मोई । मेघ सून भागए रो उपाव सोवणो विरया मोई" ।

वो बिना की कैया, वां सामी जोयो भर मुळक दिषी । सिपाई भापसरी में भेक दूजे सामी देखए लागः । वे थोड़ा सारै सिसकग्या घर हाथ सून भेक दिसा में इसारो कियो । वो वीं दिसा कानो मुहग्यो । सिपाई धी रे सारे द्हेग्या । ज्यूं ज्यूं भागे बघतो गयो, भीड़ वी रो मारग छोड़ती गई । हमें वो भेही जागा पूगग्यो जठे राव भर स्वामी श्री ऊभा, वीं कानो ई देखता हा । वो दोन्यू हाथ जोड़'र गरदन भुकाई । वो मूण्डे सून की बोलणो चावती पए वो रा होट फुरक'र रैगया । वो दोन्यू हाथ कमर रे लारवी कानो ले जाय'र बाघ लिया घर गरदन नीचे लटकाय'र ऊमी द्हेग्यो ।

सिपाई राव नै भरज की के मो मिनख घरार मेघ, भेक मानछे रो घांटकी उतारली है ।

"काई नांव है स्यारळी ?" राव थोड़ा कड़क'र बोल्या ।

"पूतम !"

"कुए सखियो ?"

"भाटी"

"भाटी ! की रो ?"

"जेतसी रो"

"काई दिह्यो ? थ्यू....."

"वो भेडू हंतो"

"भेडू ?"

"हां" वो द्या उवा निजरा दीडाय हाथ सून इसारा किया । वो उवा कानो इसारा किया वे मिनख उठे सून सिसकए लागः, पए वां रे पाखती ऊमा मिनख वींरा हाथ भास'र वां नै पकड़ लिया । पए भेक मिनख धणो भळगो कमर भुकाया जमीं माथे कीं सोघती हो । वो सगळीं सून निजर बचाय मिगदर सून बारै निकळग्यो ।

राव रे इसारै ऊपर सिपाई यो भालिमोड़ा मिनखा नै राव रे सामा साथ पेश किया । यो लोगो रा मूण्डा घबळा पड़ग्या ।

वो यां सैगां कांनी निजर घुमाव देखियो, अर अेह हाथ भटकतां थकां बोल्यो
‘भागव्यो’

“कुण ?” राव सवाल कियो ।

“सिरदार यारी”

“बात खोलनै साफ-साफ बताव, भणूतो गाफन बणण री हुसियारी मत
जता”

“अन्नदाता ! अै दसूं माणस म्लेछ भौई । गजनी भौई अन्नदाता...”

“हौ”

“वी गजनी मे अेक मोटो धाड़ेत बसै”

“मैमूद”

“हौ अन्नदाता थो रा भेदू भौई” ।

“काई प्रमाण ?”

“पूछ’र देखली अन्नदाता ! जे नट जावै..

वो बात पूरी करे वी पैला ई वे दसूं मानिस माथो भुका’र हांमल भरेली ।
राव हुकम दिथो “यां नै रोक लिया जावै । मिन्दर सून कोई बार नो निकळै, जद
तक म्है इग्या नो दू” ।

हमै राव वी कांनी घूम’र बोल्यो “तू देवो रै मिन्दर मे अेक माणस री वध
कियो भौई अर वध करण री दण्ड काई व्हे ?”

“अन्नदाता जाणूँ । प्राणा रै बदळै प्राण” ।

“तेनै सकाई मे की कैवणो भौई ?”

“नो अन्नदाता ! हूँ बळी बढण नै तयार भौई ।

यसोधरा पुळक’र वी कांनी देखियो । अेक छिन साह दोन्यां री निजरां
मिळी । यसोधरा लाज सून दबगी । वो अचम्बे मे पडग्यो । कोई जाण पैचाण नो ।
कदैई पैला देखो नो पण जाणो वयूँ अेही लागे, जाणो बरसां री ओळख व्हे ।

अेक छिन साह च्यांव मेर सन्नाटो छायग्यो । राव स्वामी थो सून हवळी से
बातचीत करी अर इग्या मुण्हाई ।

“पूनम भाटी जेतसो गै, ते देवो रै मिन्दर मे यां सैग लोगां सामे अेक माणस
री वध करण गै चुक करी भौई अर तू खुद वी ईनै हांकर चुकी भौई । ई
बात मां तसो री इग्या सून ताम्रजै वध री इग्या दी जावै । बोल तेनै की कैवणो
भौई ?”

वो माथो घुण’र नटग्यो । “हूँ मरण नै तयार हौ”

भोड़ में सूँ घणकरी भेल्ली धुनियां भावण लागी "नी, नी, नी !"

यसोधरा री आख्या भाडी अन्धारी आयगी । वा एकमण्णी री बांय पकड़'र माथी बी रँ खान्धे माथे टिकाय दियो अर नैण मून्द लिया । लोग आपस री मे फुसफुसावण लागी ।

सिपाई राव सांमी देखण लागी । हमै राव अक'र चौकेठ' निजर धुवाई । यसोधरा कानी देख'र वे ठीमर ब्हेग्या । स्वामी श्री रँ सामी देख वे नैण भुकाया अर थोड़ा मुल्लकिया । राव बोल्या "भाटी राज री परम्परा परबाणे वध रँ बढळ' वध री दण्ड ई ब्हिया करै । पण स्वामी श्री री इग्या अर परजा री मसा देखतां थकां ई घड़ी पूनम जैड' वीर रा प्राण लेवणा ठीक कोनी । ई वास्तै साकी ब्हेणे तक पूनम नै मुगत क्रियो जावे । पण साको निमटियां पाछै पूनम खुद, देवी रँ मिन्दर मे हाजर होय दण्ड री भुगतण करैला । ई बात री जुम्मी....." । ' 'है, है, है.....!" भोड़ मे सूँ भणगिएत बोल सुणीजण लागी । यां मे अक उवाज यसोधरा री बी ही । पूनम नै दूजै दिन मिलण री इग्या देय, राय अर स्वामी श्री ठठै सूँ ब्होर ब्हेगा । सिपाई पूनम नै मुगत कर वां दसू मिनखां नै बन्दी बणाय लेयग्या । भोड़ पूनम नै हाथा ऊपर उठाय लोन्ही । जै तप्पो मां री, जै राव विजैराज री अर जै पूनम वीर री, धुनिया सूँ आभो मूँजग्यो । यसोधरा देर ताई मृळकता नैणा सूँ पूनम नै देखतो रैयो । बी री नस-नस धिरकण लागी ।

★

(८)

राव विजयराज देवी रँ मिन्दर सूँ पाछा मोलां कानी आया तो रात १६ चुकी ही । राणी रँ मोल मे आज अन्धारी ही । राव रँ पधारता ई हाजरिया दीडणा सह्र ब्हेगा । राव, राणी रँ मोल मे अन्धारी ब्हेणे रो म्यानी पूछियो तो उमिया अरज करी—

'अन्नदाता! आज महाराणी सा खुद रँ हाथां सूँ पकवान बणायो सो याकग्या घौई । सिनान करण पधार्या.....'

'ठीक घौई, जद तो रँहै आज महाराणी सा रँ हाथ सूँ परोसियोडी ई पाळ अरोगी ला ।'

'अन्नदाता ! हुही बह' ।'

'नी, उतावळ कोनी ।'

इरी मे महाराणी खुद हाजर ब्हेगी ।

'जीवण यन ! आज ती.....!'

‘हाँ असदाता ! पाछै मिलणी व्हे नीं व्हे । खुदरे हायां सूं.....?’

‘चिन्ता व्हेणे रो कारण ?’

‘राजपूतणियां भवै असल रैयी केत असदाता! अब तो गोलणियां रैयी ओई ।’

‘म्है, समझ्या कोनी?’

‘भाटी राज रो महाराणी खुदरं प्राणां रे मोह लारै राव नै छोड़, पीयर जावै, ई सूं, अधिक लाज रो कांई बात व्हे सकई ?’

‘राजा रो हुकम तो सगळां सारू सरखो व्हे । आप ऊपर बी लागू व्हे ।’

‘जदैई तो अरज करूं असदाता कै.....’

‘आपनै तो म्है, राजकवार देवराजरो रूपाळ सारू.....’

‘हाँ, श्री मिस तो बीत मोटी ओई’

‘आप ई नै मिस मानो ।’

‘आपरै सांमी बोलूं आ तो सुपनै ई नी सोच सकूं । पण आप आ बयूं भूलीई हजर के म्हूं मातर अेक मां इज नी पिए अेक घरनार बी होई ।’

‘राजा रो घरम व्हेई प्रजा रो रुखाळी रो । अर प्रजा में आप बी भेळा । राजकवार देवराज, प्रजा रै पेटै ओई, ई सारू वां रो रुखाळ रो मोअजे ऊपर खाम जुम्मी ओई ।’

‘राजकवार देवराज रो रुखाळ करण रो आपरो धरम ओई, ई नै म्है बी मानूं, पण राजकवार रो आड मे, म्है आपनै छोड अेष सूं पीयर जावूं परी, ई नै मोअजी मन नी मानै ।’

‘अबे आपनै क्यांत समझावा ?’

‘हूं सब समझियोडी ओई महाराज ! महाराणी रै नातै मोअजी बी की घरम ओई ।’

‘वो हूं समझां प्राणघन !’

‘तो मोअजी कैमलौ सुणावण रो इया मिलै महाराज ?’

‘देला ! सुणा’

‘राजकवार देवराज रो रुखाळ रो जुम्मी मोअजी ओई । हूं वां नै मोअजें पीयर भेजण रो ठावो प्रबन्ध कर लियोई । दासी अेष ई रैवेली । महाराज जीत नै पधारसी बी दिन बघावैला अर नो तर जोहर रो जवाळा में भेंट चढ़ण रै घ म सूं बन्धी रैवैला ।’

‘अेकर केरुं सोचलो ।’

‘बीत सोच-समझैर मत्तो कियो ओई, असदाता ।’

‘हूं आज राजकवार नै खोळै मे लेय नै याळ अरोगाला ।’

‘राजन ! मापनै श्री मोह त्याज देवणी जोइजै ।’

‘मत भूलो महाराणी सा, कै हूँ भेक बाप बी हूँ ।’

महाराणी रै भेक इसारै ऊपर दो हावड़ियां राजकंवार देवराज नै लावण साव दीड़ी । महाराणी खुद रै हाथां सूँ मखमल रा भासण बिछाया । चांदी सूँ झड़ियोड़ें पाटियै ऊपर सोनै रै घाळ में पकवान पुरस’र महाराणी जतन सूँ घाळ धरियो । पाखती चांदी री झ’री भर चांदी री गिलामां पड़ी हो । पलक भरतां हावड़ियां राजकंवार देवराज नै गोदी मे उठाय त्याई ।

महाराज बीत प्यार सूँ राजकंवार नै छाती सूँ चिपायो । राजकंवार देवराज री उमर चार-पांच बरसां रै बिच्चै ही । उलियाारी मां-बाप रै दोन्यूँ रै मेळ री हो । हाथ लगायां मैली व्है जैडो सरीर री रंग, नाक, तोसो, नैण मोटा, होठ पतळा, भर राता चिट । भणजाण मिनस बी मूण्डे री तेज देख’र मोळल लै कै श्री ई राज-कंदार भौई ।

‘भाबो बेटा जी !’

‘ऊँ हूँ’

‘भाबो ! मोघजै पासं भाबो ।’

‘नी, गुल—...’

‘लाल बनासा भाबो, आप मोघजै गोदयां भाबो !’

महाराणी दोन्यू हाथ पसारता हूयां बोली । ई रै समचै ई राजकंवार, महाराणी रै हाथां ऊपर उलझयो । महाराणी बी नै चूम’र छाती सूँ चिपाय लियो । राव रा नैण गळगळा व्हैण ।

‘लाल बनासा आज मोघजै हाथ सूँ घाळ भरोगैला’ राव बोल्या ।

‘घोटवा’

‘हाँ, हाँ घोटमा भरोगी बनासा ।’ महाराणी घाळ मांय सूँ घोटमै री भेक टुकड़ी तोड़ राजकंवार रै मूण्डे मे दियो । राव, राजकंवार नै पुटाय खुदरै खोळ’ मे लियो । महाराणी पाखती वैठी ही । बीं री छाती भरगी ही । राव रसोई री घणी सरावण को, पण महाराणी तौ भविस रै भदोठ मे भविमोड़ी ही ।

राव महाराणी री विन्ता समझ्या हा । ‘जीवण धन’ रै सम्बोधण सूँ महाराणी रै विचारं री तार टूटयो ।

“आप कीं हुकम दियो भगदाता ?”

“आज मोल में घन्घारी भौई ?”

“भये तो खं कीं घन्घारै रै ठसियोड़ी ई भौई राजन् !”

“भापनै, मोघजै बळ ऊपर भरोसो कोनी ?”

“भरोसी नो व्हेतो तो कदकी घातमहित्या कर लेती, पण खाली भरोसे”

“कोई कुमी-कसर छै तो बतावो”

“अन्नदाता रे राज में कुमी किली बातरी कोनी । प्रिजा आप माथे प्राण निछरावळ करै ।”

“पछे ओ अन्धारो बयू ?”

“चानणी अन्नदाता सांभी लाजा भरै”

“परखणी पड़ती”

“पलका बिछावू”

राव सजब निजर सूनू बूटारोणी कांनो देख्यो । महाराणी लाज सूनू घरती में गडण लागी, पण उमाव रे सफाणी आवण लागी ।

डावडिया रे नैणां मे चमक वापणी । दो घरसां सूनू आज बारी बारी भाई, मौल सजावण री । महाराणी सात बरस छोटी व्हेगी । साकळें मौल री खुणी-खुणी सोरम सूनू भरियोडी ही । मौल रे अक्रेक भाटै माथे चमक ही । मांगणी पुळकती ही ।

(६)

राव री इग्या पाळण मे दूर्जे दिन साकळेंई पूनम, राव रे सामे हाजर व्हियो ।

“खम्माधणी अन्नदाता !”

“है । पूनम जेतसी री ?”

“मापरी किरपा सूनू हूँ मुगत ओई महाराज”

“मुगत नो, तूँ मौघजो बन्दी ओई”

“हूँ । म्हे तेनै यूनू ई मुगत नी कियो ओई”

“इग्या करी अन्नदाता, माथो भेट धरू”

“हो । माथो ई जोइजै मौघजै”

पूनम सडाके सूनू म्यान मांय सूनू तलवार खांची अर ज्यू ई तलवार गरदन कांनो सठाई अर राव बोल्या “पूनम ! तूँ साचाणी वीर ओई । ईं सारू ई हूँ तेनै मुगत कियो ओई । तूँ, भाटी राज री सखाळ सारू बीत मोटो काम कियो ओई वां भेदुवां नै ओळखेर”

“म्हे तो मापरे पर्गा हेटली घूड.....”

“नी, पूनम ! हूँ तेनै भाटी राज री भई किवाड मानां हां, अर ई सारू सामजा प्राण संकट मे घातली चावां ”

“इग्या करो अन्नदाता ? ओ मोअजी सोभाग ओई”

“दुसमण रो भेद लेवण सारू माथी जोइजै पूनम ! दुसमण बी छोटी मोटी नी, गजनी रो सुलतान ओई।”

पूनम, तलवार पाछी म्यान मे घती, अर माथी भुकाय बोल्या “अन्नदाता रो ई किरपा सारू.....”

“भाग ! मोल ।”

“आसरीवाद”

“अेक बात ओई”

“सिर नैणां ऊपर”

“गुलाब तयारळै सागै रैवैली” गुलाब कांनो सकेत करता हुयां राव बोल्या ।

“जद तो काम बौत सोरो व्हे जासी अन्नदाता, पण.....”

“पण काई ?”

“परख किया दिनां.....”

“सोनें भूं खरी । फेहूं बी परख करले तयारळै ढग ढाळै सू”

“नी, बस भरोसे रो ई बात ओई दाता ! क्यूं कै लुगाई जात.....”

“महाराणी रा भंवारो थोड़ा तणग्या पण पूनम रै चिलकले चैरे सांभो निजर पडता ई गुस्सो गळग्यो ।

“खरबी, अणखूट ले जावो । सात दिनां में पाछा घावो”

दो नौळी सोनें रा टका पूनम रै हाथा सू प, राव मोलां मे पधारग्या । गुलाब रो उड़ीक में बी नै रणवास रै बारै ठरणो पड्यो । वो बारै ऊभी भावी रै सुपनां मे सुध बुध भूलग्यो । अेक हाथ, बीरो बाहुडी पकड़ मांय खांव लियो ।

“पूनम !”

“हूं । कुण...?”

“है” बी रै नैणां मे नैण गडाय महाराणी मुळकी ।

“इग्या करो अन्नदाता !”

“इग्या नी, भोळावण ओई”

“ज्यूं घापनें सोवै”

“गुलाब, मयारळो राम ढावडी ओई”

“टूली”

“ओई । म्हे दो तन, अेक मन हां”

“म्हे पेरली ई....”

“नी, गुलाब तयारळै सागै घालैली । ई रो घाव ज्यूं परख कर सकै, पण...”

“नी, मीमजै परख बीजी नी करणी भन्नदाता,”

“ओ हो ! काई दाता घर भन्नदाता, लगाय राकी ओई ?”

“भन्नदाता !”

“केहूँ वा ई रट, सुण ! गुलाब जे त्पारळीं रुखे वरताव सू कुम्भछायणी तो समझ लीजै कँ महाराणी.....”

“आप.....”

“पूतम ! कितरो प्यारो नांव ओई ? जँडो नाव वँडो ई रूप, रङ्ग, डोल घर.....”

“मीड़ी व्हेई भन्नदाता”

“हूँ। लै या प्यारळी असल हीरां-पत्तां घर मोतिपां सू भंडी मून्दड़ी, संव-पिचाण रो”

या कैर महाराणी खुदर हाथां सून आवरो मून्दड़ी खोल, पूतम रो भांगळी में पंरायदी ।

“हजूर, ओ काई ?”

“वयूँ कम ओई ?”

“नी । आ....”

“हौ, गुलाब सार्ग ओई, सेग समझा देसी”

“पण म्हे.....”

“जादा बकणो नी । बहोर रहे जावी । जावी, जावी भेय सून । मीड़ी मत करो । गुलाब ! ओ गुलाब !”

“भन्नदाता !”

“जा, ई नै लेजा । नार्यो खुल्यो चर्यो दोसेई । नाथ घात, काबू कर लीजै”

गुलाब, पूतम रो हाथ पकड़र वीनै बारे खांच हवाई । महाराणी मुळकती, देखती रैयो । पूतम दासै सून ठोकर खाय खिरती खिरती बचिमी । मून्दड़ी, पूतम रो भांगळी मे फँसगो । महाराणी नै ओक भांगळी सूनी सूनी लागण लागी । रै रै नै भैर केहूँ बाजण लागो । दो साण्डां कसियोड़ी, दो असवारो नै रोप, डीगा डग भरण लागो । महाराणी ओक लाम्बी सांस नाँली ।

(१०)

मुनसान रें दगण पुरव मे गिम्पू घर सूनी हाकड़ा नदी रें बिन्नी पहिया मुनसान घोरां मे भेक नुवी नगर बगयी । भन्दाजन चार पांच मोल रें घेरें मे मोटा मोटा तम्बुवां री कतारां लागोड़ी ही, ज्या ऊपर हरा भण्डा फंरावता हा । हवा रा भवकां सूं पैदा धियोही लैरा रें कारणें फट-फट री उवाजा, रें रें नै कानां में भावती । रात रें डरावणें काळस मे ससमान री दीवड़ा भिगमिग करती । घठीनै या तम्बुवा रें ऊपर भिगमिगावती मसाळां भपकियां खावती । दिन रें चान्णें में भै ऊजळा वुराक तम्बू भंडा लागता जाणें बरफ रा टीबा लड्या व्हे । सिध्या री रातड जद घेरा जावती घर यां री रज्ज सोई ज्यूं व्हे जातो वीं बिळिया भसमान में छाथोड़ा भसमानो, काळा घर राता वादलां री लैरियो, फागणिया रज्ज बिघेरतो । ईं बिळिया या तम्बुवा रें मूँदें री रज्ज फीको पड जावतो, काया कंवळीज जाती । पण रात व्हेतां ईं नदी रें वी किनारें सूं दोड दोड़ायां, भेडो लखावतो जाणें हजारों किस्तिया समदर री छीळां नै चीगती थकी आपरी मस्ती मे घीमें-घीमें भागें बघ रैयी है । निजर घुनी रें वेग सूं बी तेज भठी ठठी सपाटा लगावती, भेकें जागा दिर नी रें सकती । भेडो ईं वास्तें बी लखावतो कें पवन रें वेग रें कारण भिण्डा लैरावता घर मसालां टिम-टिमावती । ईं वास्तें यांरी भसलो भों री भन्दाज टीपणी बोल दोरो व्हे जातो । कदैईं भै किस्तियां नैडी रिगसती लखावतो तो कदैईं उल्टी बँवती । भसमान सूं जिगमिग करती भसमान री घोवडियां घर मडद री भुजमेनत घर मगज री उपज या दीवड़ा में जाणें होड लागोड़ी ही । पवन रें भवकें सागें ईं भै मसालां कुम्कतो, लगती, केरूं लगती । निजर हिचकोळा खावण हुक जाती पण हिचकोळा खावती तो दीसण वाळी भै भरम री किस्तियां तो सागें जागा ईं मानलें नै भरम में बगनी कर नासती ।

बीस हजार सिपाइयां रें रैवास सारू तकरोवन चार हजार तम्बू, तीनों कांती सूं भरघचन्दर दाईं लाम्बी लाम्बी बराबरी रें घांतरें सूं जमायोड़ी कतारां में गाडियोडा हा । चार रज्जां री कनातां बारोबर ऊमी ही । भेक सी तम्बुवां लारें भेक रें हिसाब सूं भटियारखानें री तम्बू खड़ा किया गया । ईं में सिपाइयां सारू भोजन पकाईजतो । ईं रें बाजू मे ईं भेक तम्बू दरजो रा कायम कियो गयी, लगोलग बीस बीस रें बराबर रें घांतरें सूं भै कतारां लागोड़ी ही ।

सबमूं आगली कतार बाळा तम्बू, खड़ाकू बादुरां रा हा । भै लाम्बी दाड़ी बाळा यवन सिपाई हा, जका कें हमलो घर ख्वाळी दोन्पू री बिद्या में पारंगत हा । हरेक तम्बू रें मांयने ईं दो छोटा तम्बू कमरां दाईं जुदा-जुदा हा, यां में सूं

अक मे सस्तर अर बीज में दीगर जरूरी समान राखियो जाती । बीचली आंगणी मिपाइयां र सोवण बैठण र काम मे आवती । सो तम्बुवां लारै अक र हिसाब सूं अक मोटो पण्डाल अक कोनी घोडा बान्धण सारू तयार कियोड़ी हो । यां सूं ई चिपती सस्तर र भण्डार रो पण्डाल हो जी मे तीर, भाला, बरछियां, तलवारां, ढालां बीजा पड़्या रैवता । अक पङ्गत सूं दूजी पङ्गत रै बिच्च सौ हाथ रो छेनी जरूर व्हेती । पचास पग पाछे अक कोनी हट नै हरेक तम्बू रै लारै टट्टो, गुमल रो माकूल इन्तजाम हो । पांच सौ तम्बुवां लारै अक पसारी रो गोदाम, तम्बोळी रो चार दुकानां, पच्चीस लवार, बीस मोची, दस दरजी, अर पाच सात फुटकर तम्बाकू, दाख तेल, काच इत्याद रो दुकानां हो । ओ बजार एक चन्द्रमा रै गोळें दाई सजियोड़ी हो । ई मांत रा तकरोबन दस बजार उठै लागोड़ा हा । या सबसूं, यलादा, पांच मोटा तम्बू गुलामां रा हा, ज्यां मे कोई दो हजार गुलाम भड़द कैद हा ।

पाच तम्बुवां सारू अक बलदागाडी, अर दो ऊँट, पाणी रो पकाए नैकाड़ा तयार रैता । पाणी रो पूरी इन्तजाम राकण सारू पाच सौ मोटो अकिली की सुलतान आपरै सागै लायो हो । यांनै बी कायदे सर अड़ी जाणा मेरुई ई कान्हा सारू घणी आगी जावण रो जरूरत नो पड़ै । खावण पोवण रो कान्हा सारू लैजावण सारू अक हजार बलदागाडियां या ऊँट गाड़िया हो । दूध मेरुई ई मेरुई गजनवी कने दस हजार ऊँट, छ हजार घोड़ा, अक हजार बलदागाडियां, दो हजार खच्चर गधा, अर अनापसनाप बकरां रो अवेद हो ।

बिचली दो पङ्गतां मे मोटा मोटा फीजी अपमगं कान्हा सारू नैकाड़ा हा । या सूं लगता ई तवाइफां रा तम्बू हा । ज्यामें कोई टीन दूध रो बलदागाडियां हा । विया हरेक टुकडी सागै बी रो कतान अक खास मसुरा रो दूध रो बलदागाडियां राकती । ऊपर बतायोड़ी कुमुद अर रसद रै इलाका सारू नैकाड़ा हा । अक हजार लवार, एक हजार दरजी, अक हजार फीजी रो बलदागाडियां रो कारीगर, इत्यादि बी हा । यारै रैवास रो बी दूध रो बलदागाडियां । दूध रो बलदागाडियां हकीम रै इलावा दीगर दो सौ हकीम बी मारि हा ।

(मिडकल) इत्याद सूं भरियोड़ा हा, वे यां पण्डाळां में पाकड़ पीरें में पड़्या रवता । यां पण्डाळां रें च्यारूं मेर मांय घर बार दस-दस पगां री छेती मायें श्रेक श्रेक सिपाही नागी तलवार हाथ में लियां पीरो देवती । बारी-बारी भर सिपाई श्रेक दूजें रें बिच्च कदमताल करतो रेंतो । यां सन्दूकां में पंजाब, मुलतान, सिन्ध घर केई छोटा-मोटा राजावा रें इलाका री लूटियोड़ी सम्पत ही । ई देस री गैलसफाई सूं बिसरियोड़ी पड़ी सम्पत नें श्रेक सुलतान री सैना घर तिजोरी भापरी पासवान बणा रें बीन कंद कर राखी ही । पासवान बणावण सारु सुलतान रा केई सिपाई, मारग सूं घणकरी लुगामा नें पकड़ लाया हा, जकी तबाइका भेली भिलगी ही ।

यां सगळा तम्बुवां रें बीचोबीच में श्रेक मोटी ज्यूं पण्डाल लागोड़ी ही । पण्डाल रें च्यारूं मेर दस-दस गज री छेती सूं कनाता गाडियोड़ी ही । कनातां रें बारली कांनो दस-दस गजरी छेती मायें तोरन्दाज घेरी घालियोड़ा हा । कनातां रें मांयली कांनो पण पण्डाल रें बारली कांनो बीं हिसाब सूं ई यवन सिपाई नागी तलवाभां हाथ मे लियां पीरो देवता । यां सिपाइयां रा सरीर तो रें सांचे डळियोड़ा हा, घर सिकनां धणी डरावणी ही । नागी तलवारां हाथ मे लियोड़ा श्रे साक्षात जम री रूप निजर आवता । यां रें हाथां मे पकड़ियोड़ी नागी तलवार मायें जीरी बी निजर पड़ती बी घर-घर भूजण लाग जावती के बस बीरी गरदन भा कटी भा कटी । ई वास्तै २५ कांनो पग बधावणा छोड़ निजर फंकारें री मुनळर हो मोत नें नूतणी ।

ई पण्डाल रें मांय श्रेक छोटी पण्डाल घरूं हो, जी में कम सूं कम पचास भरदां रें बँटण जोग खुलास री जागा ही । ओ पण्डाल रें श्रेक श्रेक भ्रममानो घर हर रंग रें रसम री बुणियोड़ी ही । ई मे जागा जागा जरी री काम कियोड़ी ही । साखती पाखती मसीत रें गुम्बदां दाई गुम्बद बणियोड़ा हा । तम्बू मायें जागा जागा जरी सूं कुरान री भाइतां रा कसीदा काडियोड़ा हा । यां रें बिच्च जागा जागा तलमा सितारा जडियोड़ा हा । जिको जागा खाली रवती बी जागा सेर, चीता, रीछ, हिरण, खिरमोम इत्यादि री सालां डंग सूं टाकियोड़ी ही । ऊपर छत मे सवावणा झाड लटकियोड़ा हा ज्यां मे खुमबूदार तेल रा दिया बळना हा । यां मे सूं निकलियोडे चांनणें री उज्जाम सात गुणा जादा निजर आवती । श्रेक बीयें रा पांच दिया निजर आवता । ई रें इलाका पण्डाल रें मांय घर बारें दोन्यु जागा चांदी री मसाळां जुदा घेनन ही । पण्डाल रें ऊपरलो भाग ई डंग सूं जाळोदार बायोड़ी ही के मायवी घुंवी भाराम सूं बारें निकळ सकें घर हुवा बी बरोबर ताजी आवती रेंवे ।

घांगणें ऊपर कीमती कासीन बिछियोड़ा हा ज्यां ऊपर कीमती गलीचा सुबभूगती बधावना । सिरें दरवाजें रें डावी कांनो बाघ घर चीतां री फूटरी खालां

बिछायोड़ी ही, उठे अक मोटी अर गोळ तकियो बी तरतीव सू सजायोड़ी ही । ओ तकियो बीत जादा कीमती अर कळागिरी रो बेमिसाल नमूनी ही । ई तकिये र सारे अक भव्य मूरत साक्षात रूप मे बिराजियोड़ी ही । पच्चीस बरसा रो अक मोठ्यार, बीत मोटे अर लम्बे पण ओपत डोल रो, डरावणा पण मदरा प्याला व्हे ज्यू नण जरूरत सू जादा लाम्बा हाथ, बीटलीदार काळा कंस अर छोटी सांक पण भरियोडो दाढो । खोफनाक आवाज वाळो ओ मोठ्यार ई गजनी रो सुलतान 'यामिनूद्दोला महमूद निजामुद्दीन कासिम महमूद' ही । ई र चर सूरता अर क्रूरता बरोबर टपकती । चवदा बरस रो उमर मे ई ओ जुद्ध करणी सरू कर दियो ही । खुद र पराक्रम, बुद्धि, हीमत अर जुगत सू ई बी खुदरे भाई सू राज खोसनं राज रो मालक बणग्यो । आपरे बापरी परम्परा निभावतां थका ई बी भारत रो बेसुमार सम्पत, लूट-लूट नै गजनी ले जावणी सरू कर दी । बी माया रो लोभी हो, अर माया बी रं पगां पड़ती ।

खूबसूरती अर कळा सारू बी रो नेह अर उमाव सायत बीं नै आपरी ईरानी नसल रो मां री देण ही । ई वास्तै ई बी सायराना मिजाज रो हो । बी सायरां री इज्जत करती । बी री निजू सुपर्ना रो अक संसार हो जी नै बी आपरी मर्दानगी सू साकार करण री सामरथ राकती । कारीगरी रो प्रेमी व्हेतां थकां बी बी मूरती पूजा रं खिलाफ क्यूं हो, कं मूरतियां क्यूं तोडती ? ओ सोचण जोग सवाल हे । सायत बी रो यथार्थ मे आस्था ही । बी मूरती पूजा में आंध्र विस्वास री गस देखी । घरम अर परमातमा रं नांव माथे पळतै पाप सू बी रो साबको पड़ियो । पिण्डां अर पिण्डतां रं पाखण्ड नै बी मलीमांत परखियो । देवतावां री जकी दुरगत पुजारी लोग बणाय नाखी अर परमातमा री भगती रं नांव माथे जकी रासलीला रो साग अर वैभीचार इत्याद व्हेता बी सू बी घणी नाराज हो । व्हे सकै कै अं बातां कूडो बी व्हे पण कारण तो कोई न कोई हो जरूर, जो ई आदमी नै मूरतियां अर मिन्दर तोड़ण सारू सकसायो ।

मैमूद, हिन्दुवां रो आपसी फूट रो फायदो सठायो, मूरतियां तोड़ी, मिन्दर धुडाय अर पिण्डतां नै गुलाम बणाय वानं बेचनै टका बाटिया । बी पाखण्ड रा पाटिया ऊघा मार दिया, अर खुदरे मुलक पाछो गयो परो । व्हे सकै आपरे या क्रूर कामा रं कारण बी री आतमा कदेई पछताई बी व्हे ।

मुलमल रं गिहं माथे तकिये रो सारी लियोड़ी बी सेर व्हे ज्यू दहाडती । बीरा गावा बीत कीमती अर भजवूत खाल रा बणियोड़ा हा । अक हाथ बीरो घकसर तलवार री मूठ माथे ई पड़ियो रंघती, जी सू बी री आंगळियां रमती रंती । बी रं माथे ऊपर अक उजब सी पण आला पाग ही, जीं मे जागा जागा चेडियोड़ा नीलम...

घर होरां रो घाभा चकाचून्घ कर देती । वो री पगरखियां में जडियोडा लाल घर
पघां सूं किरणां फूटती । सूरज रो किरणां दाईं थें किरणां धी घादमी री निजरां नें
सैन कोनी व्हे सकती । धीं रें सामो जोवण री हीमत भाद्या भाद्यां में बी नो हो ।
धीं रें घासतो पाखनी ऊमा उमराव, बकरे जून् पूजता घर वारा कान हर बिलिया
बस सुलतान री हुकम सुणण पातर ऊठियोडा ईं रैवता । भेक भादमी हमेस बी रें
साथे रेंतो घर घो हौ 'भलउल्हो' । मैमूद गजनवी रें जोवण काळ री हरेक घटना
ने वो साहित री रूप देण नें गाथा बणा देती । मो ई वो री खास गुण हो ।

(११)

'हा, काई नांव घोंई त्यारळो ?'

'गुलाब'

'बोत मोठी नांव घोंई'

'चाळ देहपो काई ?'

'चाखण री छूट मिळियोडी घोंई, महारांणी सा सू'

'भ्यागळें मन री महारांणी हूं घाप घोंई'

'पांणी री छागळ, ल्हाई मार्ग ?'

'वा, काई व्हे ?'

'हूं, म्हे तो सम्भाळ ही नी की'

'जोव तो सम्भाळ राकियो ? कै नी ?'

'वो तो सावकी जागा घोंई'

छागळ निकाल, पूनम, डगळ-डगळ पांणी पियो ।

'घापनं भूष घी तो लागी व्हेतो ?'

'भूष ? कस्ती ?'

'भूष बळें कस्ती ? दुकर री ?'

'बसू' बीजी भूष नी व्हे ?'

'बीजी भूष तो हूं कोई जाणूं कोनी'

'काई उमर घोंई ता'सजी ?'

'तंयाळोस री जलम घोंई'

'तयाळीस ?'

'हूं, भेक हजार तंयाळीस'

'समभ्यापो ! सोळा-सतरा बरमां री घोंई ।'

'व्हे सर्क'

'व्हे काई, भळ ? पण तूं दीमण में तो बीस-बाइस री दीस'ई'
 'दीवई हाड री ही'
 'जदैई तो भूख सूं भणजाण घई'
 'क्यांरी भूख ?'
 'भूख सरीर री, मगज री, मान री, मतवार री, घर...?'
 'भयं इयाली-उवाली बातां ई करणी कै की काम री बात बी.....?'
 'काई बात ? बोल सूं ।'
 'बोलू काई ? जो काम सारू थां रे पल्ले पडो घई'
 'हूँ ! कितरा कोस आयग्या हा घापा ?'
 'घई बीस-तीस'
 'जद तो थोडी भी ई कटी अजून ती'
 'गप्पां मार्या तो भी थोडी ई कटमी'
 'कुण मारी गप्पां ?'
 'घापा'
 'म्हे ?'
 'हा, घापा !'
 'ठीक, बतळाई घर गळें पडो ?'
 'गळें पडें म्यारळी....?'
 'हां, हां, हां, काई ? त्यारळी काई ? बोली कोनी ?'
 'साण्ड उतावळी घई'
 'खातो ती घा बी पडें । माडें ई मोरी बीली राक छोडी ही ।'
 'दोऱ्यूं बैतां घई'
 'जदै ई'
 'कयूं ?'
 'उणिवारो मिळें, ई रो, थां सूं'
 'म्यारळी कयूं ? हूँ साण्ड रें उणिवारें हों ?'
 'हवें !'

गुलाब गुरुसे में साण्ड रें तडो दी । साण्ड पाछी सपाटे दोइए लागी । पूनम बी
 घापरी साण्ड री मोरी नै छांची घर वा बी पवन वेग सूं भागए लागी । कोस भर री
 भौं माथे पूनम री साण्ड, गुलाब सूं घागे नोसरगी । पूनम, गुलाब रें सोमी जीभ काड़,
 मुळकियो । गुलाब, घापरी साण्ड रें अक कामडो लगाई घर पलक भरतां, वा, पूनम सूं
 घागे नोसरगी । सूरज निजरा रें सोमी घायग्यो हो । बीं री उज्जास हमें मंदी पडए लागी ।
 घोरो रें अघाग समदर री सुनियाड में दो साण्डो री सोसा बीत डरावणो हांक भरती ।

मांढां रो परायायां तर-तर साम्बी बघणु सांगी । वृज्जं तावडें री चमक मे गुलाब रं मूण्डें
 रो भाई गुलाबी लागणु सांगी । थो रं वोत्रिये रा पेच कीला पड चुका हा । पूनम घेरु
 दूजें घोरें नें पार कर, साण्ड नें घाडी केरी । दोग्यूं री निजरा मिळी । गुरनं में भगि-
 योही गुलाब रो भंगी, चमचमावणु सांगी । पूनम, मुदरी साण्ड नें थो रं नेंही ली, घर
 थो रं ऊपर ऊमो व्हेगी । गुलाब, साण्ड नें फेरुं तडो दो । पूनम री साण्ड, थो रं
 लगोलग दोडती रंथी । हमें पूनम पापरी घेरु टांग, गुलाब री साण्ड माथें मेत, घर
 करनी जाय, गुलाब रं पूठें चेंढायो । थो री मुदरी साण्ड री मोरी, थो रं हाथ सूं
 दूटगी । साण्ड घाक चुकी ही बी नें चंन मिळियो । गुलाब, आपरी साण्ड री मोरी नें
 हाथें हाथ कांती लेय सांच मारी । साण्ड भागला दोग्यू पगां रा मोडा जमो माथें टेक
 दिया । अचाणचक लागें हिचकें सूं पूनम नोचें तिरायो, थो रा पंजा, पागडां में घट-
 कायोडा कोनी हा । नोचें पडती ई, पूनम, हाथ पगा नें छीडा कर जमो माथें चित्ता
 पमगयो । घांठ्यां रा डोळा बारें काड, थो घांटकी नें कीली छोडदी । थो सांभा रोक,
 घिर व्हेगी । ओ ठाळी देख, गुलाब भेक'र तो पबरायगी । वा, थोनीं जमेइए लागी,
 पण पूनम, टस सू मस नी व्हियो । गुलाब रं पसोनीं छूटणु लागी । वा आपरी कान,
 पूनम रं सीने ऊपर लगाय, काळजें री धडकणु सुणणीं वावती । काळत्री घक-घक
 करती हो । गुलाब, पूनम री हाथ पकड जंमेडियो । पण पूनम अडोळी घर अडोळी ई
 रंथी । वा छागळ लाय, पूनम रं मूण्डें माथें ऊंवायदी । हमें पूनम, माथें नें झटकी देय,
 ऊठियो ।

‘म्हे केत हों ?’

‘भाप भेष हो’

‘है कुण ? तूं कुण ? मने कीं निजर नो भावै ।’

‘म्हे, म्हे, गुलाब हों’

‘गुलाब ? कुण गुलाब ? कांटाळी ।’

‘लुगाई, डावडी, आपरी.....?’

‘कुण है ? म्हे केत हों ?’

‘पूनमसिंगजी ! थोडा होस मे भावो । देखो, म्हे गुलाब हों । तां'घजे साथ
 आळी ।’

‘मोग्रजें साथ आळी ? मोग्रजें सागें तो कोई कोनी । म्हे तो बाण्डी हों ।’

‘हमै म्हे क्यांन समझावूं ? क्यू ममखरी करी ? थोडा होस मे भावो नी ।’

‘होस ! हूं, भावो’

गुलाब, पूनम री झटकती पोटली निकाळ, पूनम रं हाथ में थमाई।
 पूनम पोटली मांय सूं ओक किरची निकाळ, गुलाब रं सांमी करी ।

‘हूँ तो होस में ई हौं पई । आप अरोगी मोमजा.....?’

‘मन थोरा क्रिया बिनां कोनी ऊर्ग’

‘तो ल्यावो’

‘ऊँ, हूँ ! बाकें में’

‘म्है आपे ई घर लेसू’

‘नी, जीभ ऊपर म्है ई मेल सू’

‘म्है, मर जासू । म्है अमल नी.....?’

पूनम, गुलाब रें चंरें मायें हाथ फेरती फेरती, वीं रें बाकें तक लेयगयी अर अमल री किरची वी री जीभ मायें धरदी । गुलाब सारलें पासं मूण्डी ले जाय, पाछी थूकदी ।

हमें पूनम खुदरें बाकें मे अमल री डळी घतए सारू गुलाब रें सांभी करो ।

‘ठाकरां ! मोमजा थोरा करो’

‘ल्यो अरोगी अमलदाता !’

‘ऊँ, हूँ ! आप ल्यो’

‘म्है लियो, आप अरोगी’

आ कैर गुलाब अमल री धोड़ी सी किरची, पूनम री जीभ मायें धरी । पूनम, दांतां सू गुलाब री आंगळियां दबाय दी । वी रें मूण्डें सू हलकी सीक चींख निकळगी ।

‘रोळ’ गुलाब मूण्डी बिगाड़’र बोली ।

‘काई कैयो ?’

‘रोळ’

‘देख ! मूण्डी सम्भाळ’र बोल’

‘कोई होस में व्हे तो वीं सू बात करो । आपनै कोई होस तो.....?’

‘म्है होस मे हौं’

‘तो पछे अं लुगाया बाळा छिनाळपणा क्यूं करो ?’

‘लुगाई री दाब, लुगाई ऊपर अजमावण खातर’

‘म्है लुगाई नी, मड़द हो मड़द’

‘सबूत ?’

‘सड़ालो पंजा’

‘लुगाई सू काई पंजा सड़ावू ?’

पूनम री आंगळी मे महारांणी री भूम्हड़ी देख’र गुलाब चमकी ।

“आ बीटी तो महारांणीसा री आई”

“क्यूँ ? बाळा-बाळा संग बाप रा ताळा ई म्है ?”

“नी, म्है मलीमात घोळ्यूँ”

“बाई घोळ्यूँ ?”

“म्है महाराणीसा रो घग घग घर हं हं घोळ्यूँ”

“पण या ती बोटी मोई, नी ती घग मोई नी हं”

“घर घग घग नै तूँ के तूँ घोळ्यूँ”

“म्है बांरो मरजोदान टापड़ी हों । म्यारलै तूँ बी छानी कोनी”

“म्है तो तुद रे ई पूरा घगा नै नी घोळ्यूँ”

“जई ई तो कँवू के नाठ हो, नाठ”

“बाई मुतळव ?”

“मुतळव साफ मोई”

“म्है समझयो नी”

“मो ई ती रोवणी मोई”

“घाडियां मत उलझा”

“घाडी तो महाराणीसा घाती मोई । उलझिया घाप, म्है तो दोन्यूँ रे बिच्चै.....”

“है, तो दोन्यूँ रे बिच्चै मोई तूँ”

“मोई”

“तो लै आ मोमजी कानी तूँ तैने”

“नी, नी । म्यारळी मोत घोड़ी भाई.....”

“बाई मुलळव ?”

“बस, हरेक बात रो मुलळव याने समझावती रैवूँ । म्है क्यूँ कँवूँ म्यारळी मूण्डे तूँ के मून्दड़ी के रो संनाण मोई ?”

“मून्दड़ी ?”

“हयै, बोटी; छत्तो”

“लै छोड छमक छल्लो । पंजा लडाय फैसलो करला । तूँ जीती तो म्यारळी बात साधी, म्है म्यारळी चाकर । नी तो पछै.....”

“म्है हारूँ ई कोनी”

“तो व्हे जावै”

“व्हे जावै”

“बस । डरम्या ? बाहर गिलीजी”

“डरूँ तो काई ? हाँ, सोचूँ के भांगडियां उतरगी ती.....”

“भरै वा, देखी तागत । हार सू बचण खातर घोला लेवी”

“या बात हवै तो बहे जावै”

“बहे जावै”

दोन्सू जेवणै हाथ रा पजा प्रापसरी मे जोड़, सुणिमा घूड़ मायै जमादी ।
पूनम बोल्थो “पैला तयारळो दांत”

गुलाब पूरी जोर लगाय लीन्ही पण पूनम रो हाथ, बी सू नो डिग्यो । उल्टी
वीं रो घांगळियां काठी भीचोजगी ।

“हमै प्राप जोर भजमावी”

पूनम, गुलाब रै पंजा नै थोड़ा काठा दबाया तो वा सिसकारा करण लागी ।

“काई बिहयो ?”

“अई, मोमजी मां.....”

इतरै जोर सू घांगळियां दबाय नाखी है”

“जोर तो भजूं लगायो ई केत ?”

“ई सूं जादा जोर लगावनै काई घांगळिया तोड़ीना ?”

“बस । मानली हार ?”

“हार नी मांती ।”

पूनम हमै थोड़ी फेरू दबाव देव, चींरी घांगळियां नै काठी दवाई । हमै
गुलाब थोड़े जोर सूं सिसकारो कर, खुली जमी सूं ऊार उठाय ली न्हो, बी रो घांग्हा
मांय सूं घांसूं घ्राग्य्या ।

“काई बिहयो ? पणो गरब होई”

“घां कोई मडद होई ?”

“क्यू ?”

“इतरी जोर जुगाई सूं सहोजै ?

“पैला ललकारै ई क्यू ?”

“मडद नै जोस दिरावण सारू”

“कै रो जोस ?”

“मडद मे थ्रेक मोटी खांमी व्हेई । जद बी मे जोस व्हे तद बी नै होम नी
रैवै भर जद बी नै होम व्हे तद जोस दोरो आवैई”

“मानग्यो । इवै आपा रो पट सकैई ?

“काई भुतळव ?”

“भुतळव ओ, कै जो काम सारू हूं जाय रैयो हो, बी काम में तयारळो मदद
मनै मिळ सकैई”

“पैला नो मानता !”

“नी, पैला ती म्है समझ्यो कै मन रोझावण सारु, म्यारळें सागै अक रामतियो भेजियो भोंई ?

“तो काई रमण रो मतो भोंई ?”

“नी”

“क्यूं ?”

इ वास्तै कै म्है वां रामतियां सूर् ई रमत करूं, जका म्यारळें खुदरै वित्त चढ़ियोड़ा व्हैई”

“हैं फूटरी भोंई”

“भोंई”

“म्है जवान हों”

“हवै”

“पछै काई कसर भोंई म्यारळें में ?”

“पूतम नै रोझावणरी”

“कै सूर् रीझी ?”

“व्याणू सूर्”

“भूख लागी काई ?”

“हवै”

“कैरी ?”

“पेट मांय”

“बीजी ?”

“बीजी, तोजी, काई नी, टुकर निकाळ”

“टुकर तो नो पचदारी भोंई, महाराणीसा खास कर घताई”

“वे तूं खा, मन तो सोगरो व्है तो दे ई”

“पाप सारु तो पचदारी भोंई”

“क्यूं ? सोगरो नो ?”

“वो म्यारळें सीर रो भोंई”

“तो सीर पतटला”

“सीर में तो पणो बातीं पावई पतटला !”

“तोचूं तो !”

“म्है, मोघना महाराणी सा, मोघनी....”

“मुलाब !” पूतम गुस्से में कड़कियो ।

“काई ?”

"घोड़ी जोम सम्भाळ'र बोल । तूँ डावड़ी घौई अर डावड़ी ने भापरो सोंव में रैवणी सीमा देवई"

"सीवां उलाधण री मोघजो भादत कोनी" गुलाब बी तडक'र बोली

"ओ पछे काई बकै ही ?"

"भाप अरोगो भन्नदाता, गुस्से नै भळगो धरो, मोघजो सीर अरोगो"

"म्है नी खावूँ, म्है...हूँ भूखी सूय सकूँ । भूख सूँ मरा कोनी ।"

"म्है पगा पङूँ भन्नदाता ? कसूर बिसरावो । थाळ अरोगो ।"

पूनम, गुलाब रै हाथ मांय सूँ सोगरी खोस'र खावण लागी । गुलाब पचदारी पाछी भेलो कर, बांधी । कान्द री पुळी पूनम नै भिलाप वा खुद बी सोगरी खावण लागी । साण्डां रै मूण्डानी पाली घर दियो ।

रात, भाभे सूँ उतरण लागी । अन्धारी, पग पसारण लागी । दोन्वू साण्डां रै बिच्चै गुलाब री राली ढाळोजी । पूनम, खुदरी साण्ड रै पच्छम पासे, राली नांख सूयग्यो । पूनम नै जद चेतो भायो, चन्दरमा भाभे सूँ मुळकण लागी । वो गुलाब नै नींद सूँ जगाई । साण्डां नै पाली चराय, पल्लांण रा कसणा काठा किया । रालिया परोट पाछी ठिकासैसर बांधी । एक हाकळ करता ई साण्ड ऊमो ब्हो । लारली टांगा छोदी कर, मूती री धार छोडी । मीगणा किया अर पावण्डा भागै बधाय । मीठो, मदरो बायरियो गावण लागी । नींद री गैळा मनवारां लागी । पूनम भलाप छेड़ियो अर मस्त ब्है गावण लागी ।

"चाल चकोरी, चन्दरमा रै देस ।

ओ संसारी लोक निकामो,

करे दोबड़ा भेस ।

जुगत जोड़णी, भांग-सोड़णी,

पग पग पीड़ कळेस ।

रोई ज्यूँ रीत जीवण मे,

बतूळ्या हरमेस ।

चाल चकोरी.....

हुड़ी...हुड़ी...हवै...हुरैर...हुरैर~"

(१२)

पोगयतां री गरदनां आवण वाळं रै सांमी भुकणी । यासीन मैमूद नांव री
घो आदमी फौज रै खुफिया मेकमे री मुखियो हो । सुलतान रै सांमी भुकनं, वो
'आदाब भजे' कियो । पडूतर मे सुलतान वो माथे श्रेष्ठ निजर फंकी घर बीज ई पल,
वीरी निजर तलवार री सूठ सूं रमती खुद री आंगळियां माथे जा पूगी ।

यासीन मैमूद कंवणी सारू कियो "सुलतान आलमपनाह ! म्हे भाटिया नगर
व्हे आयो हू । अठे सूं दक्खण-पच्छिम मे तकरीवन सो मील माथे घो सुन्दर घर
मध्य नगर बसियोड़ी है । विजयराज भाटी अठे री राजा है । राजा बडो ही बोर,
पराक्रमी, बुद्धिमान घर दयालू है । नगर में सम्पत रौ अणखूट खजानी है । कितो
बोत ई मजबूत घर मोटी है । किले री भीतां असमान सूं अडें । किले ऊपर ऊभो
आदमी चांद घर तारा हाथ सूं ई तोड़ सकें । इत्तो ऊवो तो गहड़ बी कोनी उड़
सकें । किले री अेक ई सिर-पीळ है । घर किले रै च्याहू मेर लाम्बी, गंरी घर
चवड़ी खाई खोदियोड़ी है । उठे रा मोट्यारा रा होसला बोत बुलन्द है । राजा री
फौज मे दस हजार बांका घर टणके सूं टणका सिपाई है, जका राजा रै अेक इसारे
माथे आपरा प्राण निछरावळ करदे । फौज कने बारा बरस लडें जितो जिनस जमा
है । घावाने उठे सबसूं बडी मुमकिल पांणी री व्हेला । बिना पांणी पियां भापांरा
सिपाई नी लड़ सकला । पूरे मारण में घोरा रा हंगर ऊभा है । रस्ती ऊषट्-खाबड
है । जागा-जागा भवरियां है, ज्वां मे अेक सागें दम हाथो बी हूब जावें तो फूल-पान
बी नी लादे । अठे सूं रसद पोंवावण सारू दूजो कोई मारण कोनी । या सऱी बाता
रै महेनजर अठे सूं ई पाछी मुडणी ठीक रैती घरार मोमम बी चीन बिगडियोड़ी
है । रात-दिन आंधियां चालें । रेत इत्ती उडें कं आंसियां घुरोज जावें । आंधी, आपरे
सागें मिनख छोड़ सांडां नें उड़ा ले जावें । म्हे पाछी अठे कियां पूगी हू ? ई री बराल
करण रै विचार सूं हो धडवडी छूटें । सरकी मार्यो गयो घर बाकी सब बन्दी
बणग्या है । म्हे अेकली भाग रै आयो हू ।

यां दिनां मे, जद कं घापां लोग रोजा कर रिया हां, बिनां पांणी तो मांस
लेवणी बी भारी पड़ जाती । उठे जावणो मोत रै मामा-यणां जावण रै इलाका कों
नी है । किले में अणगिणिया परकोटा है घर हरेक परकोट माथे बुरज । यां परकोटां
मे नैना-नैना निणा है ज्वां में सूं दुमण घापां नें अभीमांत देत सकें घर
घापां ऊपर पूरी निजर राख सकें जद कं घापां सारू घो बाम चीन दोरी है । घेही
हालत में घापां वार बी कियां कर सकांवा ? किले मे अेक देवी री मन्दर है । ई
मन्दर रै चुन में सारा काकिरां घर राजा री जबरदस्त पादवा है । मन्दर री लमीको

श्वामो श्री, सारी परजा नै अ्रेक सूत्र में पिरो नाखी है। सेग बी रो भरोसी करे, राजा बी रो हुकम माने। ई मिन्दर मे हसीनावां रो नाच देखती बिळिया उरफी सूं नी रेयी गयी। वो दाद दी घर भेद खुलगयी।

उठे भदना सूं भदना भदामो रो मकान सोनै-चांदी सूं भड़ियोड़ी है। सोनो किवाड़ां माथे ई माफक नक्कासी सारू काम मे लियो गयी है, जाणै वो सोनो नी पीतळ है। बेसुमार दोलत बिखरियोड़ी पड़ी है। भापा रे हमले रो सुगग उठे लाग चुकी है घर नगर रा सेग वासिन्दा आपरी सगळो दोलत राजा कने जमा करादो है। राजा पांच हजार रो अ्रेक नुंदी फौज खड़ी करली है। नगर मे भाटी राजपूत भीत बादर है। ब्रामण ऊंचा राजनीतिक घर वैश्य चालाक। सगळा अ्रेक ई घरम नै मानै।”

इत्ती देर चुपचाप सुणतो सुलतान हळकी सो खकारो कियो घर सब लोग भाटे रा व्हेग्या। मोत रे पैला रो सघाटो छायग्यो। सुलतान गरज नै बोल्थो “तूं आ कंबणी बावै के जयपाल रे जागीरदारां नै नी कोई जीत सकियो, नी जीत सकेला? जे हां, तो आ केयने तूं म्हारी तोहीन कर रेयो है। मेमूद नी कियो सूं हाग्यो है नी कियो सूं हारैला। दुनिया रो कोई ताकत बी रे पाक इरादा नै भमलो जामी पैरांवण सूं नी रोक सके। सुलतान भुकावणो सीखियो है, भुकावणो नी, मारणो सीखियो है, मरणो नी, जीतणो सीखियो है, हाग्यो नी। खुदाबन्द मर्ज पैदा ई, ई सारू कियो है के म्हे बुतपरस्ती मिटावूं घर इस्लाम रो भ्रमल करावूं। म्हे अ्रेक काफर रो इत्ती तारीफ बरदास्त नो कर सकूं। जे आइन्दा सूं थारी जवान कोई काफर रे हक मे खुली तो जवान खिचवा लूंला।”

सुलतान सोनै रो सांकळ सूं लटकते घटे माथे चांदी रे बलियोडे डंडे रो चोट करी घर गुलाम हाजिर व्हेगा, सेग दिसावां सूं जाणै कोई खुलजा समसम रा जादूगर रो डण्डी घूमग्यो व्हे। मेनापति नै बुलावण रो हुकम हुयी। भलउत्बी, सुलतान रो गुस्ती देखने उरग्यो पण सुलतान बी रे डर नै ताडग्यो। वो आपरो अ्रेक हाथ बी रो गरदन रे सारे कर, बी रो बीटलीदार जुलफा मे आंगळिया सूं कांगसी, करणो सरू करदी। उत्बी रे गालां सूं लोई टपकणी सरू व्हेगे, सुलतान अ्रेक हळकी सीक चूंटियो भरियो हो।

सेनापति रे घातां ई बिना बी रे मामो जीयां ई सुलतान हुकम दियो “आगलो जुम्मेरात सूं पैला भाटिया नगद माथे सुलतान रो भण्डो फेरावणो लाजिमी है। उठेरा बुत तोड़ने मसीत चुणदी जावै। जुम्मे रो नमाज उठे ई भदा कर, रोजा खोलिया जासी।” सेनापति बोले, बी पैला ई सुलतान थोड़ी जोर देयर बोल्थो “म्हारे हुकम रो हर कीमत माथे तामील व्हे। फजर सूं पैला-कूच करी, फौजां भागै बधावो।”

सेनापति इस्तदुवा की 'हुज़र जहांपनाह ! वाराह, लंगा घर बूटा बी भाटियां रै खिलाफ इमदाद करण री कोल कियो है । हुकम है तो अक दिन बांरो बाट देखली जाय ?"

मुलतान उणी लेंज मे बोल्थो "नी.....वांन खबर कर दी कैं वे सीधा भाटिया नगर पौच जावै । म्है फजर में ई कूच कर दूला । घबै था लोग जावौ, म्है भाराम करूला । उतबी रै इलाया संग लोग खिसक्या । मुलतान उतबी री जुल्फां सू रमण लाग्यो ।

(१३)

"कुरजा"

"कुण हरू ? की भौई ?

"तू तो रेंगी कवारी"

"तू पछै कुणसी परणीज जाती ?"

"भरे, हूँ तो खाण्डे सू केरा खा लेसूँ, पण मुसकल भौई ताम्रजी । घणी चाव करती ।"

"भर तो कुण मो साकी जलम भर री भौई ? घणा सूँ घणा दस दिन, मीनी दो मीना "

"हाँ, साकी तो उमर भर री कोनी, पण कीं भरोसी ? मां नी करे....."

"बन्द कर मूण्डी । राण्ड रै बाकें मे मिरचां घतू म्यारळी....."

"हाँ, ताम्रजी राणी जुग जुग जीवै । पण जाणै क्यूँ म्हैने रै रै ने लखावै कैं—।"

"कैं, की ? बोले क्यूँ नी ? चुप क्यांन रहेगी ?"

"म्हैने लागे कैं हमकें ई साकें री कोई भन्त कोनी"

"क्यूँ ?"

"बस यूँ ई लखावै । मांय सूँ जीव जाणै क्यांन ई रहे रैयो ई पयो"

"घाऊ दादो ! यूँ की करे तूँ ? तेने मोमजी सुख सवावे कोनी ?"

"म्है तो त्यारळी सीगन, साचै मन सूँ चावूँ कैं राणी तेने डोल-याळी रै समचे केरा साय ले जावै, घर म्है नाचू त्यारळी बिया मे"

"हरू !"

"बाई ?"

"तूँ म्यारळी साची सई भौई ?"

"वा तो म्है हूँ ई, कोई दूजी राण्ड ताम्रजें मांमै मूण्डी छोजै तो जीम

कतरलू”

“तू केत जाइस हमें ?”

“देख, म्यारळी अक मामू श्रीई पूंगळ में, पण दो बरसां सूं वो दिसावर मे ई बस ई । सुणी श्रीई, कोई नुंवी मामी रो स्यापो घातियो पो । म्यारळी हमें कोई ठिकाणी कोनी । सोचूं, म्हे बी देवी रै चरणा चढ़ जावूं, पण.....”

“पण की ?”

“पण, सिरदारां रो मरजी भागै तो अक पावण्डो बी कोनी धर सकू”

“सिरदार काई तेनें मोल लायाई के घर मे घाती श्रीई सो अँड़ी बी वई पई ।”

“तू सांच सुणी चावै काई ?”

“भूठ बोलणी सूं काई मिळैली तेने ?”

“जावण द्यै, को करसो सुणनै? म्यारळी पीड़ मने ई भुगतणी श्रीई ।”

“म्यारळी सौगन घतू”

“कुरजां ! सौगन मत घत म्यारळी भैण । देख, म्हे तै सूं कद कोई बात छिपाई ?”

“सांपड़तै लुकावैई पई घर फेरू पूछै कद लुकाई ?”

“भेनें भा मोमज नैड़ी”

कुरजां, हरू रै नजीक गई । हरू बी रै कान कने भूण्डो ले जाय, हवळं सूं सारी बात बतावो । सुणैर कुरजां रो आहवां अचम्बै में फाटोड़ी रेगो । दोग्गू जवान हो । हरू, उमर मे कुरजा सूं दो बरस छोटी हो, पण संसार नै परखण मे चार बरस मोटी ।

“इव काई व्हेसी ?” कुरजां भूण्डो उतार बोली ।

“व्हेणी की श्रीई ? सिरदारां सूं तो छानो कोनी । खाण्डे सूं फेरा सवाप देसी । बाई व्ही तो रेत रो पोटली, घर बीरो बिहयो तो सिरदारा रा पूत तो सिरदार ई रेसी । घर म्हे ? म्हे अखण्ड कंवारी ।”

“हरू !”

“काई ?”

“जोव मे भावै के सारा बन्वणा तुड़ाय कठे ई ना'स जावूं ।”

“वो सूं काई व्हेसी ?”

“मुगती”

“मुगती ना'सण में कं मरण में कोनी सई । मुगती जीवण मे, भूभण में श्रीई”

“म्यारळी हीमत म्हां मे कोनी”

"घोई तूं कद घजमाई ?"

"म्यारळी घजमावणो बी कोनी"

"काळी घोई तूं । ससार तो यूं ई चालतो रंसो । भेर तो घाज वात्रो घोई । म्है राणें सू मिळ'र सेंग ठोक कर देसूं । साकळें पैला तूं अर राणो दोन्यू अये सूं पुरव कांनो...."

"पण...."

"पण वण काई कोनी, जीवण री जुगाड़ करणी हवें तो हीमत सूं काम लेणी पडसी ।"

"म्हैनं डर लागई ?"

"की रो"

"घरकां रो, ग्वाड़ रो, जात रो अर राजरो" ।

"अ सेंग फूड़ा बन्धण ओई"

"तूं बी तो बन्धण मे बन्धियोड़ी ओई", तूं वयूं नी....?"

"मोघजं कोई राणो कोनी, म्यारळी मायें रीकण बाळी"

"तूं म्यारळी सागें...."

"म्है तज्ज माई त्यारळी सूं । की समझें बी कोनी । म्हैनं कांरो डर ओई अर कुण मां रो मोटी म्यारळी सारू सेज सजाय उडीकई पयो ?"

फुरजां रें नेणां सूं दळक दळक घांसूं दुळण लागा । हरू घापरें पल्लें सूं वां घांसुवां नै पूछ'र बी नै काळजें सूं भीडली । दोन्यू बिच्चें सन्नाटो बोलण लागी । वे दोन्यू चुप ही । साकळें रूख मायें अेक जोडी कम ही । अेक तीतरी, जमी मायें चुपचाप पडी ही । हाडा, बी री भांल्यां निकाळली । गुलरिया बी रें मांस रा लोया तोडण मे लागोडा हा । गळियां गप्पा मारें ही ।

×

×

×

"बापू !

"हो बेटा !

"बापू म्यारळी तलवार मनै सूंयो । हूं दुसपण रें दळ नै बाढ नै...."

"तूं घजूं नैनी ओई बेटा ! त्यारळी बाप अर भाळ रें बेठां त्यारळी बारी घजूं केत सूं भावें ? तूं त्यारळी मां सागें, म'मा रें गांव जा ओय घणा मेळा मगरिया भरें । तरिया तरिया रा रामतिवां सूं रमण अर खावण पोवण री उमर ओई त्यारळी"

"नो बापू ! मनै मेळा मगरिया कोनी रूचें । म्है तो घारें मागें, रण मे रमवा जायू"

“तू बोली बोली बैठे कै हूँ चिएगट री”

बीस बरसा रो मोथ्यार मोटोहो भाई बड़की दियो ।

“देखी भीई म्यारळी तलवार ?”

“हाँ, हाँ देखी बादर खाँ री तलवार । याँन का डोका सूँ तो गुलरिया बी बोनी बीवई”

“बगती !”

“हाँ, बापू”

“तू वयूँ अळूँ भै ई छोटे भाई सूँ : ई में काई समझ भीई ? तू तलवारां सारी की सारी बारें निकालली कै नी ?”

“हाँ बापू ! अडतीस भीई ।”

“हवे, जा ! छोद लवार री निर्ग कर, धार दिरावां परी”

“जावूँ बापू ।” बगती छोटे भाई काँनी दाँत काढ़र बारें निसरग्यो । छोटीड़ी हूँ हूँ कर रोवण हूँ ।

“भरे, तूँ सेर व्हेर रोवे ?”

“वो भाऊ म्यारळी.....”

“भाऊ तो काली भीई, तूँ काई बी रँ सरखी भीई ?”

“हूँ तो छोटी ई बी सूँ, जदै ई ती मन धमकाव ई पयो ।”

“पाछी भावण द्यै बगते नै, म्है बी री सागई स्पाँन बिगाड़ूँ”

“बापू !”

“हाँ बेटा !”

“म्है चालसूँ ताँमजँ सागै, साकै मे”

“हवँ, बेटा ! जावो भवै सूँ रँवो । साकळई चालसां भापां सागई”

साकळँ भागणी सूनी-सूनी लखावण लागी । सूवंटो, सींवा लांग, सूरज री भागवाँणी मे पूरब दिस री जातरा मे निकळग्यो । मोड़ी ऊपर अँक उल्लू गुरणी बोले हो ।

×

×

×

“जमोदा !”

“की कँवै ई पई, रमवा ई नी द्यै”

“बेटी, भासण बरतनां री की कियो ?”

“मोडका सा बारें काढ़ मेलिया भीई भर बाकी सेग बाई में बूर दिया ।”

“गैणा-नगदी ?”

“गैणा-नगदी तो गड़ में जमा करावण सारू भइजी नै सूँप दिया । मारण

री खरची सारू पांच सौ टीकलिपां राकी पो ।”

‘गावां रो काई कियो ?’

“गावा तो संग सागै लेणा पड़सी । चार पोटां बांधी पो ।”

‘साकळई सूरज निकळिया पैला सिधावणी भोंई, सोणरा हमार ई सेकलै”

“हवे, बाई, सेकू । पण भइजी घर भाऊ ?”

“वां नै अथ ई रेणी पड़सी”

“क्यू ?”

“वा नै कुण जादण देसी ? काली”

“पण क्यू ?”

“मोठ्यार साकी करिस”

“की रे सारू ?”

“राज री रुखाळी सारू”

“की रो राज ?”

“राज, राजा रो”

“राजा आपां नै दुवकर पछई को घातै नी”

“सो स, छोरी । तांमजै जवान घणी बधगो दीस ?”

“हूँ, तो, राजा आपां नै की न्याल करई पयो, वो तो मैलां मे मोजा मांण
अर वो री रुखाळी सारू आपणा भइजी अर भाऊ मरे । ओ कुण सो न्याव छोंई ?”

“छोरी ! घणी लपरचटी व्हेगी, को संको ई कोनी, राज में बात पौची तो
गरदन उतार लेइस”

“म्है की सू बीवां करां कोनी । मलै ई गरदन उतार लै”

“जसोदा ! तू सफा बावळी तो नी व्हेगी ?”

“बावळी म्है नी बाई, बावळी भोंई येथ रो राजा । लुगाई, टावर जावी
पा, अर मइद यां सारू कट जावो । लुगाया पछै काई या बापखावणां री स्थापो
घातण सारू जावै ?”

मुसै मूँ भरियोडो अमको, हमे जसोदा रो चोटी पकड़'र, अेक चिएणट धरी ।
अर लातां, घूसो मूँ वो नै अघमरी करदी ।

“राण्ड कदको कां वां करई । बापखावणी मूँ बोलो-बोली नी रंइजै ।”

“नो व्है चुप, तूँ मलै ई मार काड”

“जसडी ! तूँ क्यूं मरणी चावै मोमजै हापां ?”

“तूँ म्यारळं भइजी अर भाऊ नै मरावणी चावै । मां कै'री? तूँ डाकण
घोंई ।”

“घणा जवचप मन कर कुतड़ी ! हमार नागो कर डाम चेड़ देसूँ राण्ड रे”
“म्है त्पारळो धाकळ सूँ पछैई को बीवां नी ।”

साकळै, सलाखां सूँ सखोलियोडा, गोरी चामडी रा छुंतरकां नै, कीड़ियां
घोस'र ले जावती । सूनी डेरी सांव-सांव गूँजण लागी । मूजड़ी बळगी, बदाण
बरतीजगी । सेर भूतां रो रैवास बणग्यो ।

✱

(१४)

रात रे तीजे पोर पुनम, गुलाब कने पाछो पूग्यो ।

“गुलाब !”

प्रांखियां मसळती थकी गुलाब फाळस मोड़'र ऊठी ।

“पधारभ्या”

“त्पारळै भाग रो वच'र घायो हों”

“क्यूँ ?”

“सारी भेद खुलग्यो ।”

“पछै ?”

“पछै की ? च्याह येर सूँ घिरभ्यो ।”

“सफा कूड़ा” गुलाब मूण्डो बिगाड़'र बोली ।

“तेने म्यारळो मरोसी नी घावेई ?”

“यां ऊपर मरोसी करने कोई क्यूँ आफत गळै मे लेवे ?”

“क्यूँ ?”

“भाया बड़ा तोजसी ? बापड़े सेनापति नै....”

“वो घणो हुसियार भोंई”

“यां सूँ कम”

“कमान ?”

“साचो बात तो यां म्हैने बताई व्हो, तो बीं नै बतावी”

“ल्याव त्पारळो हाप देख'र साच साच बतावूँ”

“म्यारळो हाप कांई देखसो ? सिकल देख'र नी बत्ता सकीई ?”

“सिकल सूँ तो लीमड़ी सायें ई पई ।”

“म्है चालाक सागूँ पई ?”

“नी तर की ?”

“खुद तो कागलै सूँ बी ढाया लागी ई पया ।”

“वो तो मैं हूँ।” छोड़, इधे कान खोल'र सुणलै। “त्यारळी मोमजें सानें मेळ नी बैठै। साकळें ई तू पाछी वळजा।”

“क्यूं?”

“क्यूं की? म्है कैतू जी सु”

“पण म्यारळी काई कसूर भोंई? खुद ई तो म्हैने इया सवा री खोटी-नरी सुणावो घर ऊपर सू दबावोई”

“म्है, कै रै बगा दबावू?”

“हूँ तो, पछेई की जावां नी”

“काली व्हेगी काई?”

“काला तो भाप व्हियोड़ा दीसीई पया, दारू घणो घी काढ़ियो दीसे।”

“तू क्यूं बळें?”

“बळें म्यारळी सोक राण्ड, म्है कै रै बगा बळू?”

“तो पछे भाग घेय सू”

“म्है याने काई दुख देखें?”

“दुख तो म्है देखेंई पयो। सुण।”

“मोमजें की नी सुणणो”

“ममखरी छोड़, काम री बात सुण घर समझ”

“हुकम करो”

“फेरू मोबड़ी खड़ा'र बात करई”

“भगवान सिकल ई भैठी घड़ी भोंई”

“भगवान तो खासी भली फुरसत सू घड़ी भोंई पण.....”

“पण काई?”

“भाग में पासवानी लिखदी”

“यां तोजती हौ, छुड़ादयो या जूण, बिया करली म्हासू”

“घणो मूण्डें सावगी सू”

“बाकरी भरू रावळें”

“समी पाकरी। देण! म्है सारो बिगल समझावूँ सो याद रात'र राब में पूगतो करणी भोंई”

“म्है मेरुनो जावूँ मेय यू?”

“मेरुली नी तो की रो मां रो मोटी घेय बेंठी भोंई निकामी?”

“क्यूं? भाव?”

“दरलु पड़ती, सेनापति रा भाग तोलणो भोंई, घर मांय की बाणी पड़ती”

“मेरु तो मोमजा तोल्वा भाव?”

“स्वारळा भाग तो यूँई घणा उमदा भौई”

“पोमावणी ती कोई पां सूं सीखै”

“सीखलै । काम भासी”

“म्है साव घेरली कयान जासूं ? नी नी करतां सो कोस रो भौं व्हेसी ।”

“कयूं खावै कोई तैने ?”

“मारै जी नै मल्लो मारै, मल्ले नै कुण ?”

“जद टाळमटोळ कयूं करै ?”

“गैलां सूं भणजाण हूं ।”

“अथ सूं दो कोस ऊपरां पेमजी रो तळो भौई । भोय सूं दो मानखा स्वारळै
सागै चालसी । मारण मे सैग गावां नै सावचेत किया । धी गैलै ई फौजां भागै
वघैली ।”

“भापरै सारू राव नै कांई अरज करूं” ?

“अरज कांई परचावणी करणी भौई ।”

“कांई ?”

“हाँ, परचावणी करणी भौई कै घणी बोदो मिनख हो, बोखो शिष्यो कै...”

गुलाब, पूनम रै मूण्डे भागै हाथ दे'र बी रो बोलणी बन्द कर दियो ।

“सौगन भौई भागै अक बी भाखर बोलग्या तो”

“पूनम मून धारली ।

“हाँ, की बिगत भौई ?”

पूनम चुप ।

“बेलो कोनी कांई ? कांई कैता ?”

पूनम फेरूं चुप रैयो । हमे गुलाब, पूनम री पासळियां में भांगळी सू गिल-
गिलिया करण लागो भर खुद हँसण लागी पण पूनम नी हँसियो, नी बोलियो । जद गुलाब
दोन्यूँ हाथो सूं पूनम रै गिलगिलिया करण लागो तो धो, धौं रा हाथ पकड़ लिया ।
गुलाब हवै कोई दाव चलतो नी देख, जोभ मूण्डे सूं धारे काढ़ी भर पूनम रै गालां
ऊपर फेरण लागी । पूनम धौं रा दोन्यू हाथ छोड़'र हळकी सी धक्की दियो ।

“त्यों माफ करो, बोल जावो । सौगन भौई पांनै...”

“देख ! म्है अक'र सौगन मानली, घड़ी घड़ी सौगनां नी भात्रू'ला ।”

“रित्ताणां व्हेप्पा ।

“हूं”

“की किया राजी व्ही ?”

“म्है हमें राजी नी व्हेलै रो”

“उमर भर रुख्योड़ा ई रंसी ?”

“उमर भर री मोमजै काई वारती ओई त्यारळें सूं ?”

“भापरें नी व्हेली, मोमजै ती ओई”

“तामजी तूं जांणी”

“खैर आप सनेसा देवी ”

“सनेसा ?”

“हूं, ओक राव खातर अर बीजी महाराणी सा सारू”

“महाराणी सा सारू तूं आप, अर राव सारू सनेसी मेळूं सी सावळ पूगती नी कियो ती त्यारळा फूटा ।”

“मोमजा ती खैर फूटोड़ा ई हुंता”

पूनम सुलतान रें फौज री विगत, सुलतान रा इरादा, हमली करण री सगती, मोरचा जमवण रा पेंतरा, गैली अर दूजी छोटी मोटी बातां जकी बी जाण सक्थी वे सारी गुलाब नै समझायदी ।

“राव, आप बाबत पूछें ती ?”

“म्है सुलतान सूं पैला पूगूंली”

“जे नी पूग सकी....”

“ती समझलै कै पूनम दुसमण रें हाथां मार्यो गयो”

गुलाब थोड़ी ताल सारू गळगळी व्हेणी । वीं री काळजी थक थक करण लागी, वी रें मन में आई कै ओक’र बिछड्यां पैलां पूनम वी नै सीनै सूं बिपायलै । पण पूनम तो भाटे री बण्योड़ी हो, गुलाब रें नैणां री कोर ऊपर आसूं भा’र रुक्या । वा, भर्योड़ा नैणां सूं पूनम रें सांमो जोयो । पूनम आपरी मूण्डो दूजी दिसा में फोर लियो । गुलाब वी रें पगारें हाथ लगाय खुदरें नैणां ऊपर लगाया । पूनम सारें खिसक्यो । गुलाब वी रें पगां हेटली रज लेय ओढ़णी रें पत्ते बांधली । दो साण्डां आंमी सांमो दिसावां में भदीठणी । कुम्भळायोड़ी गुलाब, बायरियें सूं बिखरण लागी ।

✱

(१५)

‘ दगो दे गयो बैरी,
चोमासै रो चाकर,
काळ कमर मे दी हळवांणी,
जीवण व्हेग्यो माखर, रे मई
दगो दे गयो बैरी ।’

अक मइद अर अक लुगाई मस्ती मे नाच रेंया है । पास बैठा दो भिनस डोल,
तासक बजा रेंया है अर टेर भेलो टेर मिळाय भूम-भूम रेंगा रेंया है, ‘दगो दे गयो
बैरी ।’

‘क्यूँ रै किसना ! पूँख कित्ता घांगळ ऊँची घायी ?’ चिलम री अक मुट्ट
खँचता घका, ठाकर जेतसी भाटो पूछियो ।

‘अक बैत दो घांगळ ।’

‘हां मई, घागै केवो दूवो ।’

मइद—किसन, बिखेरघा दाणां दोय,

माटो मे कद मोती होय ?

लुगाई—सीचै रात दिवस कर हेत,

तो मोनी उपजावै रेत ।

‘जीवती री जोड़ी’ भीड़ मांय सून अक मोट्यार बोल्यो । लुगायो, घूँघटा में
खीं-खी कर जोर सून हँसी । डोलक बाळी जोर सून घायी दी । डोल-घाळी री भरणाटो
हुमें तेज व्हेगो । नाचण बाळा बी हुमें पूरा मस्ती में घायभ्या । लुगाई घणी तरीर नै
तोड़-मरोड़ नै कदेई नीची भुके कदेई लारै । मइद बी नै घामण सारू घागै बघै पण
वा हाथ रा फिटकारा देय ऊँची फिर जावै । भीड़ मांय सून लुगायां जोर सून हँसै ।

‘जस्सू !’

‘हां, बापू ।’

‘मावो’

‘तामजै गोडें हेटें ईं तो पड़ी घाई डबली ।’

‘पांणी अर तासळो ला बेटा ।’

जस्सू पांणी री अक घांगळ अर अक तासळी लाय घाय रै कने मेन
दियो । ठाकर, घमल री अक मोटी हळी घी तासळें में मेन, पांणी मांय घमल
गळावण लागा । नाच हुमें खतम व्हे चुकी हो । मइद-लुगाई घेकानें पूठ केर पतीनी
सुखावण सारू गाभा रै पत्तां सून हवा करता हा ।

ठाकर, हयाळी मांय चुल्ली भर, गांव रा सबसू वूडा अर रिस्तें में काका, खेगार रे होटां ऊपर हयाळी ऊंधाई, काका खेगार अक खंकारे रे सभचें सबड्डइ करता, हयाळी खाली करदी ।

‘सीरी, नी आई ?’

‘हमकें मावो की फोरी आई काका, ल्यो केरुं अळीवां’ या के’र ठाकर जेतसी, अमल री अक डळी तासळें में घडियो ।

‘हां काका हमे ।’

वूडी, सबड्डकी लगाय अक खंकारी कियो अर भूँछां माये हाय फेरियो ।

‘सीरी आई काका ?’

‘हां, भई जेतसी, हमकें जोर री सीरी आई, तूं कजूस घणी रहेगी रे ।’

ठाकर जेतसी बारी-बारी सून सेंगां नें अमल रे पाणी रा सबड्डका लगवाया । खुद चार-पांच सबड्डका लिया अर अक किरची जीभ माये घरली । अमल री अक मोटी डळी, मांगणयारां सारु मेली ।

‘बयू रे रैवत ! काळी साण्ड री कोई बावड्ड आई कै नी ?’

‘आशूण रा गांव रा बावड्ड आई । मांगणयार उठाई ।’

‘मांगणयार, उठाईगिरी कद सून सारु की ?’

‘असली मांगणयार ती मांग नें ई खावे अन्नदाता । हां, हमें सगां घणा सफंगा रहेया । भाटियां री भूँछां मे हाय घातण री मसखरी वे ई किया करे ।’ दोलक बजावण वाळी बोल्या ।

‘मसखरी री मजी चसायां ई सरसी, कै दिया ताम्रजा सिरदारं नें’ जेतसी पोड़ी गुस्ती भर बोल्या ।

‘हुकम अन्नदाता, पूगती कर देसू ।’

‘काई ? बात, कै साण्ड ?’

‘हुकम, बात ।’

‘हवे । कोई बात केवो ।’

‘कैवां बात अटापट री

या सटपट री, या सटपट री

या टिटपिट री, या कटकट री

अहे कैवां बात सटापट री ।’

नाथ केरुं सारु रहेयो । ठाकर विनक में ऊंघवा साया ।

ठाकर जेतसी रे गांव माये ई ओ गांव गयोड़ी हे । गांव में कोई पचाम घर हे जहां में भूँ घणहरा ती भाटी राजपुतां रा ई हे । संग पांचमी पोड़ी में जाय अक

बाप रा व्हे । दो-चार घर मेघवाळां रा, अक बाणिये रो, अर अक घर बांमण रो है । यां नै घर मलेई कौ, है सैग रा सैग भूपा । ठाकरा रो रावळी, भाटां सू चुणियोड़ी है । बाकी सैग घर माटी अर गोबर सू नीपियोड़ा है । भाषा घर, ऊपर सू उघाड़ा, भाषां माथे लकड़ी रो ताण्ड ।

लारले सालां बिरखा ठीक-ठीक व्हेगी । बिरखा ती ई वरस बी व्ही, पण सांतरी नो । हाँ, तळाई में छः मइनां रो पांणी जरूर मरग्यो । खडीना में बाजरी रा दाणां बिबेरिया । पूंख अक वेत दो आंगळ ऊंचा भाषा है । यूं सिन्ध इलाकी नजीक है ई वास्ते घणी दौराई कोनी । गांव रा घणकरा घर, मवेसी पाळै । पांच सौ साण्ड, दो सौ ऊँट, सौ गायां, तीन सौ भेड़-बकरियां है, गांव रो कुल सम्पत । सैग अपणायत सू रैवै । काळ पड़ै जद छागां ले'र दूजी तळाई माथे डेरा लगावै । यू गांव रा भिनख चार-छः मइना ई गांव मे रैवै, जदतक तळाई रो तूण्डो नी निकळे ।

अंधारे पख रो साठम ही । चन्दरमां भजूं उगी नी हो । ई वास्ते मसालां चेतन करीजी । मांगण्यार सच्छेदार बातां सुणाय-सुणाय सर्वां नै राजी करण मे लापोड़ा हा । टाबर-टीगर, नीद मे सुपग्या । थोडी ठण्ड बी पडण लागी । धोरा रो घूड़, हमै हेम ज्यूं ठण्डो व्हेगी ही । ठाकर जेतसी, भूती करण सःरू थोड़ा पावण्डा भाग बधाया अर वां नै जीवणी दिसा सू कोचरी रो उवाज सुणोजी । ठाकर थोड़ा रुकग्या । पगरखी खोल सुगन फोरघा । दो पग बी आग नी बधाया अर डावी कांती सू अक काळी नाग फूँफाड़ी करती सामो दीस्यो । ठाकर रै काळजै में भी बँठग्यो । आज सिध्या पैला बी अक उल्लू वा रै रावळी ऊपर खाली बोल्यो ही । ठाकर बिना भूती कियां ई पाछा मुड़ग्या । अमल रो अक मोटी डळो बाकै में घत'र वे पाछा, भीड़ मांय, आपरै आसण माथे आय बँठा अर हुकम दियो ।

‘हमै आज रो तमासो बन्द करो । सैग लोग पैला म्हारी बात सुणलो ।

ठाकर बात कंवण पैला बी दिसा में दीठ फंकी जी दिसा मे वे काळी नाग देखियो ही । पूनम उठै साण्ड नै भेकती ही । वे पूनम नै हाकळ करी ।

‘बापू ! सैगां नै अेय ई रोकलो अेक ऊण्डो बात भौई ।’

सैगां रा कान पूनम रो बात सुणण खातर सावचेत व्हेगा । लोग पाछा जमीं माथे बँठग्या । पूनम, बापू रै कान कनै मूण्डो ले जाय वां नै सारी बात बताई । लोगां नै कोई मंतब रो बात सखाई अर वे, बात सुणण सारू उतावळा व्हेगा । ठाकर पूनम रै माथे हाथ फोर लाड कियो अर बोल्यो ।

‘सुणो रे भाई सैग, ध्यान लगा'र सुणो । बोत मंतब रो बात भौई, थोड़ा सोच'र बोल्यो, ‘अरे मांगण्यारां थां जावी । हमै गांव मे खेल कोनी कराणो ।’

पूनम कानी मूण्डी कर बोल्या, 'पूनम, यां नै भेकांनी लेजा'र खानगी दे दे।' पूनम उठै सून व्होर ब्हियो। मांगण्यांरां नै हाकळ करी, 'भावी, म्पारळ पाछे भावी।'।

मांगण्यांरां री टोळी, ठाकरां नै मुजरो कियो, जै बोली घर बिहदाया।

हमै ठाकर सैगा नै हुकम दियो, वें नजीक सिरक जावें. बात बीन छानिरी धोई।

संग लोग ठाकर रै भेडै-छेडै नजीक सिरकया।

'गजनी री सुलतान, मँमूद तनोट माये भावी करण री नीत सून भावई। वो सिन्धु नदी नै पार करली धोई वर बी री लत्कर भापणै गांव सून निकळैला। भापा लोग नै साको करणी पढ़सी। सो मोट्यारां कमरां कसलो।'।

मुण्ठां ई सुगाया रै घड़बड़ लागी। संग भापरा टाकरां नै सम्भाळ वां री लाड कियो। वे थोड़ी घणी गुसपुस बी सर करदी। ठाकर थोड़ा तड़क नै बोल्या—

'चुप व्हो, सुणी बात,'

'भीड़ माय मून भेक मिनख बोल्यो, 'चुप व्हो रै, सुणी ध्यान सून।'।

'गांव मै किस्ता मोट्यार धोई?'

'बूढ़ा समेत तीन सो।' भेक उवाज भाई।

ठाकर थोड़ा कड़क'र बोल्या—

'बूढ़ां सून कांई मुतळव ? ई गांव मै कुण पांगळी धोई ? संग सार्ज सरीर रा धोई ! म्हने देखी, साठ बरसां री हूँ। पण, यां जेडा चार मोट्यारां नै भेकीं सार्य पछाड़ून। भेक वार सून चार माया काह्न। साको राजपूत री घरम धोई। संग त्यार हो के नी ?'

'भीड़ भेके सार्ग हंकारो दिवो, पण भेक मिनख ऊभो व्हे बोल्यो, 'हूँ त्यार कोनी।'।

'कयू ?'

'ई वास्तं के मोमजै, सुलतान सून कोई बैर कोनी।'।

'कोई मुतळव ? राजा री दुसमण भावां री दुसमण कोनी ?'

'राजा म्हानै कोई नांणु मुफत रा कोनी देवें। खुद री मैनत मज्जरी कर पेट मरा।'।

ठाकर थोड़ा गुस्से में भरपरा। 'राजा सून बिद्रो करण री दण्ड कांई व्हे, भा मायत तू जाणै कोनी ?'

'म्पारळ जाणणी बी कोनी, कयू के नी तो हूँ कोई चुक करी, नी मनै कोई दण्ड दे सकै,'।

'ई गांव री, गांव री घरती घर घन री मालक राजा धोई तै के त्यारळी भाप कोनी।'।

‘देखी ठाकरां, म्यारळें मूयोई वाप रै सामै जावणें रो जरुरत कोनी । धानै राजा री चाकरी करणी व्हे तो करो, म्हें मुफत मे मरण नै त्यार कोनी । राजा म्हानै न्याल कोनी करै ।’

‘हूं’ ठाकर धोड़ी देर सोच’र बोल्या, ‘म्यारळें, भेजी कम ओई नी तर म्हे तनै समभावती सारी घातां । खैर, तूं म्हासूं अकलें मे मिळजै ।’

वो मिनस ठठ’र व्हीर व्हेगी । तारै सूं लोग बी नै फिटकारा देवणां सख किया ।

ठाकर फेह’ बोल्या, ‘मुलतान री फौजां भागै बर्धई पई अर काल सिझ्या कै रातै, आपणें गांव तक पूग जासी । थां लोग तो जाणो ई हौ कै तन्नोट साह मारग, आपणें गांव व्हे नै ई ओई । आपां नै भाज रातोरात गांव खाली करणी पड़सी । खावण-पीवण री जरुरी समान, गैणां, नगदी अर काम चलाऊ गावा अर बासणां रै इलावा सस्तर सागै ले ली । भूपा नै तोड़ भांग द्यो । बासण ठीकरा अर घरबिकरी, सैग तळाई मांय फेकदी । घास नै लाय लगाय दो अर गांव नै पूगे खाली करदी । चारो, जित्तो ऊंट-साण्ड मायै लाद सकी द्यो सागै ले ली बाकी होम द्यो । साकळेंई आपां नै अथे सूं व्हीर व्हे जाणी ओई । लुगायां पैला घरै जाय नै सोगरा सैकली । मडद पैला जाय नै खड़ीना मे ढोर नै छोड़ द्यो । पाणी रा मटका अर छागळां भर, गधां मायै बांध बूंधली । कम सूं कम अेक पूरी दिन लागिस, छोटाह पूगण मे । जावो अर हडकें सूं सैग काम नकी कर द्यो ।

भीड़ चुपचाप व्हीर व्हेगी । ठाकर, अेक डळी फेह’ बाकै मे घती अर रावळें रै कोट कोनी व्हीर व्हेगा । वांरी बाया फडकण लागी, मुटियारी रै दिनां री सुध कर, वे अेक’र खुद नै मोठ्यार समझण लागी । वां री कमर सीधी, अर चाल तेज व्हेगी ।

गांव में भडबडाट लागी । सैग लोग ठाकरां रै बतायोई काम मे हूक्या । कोई सस्तर भेळा कर रैयो है तो कोई भूंपै रा लेवड़ा उतार रैयो है । कोई घास रा मारा बांध रैयो है तो कोई कपड़ा री पोट ने सम्माल रैयो है । ढोरां नै खड़ीनां मे छोड़ दिया । ऊंट-साण्डा रै, पल्लाण कसीजणां सह बिह्या । तारै बिछावणा अर एक दो बोरा धान रा, वो री कूपी सूं ले’र पाणी री छागळ तकात ऊंट मायै बांध दी । घर रा ठीकरा अर अणूता बासणां इत्याद नै तळाई में नाखण रै पैला सब सोगा रा घड़ा पाणी सूं भर लिया । हांगरां नै धपा’र पाणी पाय दियो । झांझरतै तक सै कोई त्यार व्हेगा । खुद रै हायां सूं लोग आपरा भूंपा तोड़ ताड़’र थां रै लाय लगादी । ठाकरां रै रावळें मायै करसल बिछगी पण अेक भूंपी अंजु साबकी ऊमी हो । ठाकर उठै पूग्या ।

‘अरे केसरी ! काई मत्तो कियो ? अजू सूती ओई की, नींद में ? देख ! सारे गांव वहीर व्हेण सारू तयार ऊभो ओई, बस तयारळी उडोक ओई ।’

‘मत्तो ठीक ई ओई ठाकरसा. म्है गांव नी छोडूँ ।’

‘तो तू अकली रैइस अथे ?’

‘हाँ, वयू ? को ओई ?’

‘हरज ओई’

‘ठाकरा रै सार्गे रा दस बीस लोग बोल्या, हां, हवें’

‘हरज रै हूँ सारे कोनी’

‘देख केर सोचलै’

‘म्हें सोच समझ’र बोल्या करूँ, उधारी अकल नी जीविया करूँ’

‘आखरी चेतावणी ओई’ ठाकर थोड़ा गुस्से में भरग्या ।

‘काई कर लेसो यां मौमजी ?’

‘या तो यां गांव बाळां नै पूछ ।’

‘वे ई दस बीस लोग बोल्या, ‘म्है लोग तयारळो झूंपो बाळ देसां अर तेंनै ...’
चात काट’र केसरी बोल्यो, ‘मार देसो । लो, बाळो म्यारळो झूंपो, मार द्यो म्है नै ।’ सा के’र वो ठाकरा रै नजीक बघियो ।

पूनम आगै बघ’र केसरी चा भीटा झाल लिया । दो मिनख आगै बघ’र बी रै झूंपे रै लाय लगादो । केसरी हठ नी छोड्यो ।

ठाकर हुकम दियो, ‘ई रा हाथ पग बांध द्यो घर म्यारळो साण्ड री पूछ सूं बांध’र गुड़ा द्यो ।’ हाजरिया हुकम री मरपाई करी । पूरब में रातड़ कूटण सूं पैला, जेतसो गांव री लस्कर दबलण दिसा कांती धावो कर दियो ।

ठाकर जेतसो री सांड सबसूँ लारै हो । सबसूँ आगै हो, जेतसो रै बंटे पूनम री । पूनम सार्गे, बीं री साण्ड आगै सवार हो पूनम री अकलप्रेक बेन ‘मूमल’ ।

‘मूमल’ जैडो नांव हो वेडो ई रूप । ऊमर सूं जोध जवान ।

पूनम साण्ड रै अकल तड़ी लगाय, मोरो नै घोड़ी सीक खाच दी घर हिरणी नाव री साण्ड हवा सूं बाता करणो सर र्ही । पूनम वो री चाल निरख’र मुगध रहेगो ।

वो मस्ती में गावण लागी—

‘हिरणी म्हांजी नांव,

करूँ, सो कोसां पर विसराम ।

बिद्वै पढ़िया मनई री म्है दरद मिटावूँ,

पागो बण, सात्रग नै हेरूँ.....मिळण करावूँ,

मत मारी, ओ पूनम राजा,
 म्हे छूँ नार कंवारी,
 पलकां री सेजां साजन म्हे,
 तांमजै काज सवारी, म्हे चम्पापुर री नारी.....'

मूमल रो हुसकणी सुण'र पूनम रो गावणी बन्द रहेगी ।

'बाई, तूँ की रोवई पई ?'

मूमल फेर' हुसका भरए लागो । नैणां रा घाँसूँ पूछ'र वा बोली, 'भाऊ !'

'है'

'चम्पा रा की हवाळ छोई ?'

'कुण चम्पा ?'

'भाऊ, म्यारळै सूँ छांनी नो छोई, पलकां री सेज कुण संवारे, मूँ जाणूँ'
 पूनम रो मुख सांवळो पड़्यो । हिरणी री चाल ढोली पड़गी ।

'बाई, छोड़ बीं री बात । साकै सूँ निवड़.....'

'भाऊ ! साकै री बाट कुण जोइत ?'

'क्यूँ ?'

'काई घापरणै गांव सूँ हो'र सुलतान री फीजां बीं रै गाव नी पूगैली ?'

'भरे हां, गैली तो बी गांव सूँ ई छोई'

'काई बीं गाव बाळा नै सुलतान रै घावण री बावड़ छोई ?'

'सायत नी '

'पछै सोचलै भाऊ, चम्पा तांमजी नी, सुलतान री मलका बणेली ?'

'चम्पा ! पूनम घोड़ी कड़क नै बोल्पो ।

'हां भाऊ, बी गांव सूँ घापरणी दुसमणी छोई, परा चम्पा सूँ नी । दूबै, चम्पा
 तो तांमजै हाथ सूँ गो ।'

'बाई !'

'है'

'कोई उपाव करो '

'हमै कोई उपाव नी छोई भाऊ, चम्पा री भाग चम्पा की, घर म्यारळो
 भाग म्यारळै कनै'

'त्यारलै की छोई बीं गांव में ?'

'भोयजी तो भोजाई छोई बीं गांव में'

'मूमल, कोई उपाव बता बेण, म्हे कासी म्हे जाणूँ'

‘कालो तो आसो मुनक व्हेई पयो, बापू वो काला व्हे रैया भोंई, मुलतान वो कालो व्हे रैया भोंई, राव वो काला व्हेई.....’

‘काई मुतळब तांमजी?’

‘मुतळब काई, लडाई जरूर व्हे सकं, पण हरेक माणस लडाई मे पडं ई, ओ जरूरी नी’

‘तांमजी इसारी केसर कांती तो नी भोंई?’

‘.....’

‘है, समझियो।’

पूनम घुड़की ताळ सोचती रयी। पछे चिपटी बजा’र मुळकियो। वो साण्ड नै पाछी ऊन्वी दिसा मे फोरी। बापू कने पूग’र बोल्थो ‘बापू! आ हिरणी भज मोमजा हाडका भांग मेलिया ई। है, दो राता सूं सूयी कोनी। अजू की दिन भोंई। परमे तो राव कने पूगणी जरूरी भोंई। तांमजी सोड भली भोंईबदळा परी’।

‘तू परबारी तनोट जा मोमजी कानी सूं।’

‘नी बापू! है समचार तो भेज दीन्हा पा, अर अजू तो घणा दिन लगसो सुलतान नै, ओष तनोट पूगण में। है पूग जाइस बिळियासर’

‘जद तांमजी मरजी, मोमजी कांती सूं.....’

‘नी बापू, है मर जावां भलेई, पण राव री इया री पालण करण सूं कोनी चुकां’।

दोन्यू बाप बेटा साण्ड भेकी।

केसर री हालत बौत खराब व्हे चुकी ही। वी रै सरीर में जागा जागा रगड़ां आयगी ही अर लोई छकण लागगी। वीं रा गाबा भीर भीर व्हेगा हा अर वां में भुरट ऊपर भुरट चिपियोडा हा। मूण्डी भुरटां सूं छुलगी ही।

आपरी साण्ड बदळता यकां ठाकर जेतसी, केसरी नै खुदरी साण्ड री पूछ सूं खोल’र हिरणी रै बांधण सारु भागें बधिया तो पूनम बोल्थो—

‘बापू ई नै बन्ध्यो रैवण दयो। हिरणी रै पूछ रै बाल कोनी, रास फिसळ जाइस’

ठाकर अक निजर केसरी कांती नाखी। वो प्रथमरियो व्हे चुकी ही।

‘नचीता व्हे जावो बापू’ पूनम सात लगार साण्ड नै उठाई। ठाकर हिरणी रै घेठ मार, मोरी खाची अर पलक फरकतां ई हिरणी काफल रै ठेठ भागें जाय पूगी। थोड़ी सो भागें ई अक धोरी ही। काफलो धोरां ऊपर चढ चुकी ही। ठाकर

कंवळ पुजा

धोरी पार कर, कद का भागै नीसर चुका हा । धूड रै उडणै सून दो तीन साण्डा रै भागै पाछै कीं निजर नी आवती । पूनम साण्ड नै हुकम दियो 'भै भै, भै'

साण्ड नीचै बैठगी । मूमल री आख्या रोवणै रै कारणै सूझगी ही । पूनम साण्ड सून नीचै उतर, केसरी रा बन्धणा खोल्या, वीं रा गाबा पलटायी अर घावां ऊपर पाटिया बांध दी । वो छगळ सून पांणी ले'र बी री आख्यां धोई, अर पाणी पायो । हमै केसरी नै कीं चेतो आयो । वीं री सरीर घुरी तगिया सू दूटती ही, पूनम बी नै सा'गी दे'र उठायो तो वो पाछी जमी माथें लुडकग्यो । पूनम आपरें खावां ऊपर उंचाय, केसरी नै साण्ड रै पल्लाण ऊपर सुबायो अर दोन्यू भाई-बैण पाळा बालणा सरू व्हेगा ।

मूमल, भाई नै काठो पकड़'र चिपगी । पूनम, बी रै माथें हाथ फोरियो अर नैणां रा आसून पूछ'र धीजो दियो ।

सिझ्या घीमै घीमै पग पसारण लागी । लोग थाक चुका हा । घोटेरू अजूं घाठ-दस कोस री भौं माथें हो । अक घोरै रै ओले पड़ाव शिथी । साण्ड नै भेकाय, पूनम सीधो बाप कनै पूगी । ठाकरां री मंसा रातोरात घोटेरू पूगण री ही । पण सेंग लोग थाक चुका हा । अंधारी रात ही, ई वास्तै चांद निकळिया पैला भागै बघण में लाचारगी ही । पण ठाकरां रै अगुती उतावळ ही । पूनम नै आगलै मारग रा सैनाण बताय, ठाकर बाकें में अक मोटी डळी अमल री मेली, एक डळी हिरणी नै चटायी अर पूनम नै भोळावण देय, घोटेरू सारू पलायण कर दियो ।

बापू नै ब्हीर कर, पूनम पूरें काफलै रै लोगां नै सम्भाळती, खुदरी साण्ड कनै पूगी । मूमल, केसरी री माथो दबावती ही । ई रै सामे ई बुचकारा बी लेवती जावती । अघारें मे पूनम बुचकारा सुणिया तो बी रै सरीर में अक झरणाटो चालग्यो, वो नजीक आयो तो बंन री गोद मे केसरी री माथो हो, वीं नै घोड़ी घोड़ी चेतो हो । पूनम नै देख, वो मूमल री गोदो सून ऊठण लागो पण पाछी पड़ग्यो । पूनम मूण्डो ऊंधो फोर ऊमग्यो ।

'म्है घोड़ी ताळ सून पाछी आबून भाई, तू डरें तो नी ?'

'कोया जावोई ?'

'म्है, बंणी ई पाछी आ जासून'

'नी भाऊ' मूमल केसरी रै माथे हेटे तकियो देय, खुद नै मुगत करी, पूनम

कनै आय ऊमो'

'हां, हमें फुरमावो, केत जावण रो विचार भोई ? चप्पा रें गांव ?'

'हवै'

'नी आप मोथ नी जावो'

‘बयू’

‘म्है दुसमण रें गांव आपनै नी जावण द्यूं ।’

‘मोघजै कनै तलवार भौई ।’

‘नी भाऊ, तलवार म्यान में ई पड़ी रें जावै घर माया कट जाया करे ।’

‘मोघजै हाथ मे बिलिया कोनी’

‘नी, पण म्है जाणूँ कै आपरो औथ जावणी ठीक कोनी’

‘म्है तो वां लोगां नै सावचेत करण री खातर जावूँई पयो ।’

‘अेक दुसमण री दूजो दुसमण भरोसी करलै, आ कठण बात भौई ।’

‘तो पछै म्है काँई करू ?’

‘आप ? म्है कैवूँ ज्यूँ करो ।’

‘आप वैठो, हूँ जावाई’

‘नी, तूँ केत...’

‘वैला आपां, टुकर तोड़लां पछै आगरी बात सोचांला ।’

‘भाऊ ! टुकर आप तोडो, म्है वाली ।’

‘नी मूमल, ठैरजा, सुण बात’

‘काँई ?’

‘वैठ’

‘हमै केसरी बी ऊठ बैठी । वो पांणी मांग्यो । पूनम, वो नै छागळ उंवाय पाणी पायो अर दो सोगरां ऊरर गुळ री डळो घर कान्दा धर केसरी नै आपरै हाथां सूं कवा देवणा सरू किया । मूमल मन में मुळरण लागी ।

केसरी घर मूमल, साण्ड माथे सवार व्हे, जा चुका हा । पूनम, धोरां माथे पसरग्यो । चप्पा रें सुपना री मैक सूं बी रें सरीर में मरती वापरगी । पाकेलो भेटण सारू, नींद आय पूगी । काफले मांय सूं अेक सतरा बरस री छोरी ‘पूनमी’ आ’र पूनम रें पसवाडै पडगी । सुपनां मे उलझयोडो पूनम, चप्पा री बोटी पकड’र आपरै कांनो खेची । पूनमी री सरीर, काठो भरयो सुगन सूं भगपूर, चप्पा री मैक मे पुळ मिळग्यो । ठण्ड सूं सुकड़ीअती पूनमी, पूनम री धोतियो सांच भोडू लियो । पणी भौ रें टाण्डै री पकाण घर सुपनां रें रस में भीजियोडो पूनम, नंग खोल, सुपनां सू बिद्यो करण री हासत मे नी हो । हवळै हवळै रेंगु गळण लागी । घोरा री मुधमनो पयरणी गिचण लागी । पूनमी रें होटां आय, घडियोडो तिसकारो, बापरै सार्ग उडग्यो । उत्तर दिम री सूनियाड मे दसण में हो, काफनै री पड़ाव । की तिमकारा, बी हूँकारा, बी बुचकारा, पूनमी रें कानां ऊरर रळक्रिया । गिरतस री नैनो सी सत्तार ई हो पूनमी री साच । घर दिन री साच, जीवण भर री हांत ।

(१६)

दो पीर रात दल चुकी ही । तारां री चमक मन्दी पडणी । धोरां री ईं सुनिपाड में फीज रै जमघट रै कारण जोरदार हाका हू मचियोडी ही । हजारों मसालों अके साथे चेतन व्हेणी । ऊँट, बल्लद, घोडा इत्याद सजधज नै कतारां में ऊभा हा । सिपाई, बर्दियां पैरियोडा तयार ऊभा हा । ऊँटगाडियां साथे समान लादीजण लागी । पांच मोल लाम्बी फीज री काफली, तन्नोंट साथे चढ़ाई करण सारू कूच करण नै तयार खड्यो ही । हजारों भिण्डा हवा मे फेरावण लागी । नगारा, सहनाई, तुरई, डोल इत्याद री भेली गूँज सू धोरा धरती रा कान गूँजणा सरू व्हेगा । सुलतान मैमूद गजनवी री फीजां कूच कियो तो ग्रँडो लखायो कै करोडां री गिणती मे घरती रा सारा मानसा, अक जागा भेला व्हेगा है । पग-पग डर लागती कै ईं टोडो फाकें सूं योगां री घरती री कवळी कायाक ठई छुल नी जावै । धोरां रै ऊबड़-खाबड़ टोला ऊपर चढ़ती अर उतरती फीज, घोड़ा ऊँट, इत्याद सूं जमी घूजती व्हे ज्यूं लखावती । जाणै सेपनाग नीचें सूं आपरी फुण हिला रैयो है । नगारा निसाणां समचें सिपाइयां री कदमताळ सूं धरती घूजती । जाणै अक पूरी सैर, साथे उचायां, घरती आभे कानो घूम रैयो है । तम्बू, बर्दियां रसद, सस्तर अर पांणी उचायां गाडियां री कतारां आगे आगे सूं ग्रँडो लखावती जाणै बाजणिया बिच्छुवां री फीज कूच कर दियो है ।

हरावळ मे उप प्रधान सेनापति अर मैमूद कासिम खुफिया सरदार, हवियारां सूं लैस, फूटरा अर सजियोडा, काठी कसियोडा घोडां साथे सवार हा । वारें ठीक लारें पाच सौ घोडा अर चार सौ ऊँट, दस दम री कतार मे चाल रैया हा । यां रै लारें चार हजार पैदल सिपाई हा, ज्यां रै लारें दो सौ घोडा अर सौ ऊँटा री अक काफली ही । यां रै पिछाडी पाच सौ अर पैदल सिपाई हा, ज्यां रै लारें सुलतान मैमूद गजनवी री इरानी घोड़ी ही । ओ घोड़ी बौत ईं मजबूत पगां वाळी, सावण रै पाणी भरिया काळा बादळां दाई काळें रंग री ही । घोड़े री सिणगार देखण जोग हो । वो रै पट्टां साथे रंग बिरंगी कोरणी कियोडी ही । कमर साथे खूबसूरत अर कीमती रेशमी कोरियां सूं कसनै काठी बांधियोडी ही । ईं घोड़े साथे मैमूद री रूप, डोल-डोल, तेज चोगणी निजर आवती । सुलतान रै घोड़े रै डावें हाथ कानो भल चरबी री ऊँट अर जीवणै हाथ कानो प्रधान सेनापति री ऊँट, घोड़े सूं कदम मिळावता आगे बघ रैया हा । सुलतान रै आगे लारें अर आखती पाखती वो रा अङ्गुल्लाळ, नागो तलवारां हाथां मे निदोडा अर घोडां साथे सवार हा । सुलतान री अक हाथ वो री भादत मुजब तलवार री मूँठ साथे ही, वीरा नैण फते रा सुपनां मे उळभियोडा हा ।

छरुडो घर छचर-गधां माथें तावण पीवण री सामान लादियोडी हो ।
 घोरां मे ठण्डी रातां मे सहनाई रा सुर, हिडदे में टीस उठा देवता । ठण्डी हवा रा
 भोला, नीन्द री न्यूती लियां काना में फुसर फुसर करता । पण मैमूद गजनवी
 प्रकृति सूं बी बिडण री सामरथ राकतो । बीं माथें बायरें रें भोलां री, की असर नो
 व्हियो । फौजां, तारां री दिसा पकड़, बरोबर भागें बढ़ती रेंयो । घर मजलां, धर कूचा,
 कोस, दो, चार, दस, बीस कोस पूगतां, रात री उमर खूटण लागी । बायरी पैना सूं
 तीज भर ठण्डी व्हेग्यो । सरीर मे थड़ थड़ो छुडावण वाळा बायरिये रा तरकस सगीर
 नै बींधण साव उतावला हा । फौजियां रा नीन्दाळका नैण, भपकियां खावणा सरू
 व्हिया । ईं घड़ी में जीवण री सबसूं मोटी सुख, बायरें री थपकियां लाय, नीन्द लेवण
 में ईं लखावती । रात भर जागियोडा सिपाइयां नै लखायो कं नीन्द बी जीवण री
 बी मन्तर है जकी जागरण री जैर सतार नै मिनल नै ताजा खिलिया फूलां री
 ताजगी भर सोरम बगसें । सोवण बरणी रेत री गोदी में दो छिन सोवण री सुख,
 उठावण री हैस, रें रें नै कळपावती पण सुलतान रें गुस्से री याद भार्ता ईं सिपाइया
 रा सरीर सीतळ पड़ जावता ।

×

×

×

मुट्ठी सूं रिगसती रेत दाई, रळियावणी रात विलुमगी । पूरब दिसा में
 पसरियोडा घोरां लारें सूं रातळ फूटण लागी । धूड री सोवणी रूप, सिपाइयां री
 निजरा मे चितरांम दाईं मडग्यो । पूरब दिसा सूं हिरणां री भुण्ड फदाकां लगावती
 घोरा ऊपर भाय, अक छिन्न थमग्यो । बन्धणा तुडायोडें बळद दाईं ओ भुण्ड पवनवेग
 सूं घोरां रे समदर मे ह्वग्यो । हिरणां री पीछी करता, किरणा रा तीर, घोरा-घरती
 में जागा जागा बिखरग्या । रेत रा वण, सूरज री किरणा में पलपलाट करण लागी ।
 ज्यूं ज्यू फौजा भांगें बघती, सूरज, घोरां री मोटी छोड, खुलें भर मुगत असमान मे
 ऊपर चढण लागती । बायरें री वंग हमें घीमो पड़ चुकी हो । घीमे घीमे सूरज री
 भट्टी तपण लागी । लाखां मोलां दूर सूं घरती माथें पूगणवाले ईं तांप सूं
 रजकण तपग्या । ठण्डी बायरियो लू बणग्यो । सरीर पसीने सूं लथपथ व्हेगा । घोडा
 भागली टांगां ऊंचो कर, हिण हिणावण लागी । पैदल सिपाइया री पगयाळिया में
 रेत री गरमी, जरबां नै बीन्ध नै, ठेठ मांय पूगगी । नीचें सूं रेत री गरमी भर ऊपर
 लाय बरसावती तावडी भर खोरा चेढ़ती सी लू, कमर नै बीन्धती सूरज री किरणां ।
 हलक सूखण लागी, थूक री खजानी खूटण लागी, कंठ बिपण लागग्या, लू रें सागें
 रेत बी उडण लागगी । बतुळियां भर भांधियां सूं भांधियां घूरीजण लागी ।
 घरतीकण नैणां में गुस'र घोबा मारण लागी । सिपाईं भांख्यां मसळ मसळ काया
 व्हेग्या । भठो देहो री चमडी काळी पड़ण लागी भर सरीर तवें दाईं तपग्यो । माथा
 चकरावण लागी ।

सरीर रै मांयली अर बारसी गरमी पांणी रो छड़काव मार्गे पण रोजां रा दिन हा, रोजां में दिन रै उजास में थूक गिटणो वो हराम हो सो पांणी पीवण रो ती सवाल बी पैदा नी व्हेतो। आंधियां अर घूडे सूं गैलो साफ निजर नी आवतो। फौज रो कतारां बिखरणी। फौज रो कवायद रो हिसाब न तो कोई राक सकतो न फुसरसत हो, सैंग भाप भापरो जीव बचावण रो धुन मे हा। गरमी अर तिरस रो मार सूं तकरीबन पांच सो सिपाई, पचास घोड़ा अर दस बळद चक्कर लाय घरती माथे गुडग्या। बँहोसी रो हालत मे वे धरती माथे पड़ियोड़ा सिसकता रैया। भागादौड़ी मे लागोड़ी फौज यांनै कुचळणी कै आंधी सूं उडतो घूडो यां नै दूरग्यो, ईंरो वेरो ईं कोनी। मारग मे तळा घणकरा तो सूछा ईं पड्या हा। की खाडा खोचरां मे कादो ही। जिनवरां माथे तो रोजां रो दण्ड हो कोनी। घोड़ा, बळद इत्याद ईं कादे ने ईं चाटग्या। ईं सूं बारा पेट फूलग्या अर उठे ईं पसरनै दम तोड़ चुका हा। पण सुलतान रा होसलापस्त नी ब्ह्या। वो लगे लग भागे बधतो रैया।

मारग मे केई भाटी सिरदारां रो नैनी टोळिया रो सुलतान रै सिपायां सूं भिडन्त व्हेगी पण ईं लस्कर नै रोकण रो सामरथ वा मे कठे सूं आती? ईं हलकी सी भिडन्त में वो हलके ईं हाथ पांच सो भाटी सिरदार श्रीजी शरण व्हेगा। अक हजार भाटी सिरदारां रो अक टोळी चुतराई सूं काम लियो। सुलतान रो फौज मे लावण पीवण रै समान रो बाळद लारै ही। अ लोग उपरबाड़े रै मारग सूं घोरां रो ओली लै लारै पाँचग्या अर लावण पीवण रो समान लूट लियो। यारे अचाणचक हमलै सूं रसद रा रुखाला घबरायग्या। बळद भी मरग्या अर वे ऊग्या पगा पाछा भागण लाग। तकरीबन पांच हजार फौजियां रै मईनै भर रा जिनस अ भाटी सिरदार गाडिया समेत लूट नै लेयग्या अर गाडियां मे बळदा रो जागा ऊंट जोत दिया। ईं भात सुलतान रो फौज मे घणा ईं बेला बीत्या।

लस्कर रो चाल धीमी पड़गी ही पण सूरज रो जातरा अक गत सूं बंधि-योड़ी हो। माथे मण्डियोडो सूरज, पच्छम कांनी डिंगण लागो अर बीरो ताप मोळो पड़ण लागो। सुलतान रो फौज मे पाछो सांस आयो। हमे घूडो बी साफ व्हेण लागग्यो, मारग साफ सूझण लागी। पच्छम दिस मे घोरां रा कंगूरा गो दाई बाकी फाड़ नै पसरियोड़ा हा। सूरज हमे ईं गो रै बाके मे घुसण सारु साचार हो ज्यूं वो नै चढतै नै रोकण मे कोई सिमरथ कोनी वो भात ईं बीं नै ढलण सूं रोकण रो सामरथ बी ईं घरती रै रैवासिया मे तो कोनी।

रोजा खोलण सारु अजान व्ही। सुलतान फौज रा सैंग सिपाइया सार्गे

नमोज पड़ी। पण सुलतान रो हुकम हो कै चांद निकळता ई कूच कर दियो जावै
अर फजर पैला ई किले रो घेरो घाल दियो जावै। मुरगै रो पंती बाग रै समचै
ई हमलो बोलण रो सख्त हुकम हुयो। सुलतान फोज रा सँग मोटा अफसरां नै
बुलाय वासू सलाह मशवरी कियो अर फोज नै दो हिस्सा मे बांट दी। बाराह
अर लगां रो फौजां अजूंलग पूगी कोनी ही पण वानै उत्तर दिस सूं हपलो
बोलण रो हुकम हो। खुद रो फौज नै वो पूरब अर दक्खण सूं घागै बधण रो
हुकम दियो। बी नै दोलत लूटणी ही, इस्लाम फैलावणी हो अर बुतपरस्ती नै
नैस्तोनामूद करणी ही। बुतां नै तीड़ियां सूं बी नै जघनत नसीब व्हे सकती ही।
ईं सारू वो पाखण्डी पुजारिया नै कतल करनै वारी जाया इमाम मुकर करतो।

राजा रो तयारी अर होललो भापण सारू खुफिया छोड दिया गया।
सुलतान खुद बो लड़ाई मे जुझणी चावतो ईं वास्ती वो आ जाणण सारू उतावळो
हो कै बीरी भिडन्त राव विजयराज सूं कठै व्हे सकै? सेनापति अर अफसरां
आप आपरो दुकड़ियां सम्भाळली, सितरंज रा प्यादा सुलतान रै हुकम रो
तामोल में तबसीम व्हेगा।

✱

(१७)

भीठा सुपनां में रैण बीतयो। पैला चम्पा सूं रंगरेळिया, पछै सुलतान मैमूद
नै मारण रो मोद, राव सूं सिरोपाव अर जागीर लेवण सूं ले'र चम्पा सूं ब्याव
तक रो जातरा, ढळनी रात रो मुनो, अक पोर में पूरी करली। पूनम रो जद धाव
खुली तो सामी पूनमी पांणी रो छागळ अर कचेवी लियां हाजरी में ऊमी ही।

“रात भर काई सुपनां सूं रमता रैयाई कंवर सा?”

पूनम, अक'र पूनमी रो घालियां में घालियां गडा'र हँसियो। पूनमी लाज
सूं नैण भुका लिया। पूनम, बीं रो हाथ झान, खुदरे नैड़ी खांचली।

“तेंने वशां कर ठा पड़ो कै म्हे रात भर मुनता सूं रमती रैणो?”

“मे वो आपरा नैण ई भेद सोलै कंवरां”

“तो तूं नैणां रो भासा रा घासर मोळलै काई?”

“हवै, पोड़ी बीत बिदिया सोखी भीई”

“कै सूं?”

“आप सूं ई”

“म्हासूं?”

“हो”

कंवळ पूजा

“कदी ?”

“रातै”

“रातै ?”

“हूं।” पूनमी केहं लजायगी। पोणो सूं भांतियो अर मूण्डो धो'र पूनम कुरली कियो। सोगरै माथे पड़िये धो रै लुन्दे अर गुळ री डळी सूं कवी भर, पूनमी, पूनम रै सांमी कियो।

“लिरावी”

‘पूनम, पूनमी रो हाथ पकड़'र खुदरो मूण्डो बी रै हाथ रै नजीक लेयगयो अर बाकौ फाड़'र बी री भांगळिया बाकै में दबाली।

“छोड़ी, ऊं हूं”

“है, है।

“नो, कोई देख लेसी तो.....”

“कुण देखई ?”

“मोमजा नैण”

“ढांपलै”

“ढांप लिया”

“हमें कुण देखई ?”

“भाप”

“ले, म्है बी नैण ढांपलूं। हमें कुण देखे ? कुण दोसे ?”

“भाप”

“पूनमी !”

“हूं”

“तूं बीत मूण्डे लागई”

भटकी देय पूनमी हाथ छुड़ायो अर ऊभो रहेगी।

“माफ करो अन्नदाता”

“रुसगी ?”

“हूं”

“क्यू ?”

“ते सुपनां सूं ई रीझ्या करो, पिरतख नै तो दुत्कारा ई दयो”

पूनम थोड़ी सोच मे पड़गयो, केहं थोड़ी मसखरो करतोड़ी बोल्यो—

“म्है तांमजै जैड़ी काळी, बळूटी नै सुपनां में सम्भावूं ? पिरतख बी कोनी सबाई।”

हमें पूनमी सोगी उठै ई नाख'र बहोर वहेण लागी । पूनम थोड़ी ऊँची धेर पाछी बी रो हाथ झाल लियो ।

“पूनमी ! ”

“की ओई ?” पूनमी थोड़े मान अर अकड़ रै साग बोली ।

“साण्ड ओई, हिरणो री जोड री ?”

ओई ती, पण वा दुजें अमवार सू कोनी दूबै”

महै डाब लेसू ”

“पूनमी थोड़ेई ओई के हाथ झाल'र मीठी बातों मे भरमा लेती”

‘महै, तेनै कद भरमाई ?

“रातै”

“रातै ?”

“भूली”

“भूठा तै”

“बात खोलनै बता”

“बात तो बगत आयां आपै ई खुल जासी ।

“मौअजो सुपनी सुगंली ती ईसके सू बल'र राख व्हे जासी”

“बल'र घांरा बैरी-दुसमी, बल'र म्हाारी सौक । हां काई करी साण्ड नै ? सुपनै मे गंवाई परी ?”

“सुपनै मे नी, जागती मे”

“अरे”

‘देख मसखरी बन्द करां अर मुतलब री बात करां”

“मसखरी महै करू के आप? कदका छोडो होई पया”

“आज ऊठजां ई तांअजो मूण्डो देखो भैस री”

“देखो कंवर सा ! थोड़ी सोच समझ'र बोलजो । हमके भैस कैयो ती ठीक नी रैसी”

“की ठीक नी रैसी ?”

“पूनमी हमें पग सू फटकारी देय चार पावण्डा ऊँधी फिरगी । पूनम री मालती अजू उतरी कोनी । वो पाछे सू जा'र यों री थोटी पकड़सी । पूनमी रोवण जेडो तिरल करो अर पूनम यों री थोटी पाछी छोड, यों री हाथ झाल लियो ।

“अरेक बात री बचन दे ।”

“बाई ?”

“पैला वचन दे”

“पैला बात बतावो”

“पैला वचन. पछे बतासू ।”

“वचन पछे देसू”

“नी पैला वचन दे”

“दियो”

“की सूँ ई नी कंवँ ।”

“नी”

“देख पूनमी ! मूमल घर केसरी रातें ग्रैव सूँ निकळ चुका भौई पाछा नी पाया; मनै, वानै सोधणी भौई नी तर बापू मनै काचें नै खा जासी घर वानै दोन्यू नै जीवता नी छोड़सी” भेरुँर ती पूनमी रा होस उठग्या, पण हूँ ई छिन वा सम्भळ'र बोली—

“साण्ड भौई भेरुँर हिरणी सूँ बी तेज गत री पण ………”

“पण की ?”

“मनै साथे चालणी पड़सी”

वयूँ ?

भसैधे भसवार नै कोनी चढ़ावै”

“म्है, सूँत नै पादरी कर लेसू”

“भेरुँर लक्खण साण्ड लेजावण रा नी भौई”

तो पछे, म्है की करूँ ?”

“करणी की भौई ? मारग जाणी ? भेरुँर सूँ केय, किय दित्त मे जायणी भौई ?”

“उतराद”

“उतराद मे ती जेतसी गाँव भौई”

“नी, भोष नी, पूरव काँनी”

“पूरव मे तो मारवाड़ भौई”

“भरे इबै तेने की बताऊँ !”

“मनै बापड़ी नै मती बतावो, पण साण्ड भिरणी भौई”,

भेरुँर नै सूँप, जीव जोखम मे नी नाछूँ”

“म्है पाळी ई चलयो जासूँ”

“पाळी, कित्त बरसा सूँ पाछी भावण री विचार भौई ?”

“पाछी वयूँ भासूँ ?”

“जद साण्ड कोनी, भलाई में साण्ड गमासूँ”

“भेरुँर बात भौई”

“ अक अक करतां जाणुं कित्ती बातां कैयदी अर अजुं अक मत्तो कौनी ? ”

“ कोई असवार कौनी जकी छोडर पाछो आ सकै ? ”

“ छोड सकै, पण पाछो आणो हाथ कौनी ”

“ वयू ? ”

“ मोअजै मनरी म्हे महाराणी होंईं थां कुण व्हो पूछण वाळा ? ”

“ म्हे, म्हे, हां म्हे कोई कौनी पूछण वाळो पण हमें बैंग कर पण ”

“ फेरू पण अथ बंठा रंवो काफलै नै धीरो पार करण द्यो पलक भपतां चकमी दे'र पाछो आवू ”

पूनम नै दो पल दो दिनां सून बी लाम्बी अर मोटा लागण लागी वीरी खासी मस्ती रो नसो हमें सोच, फिकर मे बदलग्यो, मूमल अर केसरी रो सोच, चम्पा, रो सोच बापू रै गुस्सै रो सोच, सुलतान नै मारण रो अर जागीर पांवण रो सुपनी कूडो पड़तो लखायो ।

काफली कूच कर दीठ सून ओभल व्हे चुकी ही । अक साण्ड बी रै नजीक आय ऊभी व्हेगी ।

वीं पर वंठीड़ो मड़द ऊपर सून हाथ नीचें कियो अर पूनम नै हाथ मिळावण रो सीनी करी । पूनम अकरो ती अचम्बै सून वीं मरद कांती देखण लागी पण दूजे ई छिन बिनां सोच्यां बिचार्यां हाथ मे हाथ म्हायो अर साण्ड रै पेट माथे अक पग माण्ड, हव करतो साण्ड ऊपर सवार व्हेगी बी रै, ठीक तरिया दीठण सून पैला ई साण्ड लडण लागी । पूनम नै लखायो साच्याणी थो ईं साण्ड नै नो दाब सकती । साण्ड रो तेज चाल सून जोर रा हिचका लागण लागी, पूनम भागै बेंठै असवार रै खांपां ऊपर सून हाथ म्हाया लेय बी रै दोग्यु हाथां रै बीचें सून निकाल, बी रो खाक सून थोड़ा बारै काट लिपा । बी असवार रै पतलें पेट ऊपर सून हाथ जद फिसळण लागी तो बी हाथां नै ऊंचा ले आयी, बीरी घांगळियां मे अक भगणाटो चालग्यो । असवार, पूनम रै हाथां नै आपरी खाक मे काठा दबा लिपा । पूनम रो भायो असवार रै खांपें ऊपर टिकयो, असवार भूण्डो नीचो कर पूनम रो घांगळियां रो मुचकारी लिपी अर माथे ऊपर लै फेंटें नै थोडो ऊंचो लेय आपरा देस पूनम रै मूण्डे ऊपर रळका दिया । पूनम रो हियो पुलक उठ्यो । वेसुधी मे बी ह्वाळियां रो दाब बढ़ादी । असवार अक मिसकारी कियो अर साण्ड रो मोरी नै थोडो खाच दी, हमें पूनम असवार सून काठो चिपनै बेंठयो । बीं रो ह्वाळियां गरमास अर गिर सून भरियोडी ही । बीं रो भासर काटती साण्ड हांण लागी ।

‘जाणो घोंई केत मुमाफिर ?’

‘जेव ले जायें असवार’

'पागी नै पग दोसै पया तनोट कांती रा'
 'पाट नगर में, ले चालीनी मिणियारा'
 'घा हिरणी री मां जायो'
 'भूल गयो सै मनचायो'
 'बोल बणैली घजर गुलाम ?'
 'सूयो तांमजै हाथ लगाम'
 'देख चुकाजै पूरी सेग'
 'सह्या न जासो तांमजा तेग'
 'भापस री छोडां तकरार'
 'हेत करो, ले कर मनवार'
 'मनवारां मगरै चढ़सो ।'
 'लादयोडो घन कुण लेमी ?'
 'मोमजो साचो धन पूनम'
 'तेणा पढ़सी लाख जलम'
 'लाख छोड म्दै, लेवू कोड'
 'हम छोड दे माया कोड'
 'पेला मोटी, हाथ जोड़'
 'कडयां जोड़ूं बन्धिया हाथ ?'
 'डोल तिहै भट घाली बाघ'
 'हाथां में पढ़िया खीरा'
 'किण नणदी री भावज रा ?'
 'जिणरी किस्मत मे हीरा'
 'सूनो मारण, लूटे लोग'
 'याकी साण्ड चरावो फोग'

कै, भे कर, भसवार साण्ड नै भँकी । पूनम भसवार रै खांधां री सा'री
 लेम नीचै उतरियो भर बी सू' विलुमयो । मांभळ रात मे धोरां री रळियावणी रेत
 रामजियां री रमत मण्डगी । लाजां भरता बादळां तारां री पढ़दो कर लियो ।

(१८)

“तू काँई सोचै मूमल ?”

“हूँ” जाणै मूमल सुपनां रै आभै सून घरती मायै आ पड़ी ।

“मूमल”

“हूँ, ईयां मूमल, मूमल रो रट लगाता रैसी कै कोई मुतळव री बात बी करसी ?”

केसरी, मूमल रै गळें मे दोन्यु बायां घात'र बी नै काठी भीचली ।

‘छोडी’

“नी”

“म्है कैवूँ छोडी”

“रुसगी काँई ?”

“हूँ । बात ई रुसण री घाँई ?”

“वयूँ ?”

“लारै पादरा नी बँठा रै सकी तो मनै उतार द्यो, सून पाळी चाल लेसूँ ।”

केसरी चालती साण्ड सून कूद पड़्यो, “ले, हमै राजी”

मूमल भजूं आपरै मनगत मे आलुम्फियोडी ही, वा बापू रै गुस्ते री कळपणा मे डूबोड़ी हो, वा जाणती हो कै दोफार तक वा चम्पापुर मुसकिल सून पीच सकली भर उठी नै साकळी ई जद बापू बी भर केसरी नै नी देखेला तो पूनम री चमड़ी उधेड़ देसी बी रै सरीर में चाणूचक घड़पड़ी छूटगी भर जाणै कद बीरै हाथ सून मोरी खांचीजगी । साण्ड सपाट हवा सून बातें करण लागी । दो चार पांच कोस पूगा पछै बी नै चेतो आयो ।

“यां म्हासूँ साचो हेत राखी कै पूजा लफंगां दाई कोरा खुदरै मरण सारू मनै रामतियो मानोईपया”

पहतर कुण देतो ?

“बोली कोनी ? नाराज थ्येता काँई ?”

मूमल री उवाज पाछो बी रै कानां सून टकराई, हमै वा थोड़ी तारै भुकी । बी रा होख सड्यया । सारली पासो खाली हो । मूमल सारले वामे पैला हाथ फेर तसल्ली करणी चायी । पण जद जाण खाली लागी तो सारली कानो मूण्डी कर जोयो । रिन्द रोई में खुदनें भेकली देग घँकर तो वा पबरायगी । पबरायोड़ी वा साण्ड नै पाछो फोरी । हड़बड़ाट में वा दिता भूवगी । साण्ड बी पाक चुकी हो । एक बाँवळियो देत, साण्ड उठै ई रुसगी । मूमल री कासनी

भड़कण लागी। धी रै नैणां में आसू आगम्या। वा खुद माथे घणो ई गुस्सी करण लागी। नी बाबल री रैयी नी बाधिया आवणियै री। अन्धारी रात में जावै बी तो केत ? तारां री चमक बी फौरी ही। पैना तो वा सोची कै साण्ड लै जावै जेत चली जावै। पण सुलततान री फौजा रै भी सूं वीं री कालजी घेरैर फेरै जोर सूं घड़कण लागी। वीं री कण्ठ सूखग्यो, अर दांत चिपग्या। वा बेहोस व्हिथीही साण्ड माथे सूं खिरगी। बेहीसी में वा जमो माथे पड़ी पड़ी टसकण लागी। मोरी डोली व्हियां सूं साण्ड री नकेल री दबाव जाती रैयी। वा मुगत व्हेगी, अर मत्तै धोरां मे विचरण निकळगी।

अन्धारी रात मे केसरी सावचेती सूं डग भरती भूमल री पीछी करती माथे बघ रैयी ही। वो पांच छः कोस तक चालैर थाकग्यो। धी रै सरीर मे फेरूँ टीसां हालण लागी। लाचार व्हे, वो अक धीरे माथे पड़ग्यो। पड़तों ई बीरो चकाण भरी देही माथे तीन्द हमली बोल दियो। सूरज री तेज किरणों बी न चेतो करायो। वीं रै मांमे कोई सैन्धी मारग नी हो। च्पाहूँ मेर धोरा अर धूक, अर ऊपर सूं लाय बरसावती सूरज री किरणों। खुदरै भाग माथे वीं नै तरस आवण लागी। वो मनमे घणो ई पछतावो कियो पण हमें वीं सामे कोई मारग नी हो। सूरज री गरमी सूं बचण खातर वो अक धीरे री ओली छोड़ बीजै धीरे री माड लेवतो, अर बीजै सूं तीजे री। बीरो गळो सूखण लागो। सारें दिन वो धूक गिटतो रैयी। जद कण्ठ री धूक बी सूकण लागो तद वो रोवण लागो। पण नैणां री पाणी बी सूख चुकी हो, तिरस बुझावण री कोई चपाव नी देख वो सुदरी पेसाब पोखे मे भर नै पीगयो। पण तिरस रै रै नै धावो करण लागो। सेवट सूरज आगमग्यो। हमें केसर री तिरस की मोळी पड़ी। वो सुदरी, पेसाब पीवण री बात माथे सचकाणो पड़थो। वो खुदनै मोत रै हाथां सूपण साहूँ नैण मून्द लिपा अर दोन्यू हाथां सूं कण्ठ नै दबावण लागो।

‘ये ! कुण भीई तू ?’ ठोकर लगावता थकां अक मडद री कड़कती मुा केसरी माथे पड़यो।

“हूँ, केसरसिंग माटी, गांव जेतसी री”

“हूँ ! काई लेवा भायो अरे ?” वो मडद पूछयो।

“.....”

“टीकू, समझग्यो. ऊठ मोघजै सागं चाल”

“केत ?”

“हूँ री भड़की देवा”

मोम्रजो कोई भूंपो कोनी । म्है कंनुं, म्है कंसरी हूँ जेतसी रो भाटी”

“हां, हां सुण लियो, ऊठै कै हूं लात रो दो चार ।

“लात रो क्यू ठाकरा तलवार रो द्यो नी सो पावी प्राण तो नीसरै”

“प्राण तो घारा लेसा ई पण पैला घारी परख तो करलां”

“की रो डीकरो मोई तू ?”

‘अरजण सिंग रो’

“कसो जोड़ रो भूभार ?”

“हवै”

“तद तो तू मोम्रजो भाई बिहयो । काई बिली पड़्यो ? मिणियो दावतो हो”
केसरी रै नैणां सूं दो मोतो टप देता खिरम्या । वो मइद बी नै गळै सूं
लगाय लियो ।

“चाल डेरे”

केसरी अर गज दोन्यूं भेळा बैठ ब्याणू कियो अर ऊपर सूं गरम दूध पियो ।
केसरी मे पाछो नुबी सगती वापरणी । हमें बी नै मूमल री ओळू सतावण लागी ।

दो साण्डा पत्ताण कसियोड़ी तयार बैठी हो । केसरी आज पैली बार
कमर सूं तलवार लटकाई । आधी रात रै लगै टगै गज अर केसरी चम्पापुर
पौंचग्या । अघबळिया भूंपा सूं निकळती चिणगार्यां सारी कया बखाण करदी ।
समसांण जैड़ी गिन्ध सूं बांरां माथा भिन्नावण लागी । चन्द्रमा हवै उजास कर
गांव री हगीगत नै सावळ उधाडी कर दी । इया उवा अघमरिया बूढ़ा ठाडां रा
अधकिचर्या सरीर टसकता हा । जागा जागा खाडा भर मळवै रै इलावा की
खोपड़िया कटियोड़ा हाथ टांग. टाबरा रा किरचा कियोड़ा सरीर अर जिनावरा
री बदवू देवती हड्डियां रा पंजर मुलतान रा दो-चार सिपाई गाव मे अड्डं
घूमता हा । गज बां री गांटकिपां उतार, बदळी लेवण री अंलाण कियो ।
केसरी चितबगनी बहो । वो तो मूमल री ओळू में खुदरो सुभ भूल घंटी । येक
दो जागा लुगायां रा कटिया सरीरां कन पूग, वो ओळसण री कोसोस करो ।
पण गज रा अँ बोल “काला ! जवान छोरी नै कतल करै जैडा अँ गाफन नी
मोई । स्यात मूमल नै मेमूद रा सिपाई भालली मोई” वो रै काळजै नै बीन्ध
भाह्या ।”

“हीमत राक । घावां लेतां बदळी । म्है भूमन नै नी छुडाय सावूँ तो भयल
रजपूतणी री घूंगाघोड़ी नी । सीगन तप्री री, जे तांमजी मूमल नै कर्न लाय नी
ऊमो करूं तो । पण तेनै मोम्रजै कंवर्ण मे हालणी पड़सी ।”

“म्है नी जाणतो कै मेमूद भेड़ो जालम माणस मोई, डाया मिनखा नै यूँ

बरबाद करणु री वी नै काई हक ?”

“हूँ । हम बातों कम कर, जाणतो तो काई कर लेतो ?”

“म्है, वी नै इण दिस में घुसण वी नी देतो”

“हूँ, अकलै सूँ अक छोरी तो डबी नी अर लस्कर नै ढाब लेतो । जद केरुँ के जेतसी रा ठाकर डीगां हाकण मे हसियार भौई, होमत रा पोचा भौई, साव पोचा ।”

“देख गज्जू ! मने गुप्तो मत अणा”

“केसू ! भाव अकर गळै मिळजा । आज बीस बरसां पछै मने कोई ई नांव सूँ बतळावौई ।”

दोग्युँ अक दूजै सूँ गळै मिळया । अक मळवै री ओली ले'र दोग्युँ बैठया ।

“देख केसू ! ई लस्कर सूँ लड़ण री तागत नी तें मे भौई नी म्यारळी । प्रापां यां सूँ मिह भलै ई जावां, भलैई दस बीस सिपाइयां नै ठिकाणें लगादी, पण सेवट प्रापा नै मरणी नी भौई । मूमल नै मुगत कराणो भौई । अर ई काम सारू बादरी सूँ जादा हसियारी अर अकल जोइजै”

“पण”

“पण की भौई ? जे पेला बुध सूँ काम लेतो तो क्यूँ मूमल नै हाथां सूँ गमातो ? व्हो सो व्हो । हमें म्यारळी बुध अर तांमजी सुध । समझगी ?

“हवै, भाऊ समझयो”

“तो, खोल गाबा”

“गाबा ?” चमके'र केमरी भेलो व्हैगो ।

“हो मोझजा बाप, यां गाबां में तो मरणी रो ई मैतव भौई”

“पछै ?”

“पछै की ?” प्रापां मैमूद रा चार सिपायां नै मार्या कै नी ?”

“हो”

“बस तो पछै अे गाबा उतारो, वे पैरी, अर सीखलो सेध मारंणी ।”

गत्र री सूक्र अर समझावण सरूप दोग्युँ जणा मैमूद रै मर्याडा सिपाइयां रा गाबा पैर लिया । वा गाबां रै ताजो लोई लागोड़ी हो । दोग्युँ जणां तलवार सूँ खुर रं सरीर साथे दो चार जागा, खासकर ढावै हाथ, अक टांगे, कमर अर मूण्डे साथे छोटा छोटा घाव कर लिया । धूड़ में लूट'र सरीर नै धूड़ सूँ भर लियो अर सुलतान रै काफल मे भेळा मिळया । सुलतान रा सिपाई वां नै घायलां रै तम्बू में पूगाय दिया । उठे हकीम साब वारें घादां नै घोय वां साथे ओखंडी लगायदी अर पाटा बांध दिया ।

मोघजो कोई भूँपो कोनी । म्हे कंतूँ, म्हे केसरी हूँ जेतसी रो भाटी”

“हा, हाँ सुण लियो, ऊठै कै हूँ लात रो दो चार ।

“लात रो क्यूँ ठाकरा तलवार रो द्यो नी सो पावी प्राण तो नीसरै”

“प्राण तो घारा लेता ई पण पैना घारी परत तो करलाँ”

“की रो डीकरो भौई तूँ ?”

“अरजण सिग रो”

“कसो जोड़ रो भूझार ?”

“हवै”

“तद तो तूँ मोघजो भाई ब्हियो । काई बिखी पड़्यो ? निशियो दावती हो”

केसरी रै नैणा सूँ दो मोती टप देता खिरग्या । वो मड़द वो नै गळै सूँ लगाय लियो ।

“चाल डेरै”

केसरी अर गज दोन्यूँ भेळा बैठ ब्याणू कियो अर ऊपर सूँ गरम दूध पियो । केसरी मे पाछी नुकी सगती वापरगी । हमें वो नै मूमल रो भोळू सतावण लागी ।

दो साण्डा पह्लाण कसियोड़ी त्पार बैठी हो । केसरी आज पैलो चार कमर सूँ तलवार नटकाई । भावी रात रै लगै टगै गज अर केसरी चम्पापुर पोचया । अघबळिया भूँपा सूँ निकळती चिणगार्याँ सारो कथा बसाण करदी । समसाँण जेड़ी गिन्ध मूँ बाराँ माया भिन्नावण लागी । चन्दरमा हमें बजास कर गांव रो हयोगत नै साबळ उधाड़ी कर दी । ह्वा उवा अघमरिया बूढ़ा ठाडाँ रा अघकिचर्या सरीर टसकता हा । जागा जागा खाडा अर मळवे रै इलावा की खोपडियाँ कटियोड़ा हाथ टांग. टाबराँ रा किरचा कियोड़ा सरीर अर जिनाबराँ रो बढवू देवती हड्डियाँ रा पंजर मुखतान रा दो-चार सिपाई गांव मे अजूँ घूमता हा । गज बाँ रो गांटकिया उतार, बढवो लेवण रो भेलाण कियो । केसरी चितबगनी ब्हगी । वो तो मूमल रो भोळू मे खुदरी सुभ भून बैठी । अक दो जागा लुगामाँ रा कटिया सरीराँ कन पूग, वो भोळसण रो कोसीस करी । पण गज रा अँ बोल “काला ! जवान छोरी नै कतल करै जेडा अँ गफन नी भौई । स्वात मूमल नै मँमूद रा सिपाई भाललो भौई” वो रै काळजै नै बीन्ध नाह्या ।”

“हीमत राक । भापा लेसाँ बढवो । म्हे मूमल नै नी छुडाय लावूँ तो अमन रजपूतणो रो भूँगायोड़ो नी । सीगन तन्नो रो, जे ताँमजी मूमल नै कन लाय नी ऊभी करूँ तो । पण तनै मोघजै कंवळै मँ हालणी पड़मी ।”

“म्हे नी जाणती कै मँमूद भेड़ो जालम माणस भौई, बापा भिनसा नै सूँ

धरवाद करण री वीं नै काई हक ?”

“हूँ । हमे बातां कम कर, जाणतो तो काई कर लेती ?”

“म्है, वी नै इण दिस में घुसण बी नी देती”

“हूँ, अकलै सूं अक छोरी तो ढरी नी अर लस्कर नै ढाव लेती । जद केतुं के जेतसी रा ठाकर ढींगां हाकण मे हसियार औई, हीमत रा पोवा औई, साव पोवा ।”

“देख गजू ! मनै गुम्तो मत अणा”

“केसू ! आव अकर गळै मिळजा । आज बीस बरसां पछै मनै कोई ई नांव सूं बेतळायोई ।”

दोन्यूं अक हूजे सूं गळै मिळग्या । अक मळवै री ओलो ले’र दोन्यू बैठग्या ।

“देख केसू ! ई लस्कर सूं लड़ण री तामत नी तें मे औई नी म्यारळी । आषां यां सूं भिड़ भलै ई जाषां, भलैई दस बीस सिपाइयां नै ठिकाणै लगादां, पण सेवट आषां नै मरणो नी औई । मूमल नै मुगत कराणो औई । अर ई काम सारू बादरी सूं जादा हसियारी अर अकल जोइजै”

“पण”

“पण की औई ? जे पेला बुध सूं काम लेती तो क्यूं मूमल नै हाया सूं गमातो ? वही सो वही । हमें म्यारळी बुध अर तामजी सुध । समझणी ?

“हवै, भाळ समझणी”

“तो, खोल गावा”

“गावा ?” चमक’र केसरी भेलो व्हेगी ।

“हाँ मोझजा बाप, यां गावां में तो मरणै री ई मैतब औई”

“पछै ?”

“पछै की ?” आषा मैमूद रा चार सिपायां नै मार्या के नी ?”

“हाँ”

“वस तो पछै अे गावा उतारो, वे वैरो, अर सीखली संघ मारणी ।”

गज री सूझ अर समझावण सरूप दोन्यू जणा मैमूद रै मर्योड़ा सिपाइयां रा गावा पेर लिया । वा गावां रै ताजो लोई लागोड़ी हो । दोन्यू जणा तलवार सूं खुद रै सरीर मार्ये दो चार जागा, खासकर डावै हाथ, अक टाग, कमर अर मूण्डे माथे छोटा छोटा घाव कर लिया । धूड़ में सूट’र सरीर नै धूड़ सूं भर लियो अर सुलतान रै काफलै मे भेळा मिळग्या । सुलतान रा सिपाई वा नै घायलां रै तम्बू में पूगाय दिया । उठै हकीम साब वारै घावां नै घोघ वां माथे ओखंदो लगायदी अर पाटा बांध दिया ।

(१६)

'पूनमी'

"हवै"

"तू चम्पा नै देखी ?"

"देखी नी, मुणी भौई"

"की मुणी ?"

"मुणी के बौत ई भकड़ छोरी भौई, कोई घाड़ेत बी नै उढाय लेगयो, भर इवै व। काली बिहयोड़ी फिरै ।"

"काई बात करई ?"

"हूँ, साव साची बात भौई पण भापर की लेणी भौई बीं सू ?"

"म्है बी सू ब्यांव कहला"

"ब्यांव ?" पूनमी रो सूण्डी उतरगयो ।

"बयू ? बोली नी"

"हाँ करो ब्याव, हमै काली छोरियाई ब्याव करण जोग रैगी भौई"

बात रो रख बदळण सारू पूनम दूजो सवाल कियो ।

"सुलतान मैमूद रो नांव सुण्यौई ?"

"हाँ सुण्यौई, बी सू तौ ब्यांव नी करणी ?"

पूनमी थोड़ी गुस्सी भर बोली—

"ब्यांव नी बी सू लड़ाई करणी भौई भर बी रो माघी काट, राव नै भेंट करणी भौई"

"हूँ । सुलतान भौई कोई ऊन्दर रो बचियो, के ताम्रजे हाथां माघी कटासी"

"बयू ? म्है मे बळ कोनी ?"

"बळ तौ पण्यौ ई भौई कंवर सा, भजूं मौमजा हाडका भर सरीर दूखेई पयो, पण कळ कोनी"

"की मुलळव ?"

"मुतळव भौ के खुद सू दुसमण नै जीतण सारू चार 'ळ'ळा' जाइजै भेक सू पार कोनी पई"

"वे की ?"

"ल्यो । साको करवा चालया भजूं इतरी ई ग्मान कोनी"

"तौ तू समझाई, बही पसर ई पई"

"तौ मुणी । खुद सू जादा बळ वालं दुसमण नै जीतण सारू बळ रे सागे दळ, बळ भर छळ नै बी काम मे लेवणा पईई, की समझिया ?"

“तू तो बोल हिसियार निकळो”

“वा तो हूं, भौई, जद ताने भाल फोटा किया”

“तो मनै बी सिखाई”

“क्यूं ? भसमासुं वाळो दाव मोमज ऊपर ई भजमावण रो विचार भौई ?”

“तेनै की जीतू ? मनै तो मैमूद माथे वार करणो भौई”

“रजपूतां में सो ई तो भोगण भौई, सांमै पगां मोत रे मूण्डे जावई”

“की मुतळव तांमजी ?”

“मुतळव साफ भौई । केत मैमूद रो लस्कर भर केत राव रा गिणतो रा भाडेत भर धाडेत ?”

“भाटी धाडेत भर भाडैन भौई ?”

हाँ, हँवै । भर पकल होण बी । तनोट घावण रो वार उडीकै, क्यूं नी बी सूं सीवां माथे ई भिदै”

“ई सारू बोल जादा सिपाई जोइजै”

“भा ई तो म्हे कैतू ई, जद मुकाबलो करण रो पूरी सिमरथ नी ब्हे, तद दुसमण सू राजीपो कर लेणो जोइजै”

“जे दुसमण नी मानै तो”

“मानै क्यूं नी ? ई में बी रे बाप रो की जावई ? वो तो नफे मे ई भौई, बिना की गमायां बी रे हाथां कीं लागई, तो बो क्यूं नी लेवै ?”

पूनमी रो बाता सुण'र पूनम अचम्बे मे पड़ग्यो । बीं नै मन ई मन पूनमी रो अकल माथे गरब ब्हेण लागो । बी घणी ताळ सोचती रीयो । गांव खाली करण सूं ले'र मूमल भर केसगी भर खुदरी हालत रे बारै मे वो खूब सोच्यो । सगळो रो बरबादो रो कारण हो जुद्द । वो पूनमी नै जंभेडो । पूनमी बी रे पसवाडै ऊँधी पड़ी, आराम सूं सूती हो ।

“ऊठ ! तनोट रो मारग पकडां ”

“कंवर सा, म्हैने डर लागई । मोमजी कवल बस आपनै पोंचावण रो हो । ओक दिन भर ओक आधी ऊपर रेंण बीतणो भौई इवै म्हैने मोमज ठिकाणै जावण द्यो ”

“पण'तू तो पाछो जावण सूं नटतो हो”

“म्हे, की तांमजै थोरा सूं थोडो भौणो भौई ?”

“इवै करूं थोरा”

“तो करो थोरा”

“वर्षान कलं ? मान जा बहमागण”

“ऊं है सू नी मौमजा पग पकड़ो”

“पग पकड़े मौमजी बलाय” आ कंयर पूनम दीगू हाथा सू पूनमी नै ऊँचो ठठा'र साण्ड भायें बंठायदी घर खुद बी साण्ड ऊार चढ सवार रहेगी। पूनमी साण्ड रो मोरी जाए कर हीली छोड़दी। साण्ड धीरे धीरे पावण्डा भागें बघावण लागी। धीरे पार, साण्ड खुलें मैदान मे चालण लागी। कोम भर रो भौ पार करण मे खासी ताल लागी। पूनमी तो मन में मावचेत ही कं ई चाल सू बी वा दोपारी ताई नै बं गूं तनोट पूग जामी, पण पूनम रें मन मे घणी उतावळ हो। मारग मे घणा ई ऊँट सवार भावता जावता मिलिया। पण सँ कोई घावस रो मे बस जँ माताजी रो कर निवळ जाता। अक दो सवार पूनम सू सवाल जवाब किया पण पूनम रें पढ़ूतर सू वारो बंम जावती रेंगी। परभात रो पुष्ट, पूनम, तनोट रो तिरें ओळ रें सामें साण्ड भेकी।

✽

(२०)

गुलाब आई जद महाराणी रें मेल रा कपाट बन्द हा। वा खासी ताल वारें ऊभी रेंगी। राव सू मिलिया पैला वा महाराणी नै समचार देवणा चावती। सूरज अस्तमान मे निरी ऊँचो घा चुकी हो। काये व्हे'र गुलाब राव रें मेल कोनी गई पण राव ओय नी हा। पगां नै पीसती वा पाछी महाराणी रें मेल कने पूगी। गुलाब नै भावती देख, चम्पा घब करती महाराणी नै घरज करण नै दोड़ी। गुलाब रो मन उद्याळा लेवती कं बी रें भावण रो सुण महाराणी सा सांया पण भावला। पण खासी ताल व्हेगी घर चम्पा बी पाछी कोनी वळी तो बी रौ मूण्डी उत्तरायी। बी नै अड़ी लखायो जाएँ वा कोई असंख्य मुलक में आयगी है, कं जाएँ वा कोई बौत मोटी अपराध कियो है अर वो रो दण्ड भुगत'र पाछी आई है। बी नै लखायो कं बी नै कोई घर सू काढ दो है। अक छिन साहू बी नै विचार आयो कं बी नै ओय सू ई कारण काड़ी ही कं वा पाछी नी आवें पण.....

वा विचारों मे अलूभियोड़ी लारें पावण्डा धरण लागी। इतरें में कस्तूरी आयगी। वा गुलाब रो बाहुडो पकड'र बी नै जंभेड़ी घर छाती सू चिपटगी। कस्तूरी, गुलाब ने बांधा मे भरने कसली। गुलाब रें नैणा सू भाँसू दुष्टता रेंयवा। कस्तूरी बी नै पकड'र महाराणी रें मेल मे लेवगी। महाराणी पिलङ्ग भायें भापी पोढियोड़ी ही। चम्पा पग दबावती। गुलाब खुल नै पाय लागण कियो। महाराणी थोडी सी मुळकी।

“आब गुलाब ! कद आई ?”

“खासी ताल व्हेगी भायां नै तो भसदाता”

“कोई दुख-विपदा तो नो पड़ी ?”

“नी मन्नदाता । आपरी किरपा सूनं प्राणुन्द रेपी”

“वाकोड़ी व्हेला ? जा घोड़ी ताल पाराम कर, पछे मिळजे”

“आराम तो पछे वो करणीई मोंई मन्नदाता । पैला राव सूनं मिळणी जल्हरी

मोंई”

“वयू ?” राणी घोड़ी खारी निजर सूनं देखी”

“सनेसी भरज करणी मोंई मन्नदाता”

“कं रो सनेसी ?”

“पूनम सिंगजी रो मन्नदाता”

“वयू ? वो खुद केत मोंई ? जीवई कं ...?”

“व्हीर व्ही जद तक तो जीवता ई हा”

“तो पूनमे सूनं पूनमसिंग जी व्हेणा ।”

“नी महाराणी सा ...”

“खेर । छोड ई बात नै, तैने काल अेष सूनं मोमजें पीरे जावणी मोंई, राजकवर रो घाय बण नै, समझी ?”

“हुकम मन्नदाता”

“हाँ तो काई मनेसी ल्याई ?”

“घाप सार तो की नो मन्नदाता । राव सार पूरी विगन मोंई”

“हवै, राव नै खानगी मे बताइजें, तीजें कान ठा नो पडै । बोट बदळणी ।”

“गुलाब धूक गिटणी । नैण बन्द कर गाँसुवां नै पलकां मे रमा दिया ।

“गुलाब ! कीं चुमयो काई ?”

गुलाब मूण्ढो नीची कियां माथी घुणियो । “चुभूँ जी रै म्हे चुभूँ मन्नदाता” ।

“मनै त्पारळो पूरी भरोसी मोंई”

“गुलाब ! म्हे बोट रखो व्हेणी ?”

“नी केत ?”

“खेर । तूँ जा पैला थाळी जीमलै । राव नै सनेसी देय, तीजी पीर म्हासूनं मिळजे ।

“हुकम मन्नदाता” कैर गुलाब ओथ सूनं सपाट सूनं बारै निकळणी । बारै आर वा हुमका हुमक भरीजणी । म्हावणवर रा किवाड़ बोड़, वा फाट फाट'र रोवण लागी । हमें वो रो जीव कीं हळकी बिहयो ।

गुलाब, महाराणी सागै बिया रै दायजें में आई ही । लारला दो बरसां सूनं वा मझांगणी रो खास मानेतण व्हेणी ही । महाराणी रो कोई वो बात वीं सूनं छानी नो ही । वा अकली डावडी ही जकी कै महाराणी रै मेल मे भर

कदै ई महाराणी रँ मोल में पिलंग माथे बी सूप जावती । महाराणी री इतरी मानेत्तण व्हेणुँ रँ कारण दूजी डावडिपां धी सून ईसकी बी करती घर बी री गरज बी राखती ।

आज रँ महाराणी रँ बरताव सून बी नँ अचूखँ सामँ ई घणो दुख विह्यो । पण वा आपरी पीड़ री रोवणी की रँ कनँ जाय रोवँ ? बी री बात सुणण वाली ई जद आज बी नँ चोट पोचाई है तो बी री दुखी व्हेणो सुभाविक हो । हमै भीता रँ इलावा बी री रोज सुणण वाली कोई नी हो । वा किणी नँ सुणावणी बी नी चावती । महाराणी रँ मीठे बरताव री आणुन्द बी वा इन्न उठायो । तो इवँ खारा बी बी नँ इज खावणा हा ।

वा सोचणी छोट'र खुद नँ भावी रँ हाथ मे छोटदी । वा खुदनँ सम्भाळ'र ठीक करी । बी नँ याद आयी कँ बी नँ राव नै समचार देवणा है । वा फुरती सून सिनान कर तय्यार व्हो घर राव रँ मैल कांनो द्हीर व्हेगी । राव नै विगतवार समचार देय, वा खुदरी कोटड़ी में कँद व्हेगी । तीजँ पीर किस्तूरी भाय कुण्डो खड़खड़ायो । पुनम रँ सुपनां मे उलझिगोड़ी गुलाब, छित भर सारू मुख रँ समदर मे छौळां खावती हो । कुण्डे री खड़खड़ाट सून वा यथारथ री धरती माथे छिटक पड़ी ।

मोल रँ दरवाजे माथे ऊभी महाराणी, गुलाब री बाट जोवती हो । गुलाब नँ सामी आवती देख, महाराणी किवाड़ री मोली लेय छिपगी । ज्यूँ ई गुलाब, मोल रँ मांय पग धर्यो, महाराणी पूठे सून भाय बी री आखियां मीच दी । गुलाब, थोड़ी बी बिचलियां बिना उठे ई ठैरगी । महाराणी, गुलाब री आखियां सून हाथ अलगा लेय बी नै बायां मे भरली । गुलाब ठण्डी रँयो । हार नँ महाराणी बी नँ छोड़ बी रँ सामी आयगी । महाराणी रँ इसारे ऊपर दूजी डावडिया मोल सून बारँ निकळगी । महाराणी, गुलाब री हाथ पकड़'र भागे सांच साईं घर हलकी सीक धक्की देय, बी नै पितंग माथे गुंदायदी । गुलाब पिलंग सून ऊठ'र ऊभी व्हेगी । हमै महाराणी पिलंग माथे बैठगी । गुलाब री हाथ पकड़'र वा खुदरँ नैड़ी खावण लागी पण गुलाब करही पढ़गी ।

"रुनगी ?"

"अन्नदाता सून रुतर केन जावू !"

"जद करडाण कँ री मोई"

"कीड़ी नै दीखण सामँ "जदी"....."

"म्हे साचाणी तेनी चोट पोचाई"

‘नी धनदाता । म्हे खुद ई पणो इतरगी हो’

“गुलाब । तेनै काई ठा कौ ख्यारळी वास्तें मोप्रजे काळजें मे को धोई ?”

“हुकम करो । दासी नै क्यांन याद करो ?”

“पेता बता, तूं म्यारळी सूं नाराज तो नो धोई ?”

“घापरें घातरें ई तो जीवती हूं धनदाता ।”

“परसूं रातें, राव भेष ई पोड्या हा”

“जदै ई मोन सोरम सूं भरियो धोई”

“गुलाब !”

“हुकम”

“तूं मझूं मझें सिमा नो करो ?”

“दाता । मूं ई मरण नै ख्यार धोई । हुकम दे'र तो देखो”

“गुलाब ! ख्यारळो होड कुण करे ? म्यारळी मन रो हरेक बात म्हे तंनै खुल'र को सकूं”

“घापरी किरपा धोई धनदाता”

“गुलाब । तूं नो जाणें कै तेनै धळगी करतां यकां म्यारळी काळजें रा टुकड़ा टुकड़ा म्हे रेंयाई पण काई करूं ?” जीवता रेंया तो फेरूं मिळाला नो पेर पणो जूणा फेरूं जीवणी धोई । कठें ई तो मिळालाई”

गुलाब सूं हमें नो रेंईजियो, वा महाराणी रा पग पकड़'र जमी माथें बँठगी । पगां बिचें माथी घात'र वा हुसका हुसक भरगी । महाराणी बी नै उठाय काळजें सूं भींचली । महाराणी रें नैणां सूं बी घांसू टळक्या । घोड़ी ताळ दोन्यूं सें की बिसराय ओक दूजी रो बाया मे बन्धियोड़ी रेंयो । मेल रा किवाड़ जुहया । साकळी, गुलाब राजकंवार नै लेय बहीर व्हेगी । महाराणी की गमाय दोन्ही । दिन अठोळी व्हेगी सूरज मान्दी लागण लागी ।

(२१)

"सत्तू काका ।"

"कुण लाखण भौई ?"

"हा काका"

"काई समंचार भौई रे नुवा ?"

"हमार तो भेक ई बात री वंतळ भौई काका, साकै री"

"हा, भाई, साकी तो रजपूत री घरम भौई"

"यां फिकर मत करो काका, राव नै हरावण वाळो ईं तसार मे जलमियो ई कोनी ।"

"जीवतो रे । लं, तमाकू तो पीवतो जा ।" तमोट री पुराणी भोमियो सत्तू काका, दो मोटी लडाइयां मे आपरी बादरी री छाप छोड चुको है । यां लडाइया मे ई सत्तू काका री भेक टांग भर भेक हाथ कट चुको है । मूण्डे ऊपर तलवार रे घावां रा सतरा सनाए है । कमर मे भाले री मार सू फसळियां हूटगी भर लवक पडगी । दिन भर, आयै गयै मिनख नै सत्तू काका प्रेम मू बतळावै, तमाकू भर पाणी री मनवार करै भर नुवा समचारां री जाणकारी लेवै । दूजा लोगा ज्यूं सत्तू काका मे, खुदरी बादरी री डीगां हांकण री आदत कोनी । पण वाने लारली लडाइयां री पूरी विगत मूण्डे याद है । सत्तू काका जद किणी री सोभा करण लागं तो कंजूसी कोनी बरतै । वांरी सबसू मोटी खासियत आ बी है कै वे सुणए वाळै री बी तारीफ बराबर करता रैवै । बातां रा लच्छां सू सामळो सोरे सास ऊवै कोनी । कोई कोई वाने छेई बी कै वे कीं खुद री तारीफ बी करे पण सत्तू काका भौई बिळिया हंस'र बात टाळदै, भर ऊलटी बात करण वाळै री तारीफां रा पुळ बान्ध दै । आ ई बात है कै वां रे घर रे सामे सू बैवतो कोई बी मिनख वां नै नुवा समचार देवण सू भूकै कोनी । "काका म्है सुणी भौई कै गजनी री सुलतान बीत मोटी लफ्कर ले'र धावो बोलए वाळो भौई ।

"सो तो भौई पण साच पूछै तो हमकें टवकर बरोबरी री भौई"

"हां काका । आपणी बी तय्यारी में कोई कगर नी भौई भर लोगां रे मन मे बी पूरी भरोसी भौई"

"जद ई तो भेंर बाजियां रे उपरान्त बी पणकरा सोग तमोट नै साली नो करियो"

“हाथी करने जावे वो केत ? काका !” तमाकू रो मुट्ट लगावता यकां लाखण बोल्थो ।”

“जावण नै तो यूं भौई काला, कं लुगाई टाबरा भर वूडा--ठाडां नै जुद रै मैदान सूनं अळगो ई राकणो जोइजै ।”

“सत्तू काका ! अक बात बतावो”

“पूछ”

“थां वयूं नी गिया तन्नोट छोड़र ?”

“मै केत जावूँ काला ?”

“वयूँ काका ? थांगे गांव तो घणी सांतरी भौई भर घणी घांगी भौई । घोष सुलतान री मार कोनी पड़े । भर थांगे नानाणो तो मारवाड़ मे भौई घोष वो जा सको । अरूँ कठे ई नी जाणी चावो तो तोरय जातरा रै मिस तो कठे ई जा सको ।”

“जावणी तो मै जमलोक चावूँ बीरा पण चायां सूनं तो कोडो बी धूडे में सोधियोड़ी नी लादे” । ठण्डी सांस छोड़तां यका सत्तू काका बोल्थो ।

“तो मै चालूँ काका, थोड़ा गढ मे कण्डा पोचावणा भौई”

“हां, जा बीरा”

थोड़ी ताळ रुकर सत्तू काका लाखण नै पाछो हेली कियो ।

“अरे लाखण ।”

“बाई काका ?” लाखण थोड़ी आगे निक्कल चुको हो, सनं सूनं ई बोल्थो ।

“थोड़ी नजीक आ”

लाखण थोड़े अणमणै भाव सूनं पाछो बलिथो । सत्तू काका अण्डळ मांय सूनं अक कोथली निकालर वो री मूण्डो खोलियो अर पेमली बोर री गुठली जितरी अमल री अक डळो लाखण रै हाथ मे मेलता यका बोल्थो “देख इसके असल जेडो मावो मंगावो भौई” ।

जीभ सूनं चाखर लाखण हुंकारे मे माथो हिलायो अर आंखियां चटकाई । “अरे हां, मै यूँ केतो कं वो जेतसी अरजुण बाळा भाटी सिरदारों री टोळी अजूं भाई कोनी ?”

“हां सत्तू काका, थारा समचार देण। तो मै भूवग्यो । आज ई हरकारो घोष सूनं पाछो आयो भौई । जेतसी गांव तो उभडग्यो अर रेवासिया री बावड़ कोनी । सुणी भौई कं सुलतान री फौजां, गांव नै टाळर निकळी भौई । पाणी रो कंणो भौई कं जेतसी रा सेंग बासी घोटारू कानी गया”

“जेतसी वाला भै तो लूठां घाड़ेत, जाणै हमके बयान मोड़ो करग्या । भ हा, जेतसी रो डीकरो ? वो की नांव भौई बी री.....”

"पूनम" लाखण लपकी तोड्यो "

"हा वो तो मारके रो बांकी बादर निकळियो"

"हवै, काका । वो तो झड़ाक करती वो मळ्छे री गांटकी बाढ़ती ई निन्नर आयो"

"तू हंतो घोय ?"

"हवै काका, हूँ हंतो । मौसजा तो पग घूबण लागया काका । भरी सभा में यूँ वध करणो कोई असखेल कोनी, भर वी मळ्छे री लोय नै कबूतर दाईं छुटती देख म्हैने तो ऊबकी आवण लागयो ।"

"पण ई नै ठा किया पढ़ी के ग्रेय मिन्दर मे मळ्छे घौई ?"

"काका, वो मुलतान सून धाड़ी पाड़'र पाछी घावती । धोरां मे लत्कर नै देखियो । वो घोरं री ओलो लेय छिपयो । रातें घोय सून दस बीस जेठा नै दया घावता देख, वो वारं लारं टुरयो"

"पण वीं नै ओकलै नै पीछी नी करणो हंतो ।"

"पण काका वो तो भापांरै मलै सारू ई बां रै लारं टुरियो ।"

"हवै । म्है तो यू ई कैवूँ भीरा, दुसमण री काई पतियारो ?"

"नी काका । वो तो बां सून बेलीपी कर लियो भर वारी खासी बातों री भेद ले लियो"

"पछे काई दिह्यो ?" सत्तू काका नाक मे ओक चिपटी चड़ावतां थका बोल्या ।

"वो पूनम ई तो यानि मिन्दर ल्यायो हंतो ।"

"सून वळ ?"

"हवै । जदी तो वो वारं नैड़ी बैठो हंतो भर वार चालतां ई सपाटे सून कर दीन्हो किलाण ओके री तो ।"

"पण ओके भेद तो भाग निकळियो ?"

"हवै काका, पण इवै तो पूनम नै राब खुद दुसमण री भेद लेवण सारू भेजियो घौई ।"

सत्तू काका बोलण सारू जबान खोली भर बां री बाकी फाटोड़ी ई रेंगयो, सोंम सून ठाकर जेतसी भर वारें पूठें दो सो मोठ्यार तलवारां लियोड़ा भा रेंपा हा ।

"जै तनो माताजी री, सतसिंगजी !"

"जै तनो माताजी री, ठाकर जेतसिंगजी !"

ठाकर ओक दिन रुक'र पूछ्यो— "सरीर तो सोरो घौई सतसिंगजी ?"

"हवे, ठाकरां आपरो पुरी किरपा ओई"

अमल री पोटली सून, अक डळी हथाळी माथे घर सत्तसिंगजी, ठाकर जेतसी री निजर कियो घर बडे उमाव सून बोल्या—'ठाकरां, आपरे डीकरे पूनम री घणी चरचा सुणो, म्हाने बी दरसन तो करावो कवरसा रा"

ठाकर जेतसी री सीनी अक'र ती गरब सून फूलग्यो पण वां री नेणां में गुस्सी भरग्यो। बीजे ई पल वांरें चरे सून मीळाई भळवण लागी। हमार ती राव सून जुवारडा कर डोक देदां पछे फुसरत सून मिळोला। भा के'र ठाकर जेतसी भागे बघग्या। वां लारें पुरी काफली भागे बघग्यो।

ठाकरां ने सांमी आता देख'र पूनम घर पूनमी अक सून डेरे मे लुकग्या। पूनमी बोली—

"कदां लग लुकिया रैसां ? कोई सपाव करो"

"काई सपाव करा"

"मने पाछी बळण द्यो"

"केत जासी तू ?"

"जासून काळी मूण्डी करण"

"बो तो अत ई क्युं नो करले ?"

"अत तो पछे भेळी घांरी बी व्हेला"

"व्हेण दे। हवे तो सामे ई मरणी ओई"

"म्है मरण ने त्पार कीती"

"मरणी तो ओई। सुलतान री फीजां मारणां चंवई पयो। तूं बच'र केत जासो ?"

"अर अये मने ठाकर सा जीवण कोनी द्यंला। आछी घाडेतो री पत्ली पड़ी"

"तू व्याणू री तय्यारी कर, म्है नगर मे घूम ने की समंचारां रो जाणकारी ले'र आवू"

"म्है, अये अकली क्यांत.....?"

"अपू खावेई कोई तेने ?"

"भो खावी"

"म्है वीं ने काचे ने खा जासू"

"पाछा बीगा ई भावजी"

"हू"

पूनम बारें निसरग्यो।



(२२)

पूनम जद मौनां कांती पूगी तो छ्योडो में ई किस्तूरी ऊमी ही । वा पोरायत नै सानी की । पूनम वेधडकें मौलां दे छुयग्यो । वो किस्तूरी रे पाछे चालतो गयो । दो चार नाळां चढर वो अ्रेक मोटे मौल मे पूगी । ओ वो ई मौल ही जेत वो रो पैलपोत राव सू मिळणो विहयो । राव रो सिधासण खाली पड्यो ही । किस्तूरी, पूनम ने अ्रेक दूजे आसण माथे वेसाय ओय सू खिसकगी ।

घोडी ताळ में महाराणी अ्रेकांनी सू आवती दीसी । पूनम ऊमी व्हेगी । महाराणी मुळकी । महाराणी मागे वा रो डावडो केसर ही । वा ओय ई एकगी । महाराणी आगे आय आपरे सिधासण ऊपर विराजगी, अर पूनम ने बैठण रो सांती करी । पूनम संकतो-सकतो बैठी ।

'हाँ, तो पूनमसिंगजी पधारग्या आप ?'

'हुकम, अन्नदाता'

'बाप सू छाने ?'

'हुकम, कोई छोड़ी ई बात हंती'

'ठाकरा ने तो भरोसी छोई के आप राव रे खास काम ऊपरां तेनात ही । वे आपने सोधण सारु अ्रेय आया बी हा । खैर, या बतावो के फोड़ा तो नी पडिया मारग मे ?'

'नो अन्नदाता, आपरी पूरण किरपा हंती अर आपरी डावडो गुलाब रो साथ व्हेणें सू घणी सुभोती रैयो ।'

महाराणी अ्रेक छिन सारु मूण्डो फोर लियो ।

'बोत चोखो छोरो छोई अन्नदाता, म्हे बी ने घागूच म्हीर करदी हो, पूगी के नी ?'

'अ्रेय तो पूगी कोनी'

'नो पूगी ?' पूनम रो मूण्डो उतरग्यो ।

'वयू, गमायदी म्यारळी खास हावडी ने ?'

'नो अन्नदाता, म्हे बी ने सिजाय नांथो ।'

महाराणी रो भाव्यां मे बोड़ी अचम्बी हो ।

'काई विहयो ?'

'वियो तो काई नी । पण मोमजे तो पछतावी छोई के म्हे बी ने साथ घेरली ने मेलदी । इयें आपने काई मूण्डो देसावू ? राव ने काई पहूतर देख ?'

‘ते बी नै बीत दुख दिया ?’

‘हाँ, भन्नदाता’

‘ते बी सूं रिसांणी कियो ?’

‘हजूर, कसूर व्हेगो’

‘म्है बी बी नै रिसांणी करदो, बी नै काहदो अथ सूं ।’

‘काहदो ? क्यूं हजूर ?’

‘म्यारळी डावडी व्हर आपनै फोड़ा दिया’

‘नी हजूर, वा कीं फोड़ा नी घातिपा । म्है खुद ई बी नै……’

‘खैर, जावण द्यो । इबं बी री बात छो डो.’

‘मनै खिमा करदो भन्नदाता’

‘खिमा तो गुलाब करोस जद होसी पूनममिगजी’

‘अकर हजूर मनै बी सूं मिळबा द्यो, नी तो मौमजी आतमा घणी कळपैली’

‘आतमा तो मौमजी बी कळपै, पण इबं बी नै केत सूं त्याबू ?’

‘क्यूं ? ती काई…… ?’

पूनम भर महाराणी दोन्यूं रा नैण अक पल सारू गळगळा व्हेगा ।

‘म्है बी नै देस-निकाळी……’

‘देस-निकाळी ?’

‘हाँ, वा ई ती म्यारळी सबसू भरोस री……’

‘म्यारलै मन मे गुलाब सारू……’

‘की व्हे । मनै ई सूं की लेणी-देणी कोनी’

इतै में ई राव पधारग्या । राव रें आतां ई महाराणी भर पूनम घाप घापरै आसण सूं खड्या व्हेगा । पूनम भुकर राव नै दोन्यू हाथ जोड्या । मुळकता यका राव पूनम नै बैठण री इसारो कियो ।

‘यूं तो गुलाब सारी बिगत सुणाय दी, पण केरू कोई मैतब री बात व्हे तो म्है अबार पूछीस’

‘हुकम भन्नदाता ।’ पूनम केरू ऊठर हाथ जोड्या भर भुकियो ।

‘बैठ । हां जेवणघन ! आप हमें पधारी । म्है पूनम सूं……’

‘दासी समझ ई । भन्नदाता रें पधारण तक री ई जुम्मी हो मौमजी’ भा कंघर महाराणी ओथ सूं खिसकयो । राव, पूनम नै सारै आबण री इसारो कर दूज गैले सूं अक नाळ उतरिया । पूनम वा सारै भूवो गयो । घणां ई चक्कर लगावतां नीच-ऊपर चढ़तां सेवट राव अक अड़ै मौल मे लेयग्या जेत नाव सूनियाड़ ही । ई में भांत-भांत री दारू भर केई अजूबी भर कीमती बीजां पड़ी ही । हीरा, पद्मा, मोती इत्याद अम्बारै मे पलपलाट करता ।

पूनम नै बैठण री इसारी कर, राव दाहू री भेक कूंपी लाया घर भेक
प्याली मे ऊभा'र पूनम रें सांमी करो, भेक प्याली सुद रें हाप में तो ।

‘जै मा तन्नी री’

‘भग्नदाता म्है.....’

‘मां री परमादी भौई । इत्तो में नसी नी चढ़े । लं, लं ।’

‘जै तन्नी माता री’

पूनम प्याली खाली करदी । राव बी प्याली खाली कर सिधासण मायें
बैठा ।

‘हां तो पूनम ! इवै तू या बत्ता के बी सेनापति सूं काई ते कर भायोई?’

‘भग्नदाता ! गुलाब भापनै सारी बात नी बताई?’

‘वा तो खैर सेग बतादी, पण तू काई केवै?’

‘भग्नदाता ! मोभजी निजु राय तो भौई के सुलतान सूं राजीयो कर लियो
जावै’

‘काई केवै तू ? तू चेत में तो भौई?’

‘भग्नदाता ! म्हैने चेतो भौई । सुलतान रें इत्ते मोटे लस्कर सूं टक्कर लेवणो
इत्तो सोरो नी भौई जित्तो भाप.....’

‘पूनम ! तू तो सफा बोदो निकळियो रे । जेतसो री डीकरी व्हेने मीळी
बात करई ।’

‘भग्नदाता ! भाप म्यारळें सूं जादा ममभो घर सिरमचवान हो, पण मन तो
ई जुह में सिवाय वरवादी रें की निजर नी भावई ।’

‘तो सूं कर, कुडो पैर नै यसोघरा री चेलो बणुजा ।’

‘यसोघरा, कुण भग्नदाता?’

‘यसोघरा वळें कुण ? वा देवदासी जकी जुह रें नांव सूं भू-भू रोवई’

‘भग्नदाता ! म्है जुह सूं नी तो ढरूं, नी घबरावूं । भाप तो माइत भौई,
भापरें सांमैं हो-करूं के म्है अणगिणत धाड़ा पाड़्या भौई घर अणगिणत भिनखां
रा प्राण लीधा ।’

‘ई सूं ई तो भेक मोटे घाईत री परख ने रैयो ई ।’

‘परख नी भग्नदाता ! म्है बी री लागत पूरी तोली भौई घर भापां री
सांमरय री लेखी बी लियो । म्है भा जाणू के इत्तें मोटे लस्कर सूं सिरफ भापणी
फौज रें बळ सूं ई नी लड़यो जा सकी ।

‘लड़यो तो मुमकत कोनी । सवाल दुसमण नै पछाड़ण री भौई ।’

'दुसमण नै पद्याङ्गण सारु तो अन्नदाता वळ, वळ, कळ अर छळ च्याहूँ जोइजै।'

'तो तूँ अर्ब म्हानि बी उपदेस देवण लागी।'

'नी अन्नदाता ! आ तिसरमाई मोअजै मन मे नी ओई। म्है तो खुद सोचूँ कै क्यांन दुसमण पाछी जावे अर आपां री कम सू कम हाण व्हे।'

'ई सारु काई सोच्यो तूँ ?'

'ई सारु म्है अेक बात सोची ओई अन्नदाता !'

'बोल'

'म्है, सुलतान सूँ मिळ'र वों नै ई बात सारु राजी करूँ कै वो अःप सूँ राजीपी कर, राजी-खुसी पाछी वळ जावै।'

'हूँ, पण अेक बात ओई'

'हकम अन्नदाता !'

'पैला जोर अजमा'र देखला। जे आपां नै आ समझ मे आइस कै आपां वो नै नी पद्याङ्ग सकां, तद हूजो उपाव सोचसा।'

'पण अन्नदाता.....'

'पण काई नी। पैला आपानि आपणें दळ अर वळ नै अजमावणो पड़सी। जद ईं सूँ काम नी चालै तद आपां नै अटकळ सूँ काम लेणो पड़सी। सो ह्यारळी बात तो सीमोड़ी ओई। पण अेक बात ओई कै जे ह्यारळी अटकळ सूँ की काम नी वणै तो ?'

'तद अन्नदाता छळ रो सा'री लेणो ई अर्बे।'

'अज ताई तो माटी क्दैई छळ सूँ काम नी लियो पण ई बार जे माँ तग्नो रो आ ई मसा व्ही तो ह्यारळी बात बी मानणो पड़सी।'

'म्है तो अन्नदाता सगळा रो भलाई सारु बात करूँ पयो।'

'बा तो म्है समझा हां तदो तो ह्यारळी बात सुण रंया ओई नी तो को मूँ दतरी बतल करां ?'

'पणो तम्मा अन्नदाता।'

'लै, ओ ह्यारळी साम घेनाण ओई, ईं सूँ तूँ केन ई मिनी रोह टोक घा-वा मकंसा। पावै जित्तो विस तैन ईं घेनाण मूँ मिस जासी अर म्है केन ई म्हैळ, तूँ ह्यारळी मूँ मिळ मकंसी। ह्यारळी मूँ तो छळ नी करे ?'

'अन्नदाता नै भरोसी नी म्है तो सबार ई गरदन उतार सकई'

तो अक-अक प्याली फेरूँ बहे जावँ

'अन्नदाता! रो हुकम टाळणु रो मुनळब म्हा जाणू'

राव घर पूनम अक-अक प्याली फेरू पीवो ।

'आज थाळ मोघजै सागै ई जीमजै'

'अन्नदाता'

सको कै रो घोंई ? तेंने विसरकी काम सूंपणी घोंई ।'

'सको तो नी हजूर, पण म्हा अक वेली नें अकत नें छोड'र भायो हं ।
सवीकतो व्हेसो ।'

'तो सागै ले आतो'

'अन्नदाता ! इत्तो मरोसो की तो कर्मान करूँ ?'

'कयूँ ? परदेसी घोंई काई ?'

'नी अन्नदाता ! म्यारळें गांव रो.....'

'की कोनी । टडीकती रंसी । तूँ आज मोघजै सागै ई जीमेलो ।'

'अन्नदाता रो हुकम आखियां ऊपर'

'पूनम !'

'अन्नदाता !'

'तायजो बिमा व्हेगो कै कवारी ई है ?'

'नी अन्नदाता !'

'घणो सुखी घोंई'

'कयूँ अन्नदाता ?'

'छोड, ईं बात नें । सुखी घोंई तूँ, घणो सुखी ।'

पूनम जद पाछी भायो । अक पोर रात दळणी ही । राव की नें घणें मैतब रो
काम सूंपियो ।

(२३)

राव विजयराम, नगर सून पांच कोस आगे ई पच्छिम, उत्तर ओर दक्खण दिसावा में फौजां रा मोरचा लगा दिया । पच्छिम में तो चार पांच कोस माथे ई फौजा आमी सांमी निजर आवती ही । हजार हजार सिपाइयां री तीन टुकड़ियां तीनों दिसावा में तैनात ही । सबसु आगे पैदल सिपाई हा । या में बल्लम, बछीं ओर तलवार धारी हा । वा लारें घोड़े माथे भ्रमवार सिपाइयां री टोली ही, वां लारें ऊँट ओर सबसून लारें हाथी हाथी यून तो गिणती रा ई हा पण राजा ओर सेनापति सारु हाथी ई काम मे लिया गया । घुडसवारां कने तलवारां, वझिया ओर भाला हा । ऊँट सवारां कने खासकर तोर-तरकस हा । या री काम हो खुद रें सिपाइयां नें बचावणो ओर दुसमण माथे वार करणो । यारा चलायोडा बांण सात आठ सो हाथ री मार करता । ओ ऊँचा व्हेता ई वामतें नीचे आयोडा खुदरें सिपाइयां री रुखाळी व्हेतो ओर दुसमण माथे धार व्हेतो । ओ आगे सून ई दुसमण नें रोकण री त्रिमता राखता ।

मैमूद गजनवी री फौजां रें पूगण रें पैला ई राव विजयराम पक्की ओर पूरी मोर्चाबन्दी कर ली ही । तीन दिसावां मे मोर्चा लियोडा या तीन हजार सिपाइयां लारें तीन हजार सिपाइयां री दळ फेरुं तैनात हो । ओ लोग घोरों री आड़ मे ई डंग सून मोर्चा लियोडा हा कें ओ तो मैमूद री फौजां नें देख सकें पण खुद निजर नी आवें ।

सुल्तान बी घापरी मोर्चाबन्दी कर चुक्यो हो । बी कने तकरीबन बीस हजार सिपाइयां री फौज ही । मल्ले सिपाई बीत ई डीगा, माता ओर डरावणा हा । धरम रें नांव माथे जुद्द करणो ई ओ जीवण री पुन मानता । वा नें मरण री डर कोनी ही । राव विजयराम हूज दिन खुद सुल्तान सून टक्कर लेवणो आवता । पैलडे दिन ती वे या री रण बिधिया देखणो आवता ।

स्वामी श्री रात री दो पोर दलिया पछें हमलो बोलण री मूरत उत्तम बतायो । ई माथे राव विजयराम बीत ई घीमास ओर मिठाम सून अरज करी —

“स्वामी श्री ! रात रा हमलो करणो ओर बी बी सूतोई दुसमण माथे ! ओ तो धरम जुद्द नी ओई ।”

ई पर स्वामी श्री, पडूत्तर देवतां एका बोल्या “राजन् ! जुद्द में नैतिक अनैतिक की नी ब्हिया करे । जुद्द री घेप ब्हिया करे बी नें जीतणो । धरम री बात जुद्द रें मामले में सोभा नी देवे । कयूं कें धरम ती जुद्द नें खुद नें ई मानता

कोनी देवें । धरम किली श्रेक आदमी, जाति, सम्प्रदाय की मुलक री सम्पत्त कोनी । पूरी मिनख जात मे ई री वासी है । अर मिनख जात री कत्थाए जुद् रें जरिये नो प्रेम अर अहिंसा, रें जरिये व्हे सकें । पण राजा री घरम वड़े घापरें प्रजा, सस्कृति सम्भ्यता अर देवा रें स्थानां री हत्ताळी करणी । जकी जीर्त वी री घरम ई साची व्हे । राजन् नै देवी री वरदान है अर स्वामी श्री री आमीरवाद कें जीत थोरी व्हे । जकी पैला वार करै वी री जीत री पासी पैला मूं ई भारी व्हे जाया करै ”

स्वामी श्री मूं आसीरवाद लेय राव विजयराज श्रेकान्त में अंकर आखरीबार खुद नै चिन्तए—मंदए मे उल्लावण सारू मिन्दर रें डागळी जाय पूजा ।

(२४)

देवी री मिन्दर खचाखच मर्योड़ी हो । सेंकडू दिमा अर मसालां जगमगावती हो । देवदामिया री झुण्ड विजय निरत सारू त्यारी मे लाग्योड़ी हो । सेंग नगर—वासी विजयव्रत सारू त्यार हा तुगायां आभूषणां मूं सिणगार कर आई हो । राव विजयराज खुद अंकर घूम'र मोर्चा री निगे कर चुका हा । सिरदारां नै पूरी भोळावण अर हुकम दे'र नै पाछा आ चुका हा । सिपाइयां री जोस भर मार—मरण री झूंस देख'र वारी चित्त समांव मूं भरगयो । वा नै लक्षायो कें वारी जीत पक्की है ।

चन्दरमा ठीक ऊपर मूं घापरी छटा बिखेर रैयो हो । सीतळ, लुभावणी अर मनभावणी चाँदणी मदगैलाई उपजावती । गड मे जागती हजारों मसालों मे भांच ही । चान्दणी री सीतळता अर मसालों री भांच मे होड ही । सिपाइयां रा कोन हुकम सुणए सारू उतावळा हा । मिन्दर मे घंटा, ताळ जोर जोर मूं गूँजें हा । स्तुतिपाठ मूं आमी गरजण लागगयो । किली रें नैलां मे सोन्द री तुम तक नो हो । टाबर टींगर बी जुद् मे जावण सारू खाता पढ़ता । वे मोटा री नकल करण सारू जिद पकड़ियोड़ा हा । भावां रा भांचळ आला व्हेगा । वारी दूध भाज परखीजण वाली हो । बूडा अर सरीर मूं लाचार लोगां कर्न बी भोड़ लाग्योड़ी हो । वे लोग घापरी जवानो री वीरता री गाथावां सुणा'र लोगां री जोस दूणी करै हा ।

धचाणचक सेंकडू नगाड़ा अंके सायें घुरावण लाग्यो । सहताई अर तुरई रा तीस्ता मुर आभे नै चोरता, अर हिणो उज्ज समाय अर भी मूं भर जावती । धणगिणत मसालां परकीटां रें बारें भांक'र जुद् छेहण री घोषणा करी । मूरत

सरूप की अग्निबाण छोड़िया गया। अग्निबाण दुसमण री दिसा मे यूँ लपकिया जाणें सिकारी कुत्तो सिकार नै देखता ई सीधो बी माथें हूट पड़े। अँडी लागती जाणें आभे सून अग्नि रा गोळा बरस रैया के आभे सून तारा खिगिया। राव कुलदेवी तन्नोटराय रा दरसण कर स्वामी श्री सून आसीरवाद लियो अर हाथ मे नागी तलवार लियां भिन्दर सून बारै निकलिया। हजारों नर--नारी तन्नोटराय री जै, राव विजयराज री जै, स्वामी श्री री जै सून आभे नै गू जा दियो

नीन्द मे सुतोड़ा टाबर टीगर इत्याद चमक'र नीन्द सून जाग पड़्या। सजब सो हाकी मचग्यो। अँक बीजै री बात सुणणी मुसकल व्हेगी। कया धी करै के नगाडां में सुती री उवज कुण सुणे?

सुलतान मँमूद गजनवी अचाणचक हुरो ई हमलै सून चकरीजग्यो, वो दुसमण ने इत्तो सावचेत नी जाणती बी री फौज मे खलबल्ली मचगी। हजारों मसालां लाय रै लपरकां दाईं बां कानी तपकती निजर आवण लागी। तोफाण री गत तूँ भारी बघती मसालां अर जयदेवी तन्नो री धुनियां सून हड़बड़ीज'र मीमूद रा सिपाई जकी बी सस्तर हाथो आयो उठा'र लड़ण सारू त्पार व्हेग्या। केई लोग ऊन्हा भागण लाग। की तम्बूवां में छिपग्या पण तद तक भाटी सिपादार खासा नोड़ा पूग चुका हा। ई बिठिया सुलतान मीमूद अर प्रधान सेनापति सला करता हा। वा रै भेजियोडा भेदू अजू लग पाछा कोनी आया हा। सुलतान री डेरी पच्छम दिस में ही। उत्तर ओर दक्खण कानी री टुकड़ियां नै अजू कोई हुकम नी सुणाइजो अवे वां कने दूत भेजणी बी मुसकल व्हेगी हो। वाराह अर लंगरी बी बावड नी हो। वां रै पूगण नी पूगण इत्याद री कोई खबर अजू सुलतान कने कोनी पूगी हो। यूँ वां रा भेजियोडा कीं गिणती रा सिपाई पूग चुका हा। पण वां नै बी ईं बात री बेरी कोनी हो के वारी राजा कित्ती फौज कद तक भेज देसी।

पैल ई धावें मे विजयराज रा बीर सिपाई, सुलतान रै अणगणत फौजियां री सफायो कर दियो। राजपूनां री तलवारां यूँ चालती जाणें वाड़ेनी गाजर मूट्यां नै काट रैया व्हे। देखता ई देखतां लोई री तूतारियां जागा जागा सून हूटण लागी। पांखी री तिरसी घरती माथें लोई री नाळियां चैवणी सरू व्हेगी। अणगण लोयां जमीं माथें घडाघड बिछगी। इनै यदन की सम्मल चुका हा पण वारै नम्मळतां सम्मळतां तकां वारा पंदल सिपाइया री टुकड़ियां री पूगी सफायो व्हे चुकी हो। सूरज ऊणें मे अजू घणी देर हो। तद तक सुलतान रा अँक हजार सून बी जादा फौजी या तो मार्या गया या पछे ईं दग सून घायल व्हे चुका हा के वे कियों काम रा नी रैया। सुलतान री फौज ऊन्ही मूण्डी कर भागण लागी। भाटी सिपाई बी नै अँक कोस सारै ठेल दी।

राव मिन्दर मूँ निरळ'र नागों तलवार हाथ में तियां नांभी घोड़े घमरावत
 माथे सवार रहे गढ़ मूँ वारें निरळ घाया । घमरावत घेही लगावती पवन रें देग
 मूँ विजयराज नैं लैं उद्यो । पलक भरें थीं पैवा नी घोड़ी वारें जुद् रें मैदान में
 पैवा दिया । राव नैं देग भाटी मिपाइयां रो जोग बघायो । ये चोगणें जोग
 मूँ दुसमण माथे भूरें मेर दाईं टूट पड़्या । राव रो सीनी वारी बादुरी रें गरम
 मूँ फूलगो । यवनां रो लाग्गो लाग्गो दाटियां बाळो भट मूँ कटियोडो मूँ डरियां
 घेही लागती जाणें सैकड़ नारेळ घटो उठी बिसरियोडा पड़्या है । या मूँ ड-
 किया री ठोकरां में घली दुरगत व्हे । तीन तो रें घमटाजन भाटी मिपाई घायल
 व्हिया । या में मूँ दो सी तो घोड़ी ताळ मूँ ई मात्रभूमि रो रक्सा सारू प्राण
 त्याग दिया । प्राण त्यागता सका वा रें चेंरे घर घायियां में उजब घमक घर
 सतोख ही । भाटिया रो घेक सिरेंमोड सिरदार नरसिंग येजा घायल व्हियो ।
 वो प्राण त्यागण सारू घडियां गिरणो हो । यवनां रा दस मोटा घफगरां में मूँ
 चार रणसेठ रिया घर बाको रा रूः बुरो तरिया मूँ घायल व्हियोडा मिरतू री
 मागत चुकावण में तडफडावता हा । वां री मुध तेवण बाळो उठे नी तो कोई ही
 नी क्खिणी नैं फुरसत ही । रण रा घूसां बाज्या । गढ़ में लुगायां भगळगीत रा भमा-
 कड़ा माह दिया । भगळगीतां रें समचें पूरब दिम री कुंल फाटी घर सूरज रो
 देव रूप, घरती माथे उजास करण सारू प्रगटियां ।

भाज ऊमा, आपरो चुन्दड़ी सावत यवनां रें लोई मूँ रगती ही । कं पछे
 बीरी राउड लोई री राउड मूँ होड लेवती ही । परभाते री बिळिया कागलां री
 काव काव मरू व्हेगी । वारी काव काव भाज नित मूँ जादा ही । जाणें वा री
 पूरी न्यात भाज घटे ई जीमण सारू म्यूतीत्रियोडी ही । गिद् बी सी सी कोमा मूँ
 घटे पूगया । जी घरती माथे चिड़ी रो पुतर बी निजर नी घावती उठे भाज
 पाखिया री इती भीड़ देख अचम्भो व्हेतो । जमी माथे पड़ी लोथां नैं भं पांखी
 चीद चीद खावण लागा । घेरु घेक लोथ माथे दस-दस, बीस-बीस कागला,
 गिद् इत्याद बूकयोडा हा । लोथा री भा दुरगत देसया रोवणी घावती, घिन्न
 घावती । लुगायां देखलें तो ऊबका खाय मरे ।

जुद् री मैदान छिन्न छिन्न रण बदळती रैती । सजीव देहो घेक छिन्न में
 माटी री डिगली व्हे जातो । प्राणा रा पांखी हमार घटे हा घर पलक फुरकती ई
 अदीठग्या । देही रें पीजरें मूँ प्राणा री पांखी जाणें कद उड जावें ई री बेगी
 क्खिणी नैं कोनी । भाबी प्रबळ व्हे घर आदमी घटे घावतो ई थार्क । बीर वसन्त
 मनावण में मस्त हा । रण रा भूसा घर धमाल रें समचें प्राणा री बली देवण
 बाळा कोई सहिद, जूझार, परमवीर इत्याद हा तो कोई दुष्ट घर मितल जात

रा हित्याग । जाणै यां लारै कोई रोवणियां बी है कै नो । जाणै किरुरी राण्ड जीवण भर स्वापी घालियोड़ी करमा नै कोमती रैवेलो । जाणै कुणसा भर कितरा टावर बाप कंवण सारु जीवण भर तरसता ई रेमी । जाणै कितरी बैना आपरै वीरो रै बां हायां नै तरसती रैवेली जका कै आयै वरस भाईदूत्र नै टीकौ कढावण सारु तरसता रैता । जुद्द री मद जाणै किरु नै चढ़ै पण बी रा फोडा पोढ़ो दर पोढ़ो वे सोग भुगतै जका पेट री लाय बुझावण सारु आपरै जीवण नै अड़ा दुम्टा रै हायां सूँप दै । भा अ्रेक अ्रेड़ी लाय है जकी अ्रेक घर मे लगै पण पास पडोम रा अणगिरिया घरां न बाळ'र खाक कर दै ।

जोधा आपस मे झूझता हा । तलवारां री कट-कट यू लागती जाणै सिव रै ताण्डव निरत मे ताळ लगा रैयी है । उबळतै लोई री गरमी सूं सूग्ज री किरुणां गरमीजगी । सूरज रै रथ रा घोड़ा खुमरिया खाय तेज गत सूं दीडण री हूडो करता पण सूरज सागड़ी, वारो रासां काठी साम्भ राकी हो । जुद्द मे गरमी लावण सारु वो सीधी असमान रै बीचीबीच आय नै जाणै थमग्यो । ज्यू-ज्यू सूरज तपती गयो, बार, प्रतिकार, धावो, बचाव, मार-काट इत्याद मे गरमी बापरगी । भाला, बट्टियां, तीर, छाण्डा संग गुत्थमगुत्थ व्हियोड़ा जाणै बाधियां आ रैया है । सूरज री गरमी सूं तपियोड़ी धोरा घग्ती रा रांगड़ धोरा जुद्द देखण री चावना सू वतूळिया बण रणसेत रै च्याहूँ मेर, बिच्चै, भागै, लारै घूमर घालण लाग । पण लोई री गरमी रै सांमै सौ सूरज री गरमी बी निबळी ई लागै । तिरसी भर वळवळती रेत री तिरस बुझावण सारु, लोई री जाणै कितरी पखाला धरती मार्य छड़काव कर चुकी हो । पण जुगां सूं तिरसी रेत री तिरस, लोई सूं वद बुझण वाळो हो । रणभोम री विकट भैरवी लपालप लोई रा खप्पर भर भर नै डगळ-डगळ पीवण लागी । फौजियां सूं तो जादा गिरुती में कागला, गिद्द इत्याद भेळा व्हेगा । केई तीरां, तलवारां री फेट मे आय नै लोभी जीव सूं हाथ धोया । लोई तो जमी चूस जाती भर मांस नै चूट-चूट खाता अँ पखेरु । कुत्तां रा आज भाग जाण । हाड़कां नै दांतां मे दबाय, वे निसंग अ्रेकाने जाय बैठता भर कुटर-कुटर कर नै बिसन पोखता । धरती मार्य अठी-उठी बिखरयोड़ा मांस रा लीयड़ा केई ती काळा पड़या भर केई कांव व्है ज्यू चमकता । वीर राजपूत आपरै बळ भर घीजै री करतब दिखावण मे से की बिसराय, उलझयोड़ा हा । बां नै वेरो ई कोनी हो कै वा रै सरीर मार्य कित्ता घाव व्हेगा है । जाणै पूठ मे कित्ता तीर घुम्योड़ा सरीर नै चाळणी कर नाह्यो है ? अ्रेक कान कठैई खिरग्यो है, अ्रेक टांग लटकगी है कै अ्रेक आंख सू लोई री तूतारी छूट रैयो है । बां ऊपर तो अ्रेक ई भूत सवार हो कै सुलतान रै सिपाइयां नै रणपोळणा ।

सूरज कितरी देर मूण्डो ढेर ऊमी रैतो । वो बी प्रकृती रै नियमां सूं बन्धियोड़ी हो । दिन रा हाड़का दूखण लाग । याकी-मांदो दिन गुपचुप करती चोर

वहे ज्यू' खिसकण लागी । भटी सिङ्ग्या री जीवन फूटण लागी । आधूण दिस मे मंन्दी राची । भ्रममानी मूर्ख री मूण्डी पीळो पडण लागी । वीं री प्रकास घर तेज फीकी पड्ग्यो । वीं री संग गरमास निठग्यो । उबास्यां खावती-खावती को मदीठग्यो । अर उबास्या री समचे छोटियोटी बी री निसासा सून होवाड प्रगटी ।

सूरज री साख मे मुलतान री दखण दिस री दो हजार सिपाइयां री टुकडी री सफायो व्हे चुकी हो । उत्तर दिस मे घोरा घणां हा भर मुलतान री फीजां ऊपर चढाई मार्थे आयोडी ही जद के भाटी सिपाई नोचे डाळ मे हा । ई वास्तं भठे मुलतान री फीजां तर्फे मे रियो । भाटी राजपूतां रा अेक सो घोडा, चाळोस ऊंट भर पाच सो सिपाई आपरा मूंगा प्राण गमाय, दुसमण नें अेक आगळ बी आगे नो बधण दियो । इण मोरचे मार्थे बीर बीसल जुभार व्हेगो । वीं री माथो, धड सून कटनें घोडे री मूण्डे सांभो जा पडियो । वीं मार्थे लारें सून कोई वार कियो हो । पण ऊपरस्या फोरणां जात री बी री घोडो, बी मार्थे नें बीसल री हाथ मे झला दियो । बिना मार्थे री ई बीसल री घड, बरोबर तलवार चलातो रियो अर कम सून कम बीस मळेंछां रा माथा काट दिया । भा देल मळेछ सिपाइयां रा होस उठग्या । अडे वीगो सून वां री कर्दई पालो नो पडियो । पण घड री गरमास खतम व्हेतां ई घड जमीं मार्थे पडगो । ई री सार्गे ई जुभार बीसल वीरगत पाई । वीं री घोडो बी उठे ई आपरा प्राण त्याग दिया । बी री सरीर बी सैकडू घावां सून छुलग्यो हो ।

ओ सारो जुद्द गड सून चार-पाच कोस मार्थे चालतो रियो, ई वास्तं गड मे घडून लाय कोनी पूगी, पण, उठे रा ठववाळा तिणो मे सून भोंकर सारो जुद्द देख्यो हो । वां री रगत उछाळा लेवण लागो । वां रा भुज फुडकण लागो । रण मे जुभण सारू वा री मन घडी-घडी उछळतो, पण वे बिना इग्या उठे सून नी हिलिया । वे आपरे वेलियां री बादुरी री बलाण सून ई खुदरी जीव सोरो करण लागो । कोई गरब मे मातो हो तो कोई दिजोण मे कुरळावतो ।

सूरज दळतां ई अेक बार जुद्द जोर पकडियो । संग दिन री कसर निकालण सारू दोनू कानी रा सिपाई उतावळा हा । पण भाटी ठेठ ताईं मुलतान री फीज नें दबायोडी राकी अर अंधारी व्हेतां-व्हेतां वीं नें अेक-डेड कोस लारें खिसका दी । अचाणचक भाटी सेना री वू कियो बाज्यो । बिगल सुण मुलतान री फीज सस्तर नीचे नाख जमीं मार्थे मोडा ऊभा मार आधूण कानी मुडगी अर काना में आंगठिया घाल 'या निस लिल साहो' करण लागी । मुलतान री फीज बी बिगल बजाय लडाई रोकण री घोसणा करो । नमाज पढ़े मुलतान री फीज दो सो गज लारे खिसकयो अर उठे ई पडाव कियो ।

भाटी नगाडां री समचे जोर-जोर सून देवी तंत्री री भसतुती करण लागो अर जे-जेकार सून आगे नें गुंजायमान कर दियो ।

(२५)

अन्धारे री काळी काम्बळ ओढ़ रातराणी धरती नै निरासा सूं ढांप दो । कोई सुधी विषया रै विजोग मे कजळीजियोड़ी रात रो अन्धारी, सिसकारा भरती । आजरी रात, जाएँ कित्ता निरक्षोस जीवां रै हियां में धुवो उठावण वाली ही । जाएँ कित्ता चूड़ा आज दूटण वाली हा । जाएँ कित्ता टाबरा री निसकळंक हंसी नै आज काळरी नागण डसण वाली ही ? सुण जाएँ । कुण सोचै ! थ्यूं सोचै ?

दुस रै धरियाव में हूबोई जीवण में कर्द कदास अजूबी बार्ता मायै बी हंसी आ जाया करे पण आ हंसी विजळी दाई अक पळकी क पाछी भदीठ जाया करै । घोर अन्धारी रात में बळती मसालां रो चान्णो मन रै काळम मे उजावण मे सिमरण कोनी ही । जुगनू री चमक दाई मसालां री चिलकी छिन भर री पृळक रो सैनाण ही ।

जुद् मे धीरगत पायोडा रजपूतां रा माया, हाडका, लोथां अर सैनाणियां भेलीकर,वाने अकै साथै भेळा किया, अक ई जागा घां री सास्तरा री विध अर राजसी मान सूं दाह-सस्कार कियो गयो । राव विजयरज खुद पग उबराणा चितावां तक गया अर फूल माळावां चितावां ऊपर खढाई । वे मून साधियोडा अकाने चुपचाप ऊभा हा । वां री चैरी बी बगत्त अक संत दाई, गम्भीर ही । जाएँ वे मन मे आ ई सोच रैया हा के जीवण निस्सार है । नैणां में उजव गैराई अर पोड़ री वासी ही ।

यवनां रै डेरै में सूनियाड़ ही । मौत रै पैला री सूनियाड उठै छायोड़ी ही । स्यात हार री मातम मनावण रो ओ ई दस्तूर हो । पण सूनियाड़ रै घोदा देवता, आपसरी मे लड़ता-भगड़ता, सियाळ्या । हवा रै तेज भोला सूं ममालां बुझ जावती । फेरूं बाळीजती, फेरूं चुभती । पीरायत खेकारा कर करनै खुद रै सावचेन व्हेण रो प्रमाण देवता । स्यात सूनियाड़ में खुदरो मो भागण सारू ओई उपाव रैया ।

अठी गढ मे विजयवांणी अर धीरतावां रा गाथा-गीत उगेरता महुद-जुगायां रा सुर, बाघरिध रै भोलै साथै हिचकोला खावता । तारा अचम्बै सूं आंखियां फाड फाड सूरज रै कैयोड़ी कांणी रै साच री परख करण दूकग्या । घायल सिपाइया री उपचार सरू व्हेगी । सिपाइया नै सागेड़ी दारू अर सवाद भरिया पकवान पुरसिया । दिन भर रा बाका-थूका सिपाई नीद री सरण मे वेगा ई पूगा । पण नीद मे बी केइयां रा हाथ अर पग चालता हा । जाएँ वे सुपनां में बी तलवाग चला रैया है । कोई-कोई तो नीद मे सूती बड़बड़ावती बी ही । दो-चार सिपाईं तो नीद मे ई बिछा-वणां सूं ऊठेर पोड़ां माथै सवार व्हेगा । जतन सूं या सोगां नै पाछा साम पोढाया ।

रात चढाई कर चुकी ही अर सारी बस्ती न नींद मे गमावण सारु ग्रन्थारे
 रो जाळ फैलावती गई । रात रो हजो पोर हो । पौरायत नींद सूं मोरचो ले रेंपा
 हा । हवा सूं रणखेत मे बिलखोडो खोपडियां सूं सीटिया बाजण लागती । पौरायत
 रा रुंगटा खडा व्हे जाता । पण भो भगावण सारु वे जोर सूं धाकल देता खंकाग
 करता अर पण पटकता । डरता-डरता बी वे फरज निभावण सारु अठी-उठी दीठ
 'दोड़ावता । पण चितावां रो बचियोडो चिणगाऱ्यां अजुं' बी हवा रो फूंकणो सूं
 चेतन व्हे जाती । गढ रो पोळ बन्द व्हेगी ही ।

राव विजयरज, स्वामी श्री सूं मिळ'र वा रें नंडा ई सूर्यग्या, पण वा नै नींद
 कया घावती ? रणखेत वा रें आंख्यां सांमी नाचतो । जांणूं वां रा कितरा ई बीर
 सिरदार काम आ चुका हा । वा रा टावर अर लुगाया जीवण भर वा नै तरसता
 रेंवला । वां नै घन, माल, सिरोंदाव, मान सेंग दिया जा सकें, पण जको जीव दुनिया
 सूं जा चुकी है बी रो कमी कुण पूर सकें ? राव, विचारा मे अळू भग्या । फेरूं वां
 रें कानां सूं पेलडी रात बाळी सिसकियां टकरीजी । पण आज वे विचलित नी
 विह्या । सिसकिया बधती गई । वां रें कानां मे रें रें नै उवाजा पडती रेंपो 'जुद् मे
 प्राप्त कियोडो जीत पिर कोनी । जुद् कोई समस्या रो निदान कोनी' पण राव,
 सान्त भाव सूं विचारां रें मथण मे लाग्योडा रेंपा ।

सुलतान रें डेरें मे सुनियाड जरूर ही पण अजुं सुलतान अर बी रा मोटा
 मोटा अफसर, सेनापति इत्याद जागता हा । स्यात वे जरूरी हुकम रो उडोक में हा ।
 सुलतान हरेक तन्वू सम्भाळण वाळी हो । सिपाई आज रो भूण्डो हार सूं समिन्दा
 हा पण वा रो आतमविश्वास हाल कोनी हारचो । वां नै पूरी तसल्ली ही कें जीत नै
 ई पाछा जावला ।

सुलतान नैमूद गजनवी सारु आज बीत मोटी हार रो दिन हो । ई ढग सूं
 वो रो फोडां फोडोजेला, ई रो बी नै कलपना बी नो हो । वो गम मे ह्मयोडो घणी
 रात गयां तक सोचतो रेंपो । पण अेड़ी छोटी-मोटी हार सूं बी पवरावण वाळी बी
 नी हो । वो जाणतो कें, सो सोनार रो व्हे तो घेक लोवार रो बी झिया करे, नित
 जीतण वाळो सुलतान कदै हार वो सकें, घी वो रें वास्तं घेक नुं'वो तुजवो हो । ई
 वास्तं वो सारी रणनीति माये नुं'वे सिरें सूं विचार करण मे मळू भग्यो । वो बीत ई
 संजोदो, हीमती, धीरजवांन अर मुसकिला सूं टक्कर लेवण वाळो हो । घी ई बी रो
 रात-दिन रो काम हो । चोटां सायनं बी जिन्दादिली सूं जीवतो रेंवण रो गुर बी नै
 याद हो । धीरज रो बी नै घमूट राजांनो हो । वो सगती रो सरूप अर गैराई मे
 समदर समान हो । बीरता, बी रो सांन हो । जुद् रो मंदान ई बी रो घर हो ।

सुलतान रें भावण रो रावर गुणता ई सेंग सिपाई घेक जागा भेळा द्येग ।
 वो मोटा-मोटा अफसरां सूं सेर छोटे सूं छोटे सिपाई रो तारोक करो । जका जुद्

में मारघा गया था नै जघनत बखसण सारू, भल्लाताला नै दुवाभा की। वो घोड़े मार्य बंठी ही। फीजी लिबास में वो बीत ई सूंसार निजर भावती। वो सैग सिपाइयां सूं सलामी ली। भरियोई गळं भर रुन्वियोडी उवाज मे वो बोलणी सारू कियो।

"गजनी रा बादुर मोट्यारां। भाज रै जुद् मे थारी बादुरी घर होसलां री गाथा सुण'र मनै बड़ी मोद घायी है। मनै ई बात री गरूर है के थां लोग हमेसा इस्लाम री माथो ऊँची राकियो है घर ताउमर ऊँची ई राकीला। थां सैग घर थारी सुलतान, ई वास्ती ई पंदा ब्हिया हो के भापा मिळने भापारी तागत सूं इस्लाम नै फैलावां। दुनिया रै हर मुलक मे इस्लाम भर हजरत महमु-ल्लेसलाम री, कुरान पाक री भर गजनी री नाम भापा नै ऊँची करणी है, दुनिया मे फैलियोड़ी बुतपरस्ती नै दफणावणी है। म्हे भर भाप सैग मिळ'र मजहब री सबक सारी दुनिया नै पढावां।

भल्ला रा वन्दां! थारै खून में वा सुर्खी है के दुनिया रा तमाम मुलक थां सूं घुजै। थारै बाजूवां मे वा तागत है के सेर बी थांसूं खोफ सावे। थारै कदमो री ग्राहट सूं, घरती घुजै। थारी उवाज सूं असमान फाट जावे। थारी गुप्तै भरी निजरां सूं असमान रा चाँद-सितारा काँपे। थारी बादुरी भर हीमत री म्हे दाद देवू। थारी इमदाद सूं ई म्हे गजनी री सुलतान बण्यो हूँ भर इस्लाम री दायरी फैला सकियो हूँ। भापा री मजहब भापा नै आ ई सिखावे के भापा जीवां ती इस्लाम सारू, मरां ती इस्लाम सारू। मनै खुदा री हुक्म ब्हियो है, म्हे थां लोगां सूं इमदाद लूँ भर दुनिया सूं बुतपरस्ती री खातमी करूँ।

ई सूं भापा नै दो फायदा व्हेला। आपां री इस्लाम फैलैला भर आपां नै दीलत बी मिळैला। आप तो सुण राकी है के भाटियानगर मे बेसुमार दीलत है। काफिर लोग ई दीलत नै बुतपरस्ती भर अम्पासी में बरबाद कर रिया है। भापा री ओ फरज है के आपां अँडा काफिरा नै सबक देवा भर मही मारग बतावां। नाचीज भाटिया शरियत मानण सूं मुकरग्या है। आपां री तागत बेसक थां सूं जादा, इरादा बेसक वा सूं पाक है, आपां री ईमान भर मजहब हयोगत, मे वासूँ ऊँची है, ई वास्ती कामयाबी बी बेसक भापा नै ई मिलैली।

अबै थां साँमै दो ई रास्ता है, जिन्दगी या मौत। इण मजहब री लड़ाई मे जका सहोद व्हे जावेला थां नै खुदा जन्नत बखसैला। भर जका जीवता बचैला थां नै म्हे मालोमाल कर दूँला। अठै लूटियोडी दीलत मे सूं थां नै इनाम दियो जावेला जको थारी तनखा री आमदनी रै इलावा व्हेला। जन्नत रा तमाम अँसो इसरत थानै अठै ई नसीब व्हे जासी। बेहतासा दीलत रा खजाना अठै

काफिरों कने भर्या पढया है। बां ने लूटो, मारो घर इस्लाम रो नाम ऊंचो उठावो।

आज रो गत, वाराह घर लंगा बी घापां रो हमदाद सारू फौजों घर रसद ले'र अठे पौचण बाळा ई है। घापा ने काफिरां ने सबक सिखावणी है। खुदा रा बन्दा ! म्है, था सू रखसत व्हियां पैला अेक दर्ज़ केरू' मुदा रहीम, परवरदिगार सूं मिघत करू कों वो थां सबा मे वो जोस भरै के इस्लाम घर गजनी रो आबरू सारू मर मिटो घर काफिरा ने नेम्तोनामूद करण मे कामयाबी हासल करो। काफिर बादियां धारै अैस रे वास्तै हाजर है। बां रो सबाव लूटो घर जग सारू नुबी तागत हासल करो। खुदा हाफिज।"

मुलतान रो ई तकरीर सूं यवन सिपाइयां मे नुबी जोस पैदा व्हेग्यो। वे मुलतान रो तारोफा करण लागे। घणकरा तो लुगायां सारू उतावळा हा। वे जोर जोर सूं हाका करण लागे—“हसीनावां नै बेपइदा करो। आज तो वारै हाया सूं ई जाम पीदाला। अैस ई दुनिया मे जनत है। दोलत घर दोसीजा, वस दो ई चीजा, खुदाबन्द, अेक सिपाई रो किसमत मे दो है। बाकी सब बकवास है, मोत तो अेक दिन आवेला ई, बी रो कंडो सोच ? या रब ! ई अेक हूर, पुरनूर, हा...हा...हा...हा...मुलतान मलामत।

(२६)

घायल सिपाइयां सारू तबाइफां रे नाच-गाणां रो प्रबध अेक मोटे पण्डाल मे कियो गयो। गुलाम बलाघोड़ी लुगायां घर मोख्यार छोरिया रो हाट लागोड़ी हो। मुलतान यां रे तरीर सूं बी दोलत कमावणी जाएतो। घस्सी छोरियां, माटी राज रो सीव मे घुसियां पछै मुलतान रे सिपाइयां रे जुलमी हायां मे पड़गी।

पैला, तबाइफां रा नाच-गाणा सारू ब्हिया। दारू रे नसै मे मस्त ब्हियोडा ईरानी, हस्मी अर यवन सिपाई मूण्डे सूं भूण्डी-भूण्डी गाळियां निकालता, हसी-टट्टा करता। वे तबाइफां घर गुलाम छोरियां कानी उजव इसारा करता। नाच-गाणा बन्द ब्हिया घर गुलाम छोरियां अेक रात सारू लोलामी मार्य चढ़गी।

‘मा सोळा बरसां रो हूर, देखण मे नूर, भरिय तरीर रो, कुरान जैड़ी शक, सिरफ पाँच दिरम। अेक रात रा सिरफ पाँच दिरम। बड़ै सो पावै।’

अेक मोटो-ताजो ईरानी सिपाई अेक छोरो ने सोमी सड़ी कर, बोली लगावण लागो। ई छोरो रो घाघरो जागा-जागा सूं लीर-लीर ब्हियोडो हो। ऊपरला अगां मार्य अेक जीणी कपड़ी नाखियोडो। मा सरम रे धारै भांसियां नीची करली हो।

‘सात दिरम’ अक सात फुट साम्बो ह्मसी सिपाई, मूँछां रै बट देवतां थकां बोल्यो ।

आठ दिरम’ अक बीजो ईरानी सिपाई अण्टळ मे मूँ बटवो निकालनां थकां बोल्यो । छोरी सरम मूँ जमी मे गडती जावती । वा दोन्युं हाथ छाती रै आडा कर लिया । वीं रै नैणां मूँ टप-टप मसूँ टपकण लागी ।

‘दस दिरम’ अक जल्लाद जेडो सूरत री काळी भेंसी मिनख बोल्यो अर दस दिरम बी बोली लगावणियै रै सामा फँक’र बी छोरी री हाथ पकड़ लियो । छोरी बळी रै बकरै दाई घग-धग धूजण लागी । तम्बू मे जोर री ठहाको लागी । वो भेंसी बी छोरी नै घीस’र तम्बू मूँ बारै लेयग्यो अर थोड़ी भोली लेय’र भूखे सेर दाई वीं माथे लपकियो । छोरी री कचूमर निवळग्यो अर वा अँड़ी देहोस व्ही कं बी नै पाछो होस ई नी आयो । मूँ कर अक-अक छोरी री अक रात री मोल दस मूँ पन्दरा दिरम रै बिच्चै तै व्हियो ।

‘हाँ, भाई जान ! आ है सोळा बरसां री अनार । खुदा रै हाथां घडियोडी, फूलां री मँक मूँ जीं री चामड़ी अंगेजी है, जी री अंग-अंग उन्माद मूँ भरियोडी है । भोगणियै नै नुंबी सवाब देवै । दारू मूँ जादा नसो देवै । हिरणी सी मसियां वाळी, कचनार री बळी, मरदानगी नै ललकारती, हुस्न, हूरां नै सरमावती रूप, अर.....’

अक सिपाई उतावळी में बोल्यो ‘पण दांम ती बोली’

‘दांम, अक रात रा सिरफ पन्दरा दिरम । बढै सो पावै ।’

‘बीस दिरम’ होटां नै चाटती हुयो अक वूढो सी सिपाई बोल्यो ।

‘हाँ, सवाब लोटावो, खान साब’ भीड़ में मूँ अक मोठ्यार मुळकती सी बोल्यो ।

वूढो मसखरी री उधेली देवती थको बोल्यो ‘पचीस दिरम’

अक मोठ्यार सीनी ठोक छड़ी व्हियो ‘साठ दिरम, खूब देवै परवरदिगार’

आ छोरी अकदम गोरै रंग अर ओपतं डील री हो । सरीर री बणघट देख आछा आछां रा मन विषळ जावै । ईं रै अक फाटोडो लंगो पैरण नै हो । ऊपरली अंग साव उघाड़ी । ईं अंग नै उघाड़ी राखण सारू बी रा हाथ लारली कानी बाधि-योड़ा हा । आ काठ री पूतळी दाई ऊभी हो । ईं रै चेरै माथे किरणी तरै री रोस, विसाद कै उमाव नी हो । निरपेख भाव मूँ भावी रै हाथां बिकण सारू त्यार ऊभी हो ।

भीड़ में मूँ अक सिपाई आगे आयो अर बोल्यो ‘खान साब ! माल री परख करने बोली लगावांला । हुकम व्हे तो हाथ लगाव देखलूँ कै आ जीवती जागती

तसवीर है कै काठ री पूतली ? ब्यू कै ई घरती माथें अंडो लुपाळी भजूं कोई निजर नी आई ।’

‘हाँ, पण हाथ लगावण री कीमत है पांच दिरम ।’

‘मसूर है’ आ कैर वो सिपाई आगे बढ्यो भर पांच दिरम, बोली लगावण वालें रै हाथों में धमाम दीन्हा । वो अँकर तौ बी छोरी रै च्याखें मेर चक्कर लगायो भर पछे बी रै सानो आय ऊमो व्हेगो । दोन्यू हाथा नै ऊँचा उठाय, वो बी री छातियां माथें घपसो भरियो । छोरी अँक सात री मारी भर वो जमी माथें चित्ता पड़्यो । सारा लोग हिड़-हिड़ हँसवा लाग़ा । वो पाछो ऊठ’र ज्यू ई बी रै नँदी आवण लागो भर बोली बोतणियो बिच्चें पड़्यो । बोल्पो ‘पांच दिरम खलास’ ‘पांच फेरु’ आ कैर वो पांच दिरम बी री हवाळी माथें मेल दिया ।

हमकें ओ लारें सूं भायो भर दोन्यू हाथा सूं सागें जागा धावी कियो भर बी रै गाल में आपरा तीखा दांत गाड दिया । हमें बोलीदार नजीक आय बी नै भळगी करण लागो पण वो टस सूं मस नी व्हियो । छोरी रै गाल सूं लोई छिक्कण लाग्यो पण वा मूण्डे सूं धू कारी तक नी कियो । बोलीदार बी सिपाई सूं धाधियां धाययो । भीड़ में घनकम-मुक्का व्हेण लाग़ा भर बड़ी मुसकल सूं बी सिपाई नै उठें सूं भळगी कियो ।

सरपोंत री बोली लगावणियो बूढ़ी सिपाई भगड़ो बढतो देख बोल्पो ‘सो दिरम । बोली खतम करो सिरदार ।’

‘सो दिरम अँक, सो दिरम दो, सो दिरम ती.....’

बी री इतरो कँणो व्हियो भर वो मोठ्यार कस’र अँक मुक्की बोलीदार रै जबाड़े ऊपर धरियो । वो रा चार दात अँकें सागें चारें उछल पड्या भर मूण्डें बारें सोई टुटण लागी । दो सिपाई बी मोठ्यार नै पकड़’र लेयया । बूढ़ी सिपाई बी छोरी रा दाम चुकाय, सम्बू सूं बारें ले भायो ।

थोड़ी दूर अन्धारे में वो बी छोरी री हाथ पकड़ियां आगे बढतो रँगो । अँक धोरें री ओली लेप, वो बी छोरी नै नीचें बैठण री हुकम दियो । छोरी धोरां माथें सोधी चित्ता मूयगी भर पैली बार बोली ‘ले भाव, सा लें’ ई रै मागें ई वा धाधरी काह’र फेर दियो ।

बूढ़ी सिपाई माथें ऊपर सूं बूल्हो खोल बी रै सरीर माथें धोढ़ायो भर भठी उठी देख’र होळें सूं बोल्पो ‘चम्पाड़ी होस में है कै नी ?’

‘कुण चम्पाड़ी ?’

‘तू’

‘म्है चम्पाडो नी । म्है ती दिरम री राण्ड लें भोग मनं, लें भाय, खाव मनं’ घा के’र खा, बी बूढे रो हाथ पकड घापरें कानो खंचियो । बूढो भटनै सू हाथ छुडा’र घेक घप्पड़ बी रें गास माथें रनीद करादो । घप्पड़ सागतो ई जाणें बी रें बिचळो चमकगो । बा ऊठ’र बैठो - बोली ‘काई घायई तूं’ म्हासू ? मार नें मात खावली घाय ? तो लें, मार नोस ।’

बूढो बी रें माथें ऊपर हाथ फेर नें बोल्थो ‘घेटी, म्है गज हूँ, गज ।’

‘तूं कुण घायो म्हारो बाप बण’र ? खरीदार ! खरीदघोडे माल नें भोगण री सरदा नी तो पछें वसूँ गमाया सो दिरम ?’

‘चम्पाडो ! वसूँ, भेजो घजूँ ठिकाणें नी घायो ध्यारळो ? पूनम नें तो घोळरें ई ?’

‘पूनम ? कुण पूनम ? म्है ती गिरफ तेनें घोळसू, लें खाव मनं, खाव । भाय भट भाव । मोमजें घणी खटाव कोनी ।’

हमकें बूढो तणा’र बिसरकी भापट घरी ।

‘होस मे घायें के नी ?’

‘मार लें तांमजी मां नै, मार लें, मूवा, मोलिया !’

‘चम्पाडो ! होस मे भाव ।’ हमकें बूढो घोड़ी कड़क’र बोल्थो ।

‘होस मे ई तो हूँ’

‘नी घाई तूं होस मे’

‘तो तूं ले भाव मनं होस मे, वडो घायो बावडो बंद ।’

‘चम्पाडो ! वो पूनम तांमजें कारणें मरग्यो ।’

‘ठीक ब्हियो, मरग्यो तो पाप कट्यो’

‘मर घायो’ तंग घाय’र बूढो उठें सूँ व्हीर व्हेण लागो ।

‘काई कंयो घां ? पूनम.....’

‘हव, पूनम मरग्यो’

‘नी, नी, कूड़ गत बोली, वो नी मर सकेई । वो नें कोई नी मार सके ।’

‘मरग्यो, मरग्यो, मरग्यो । कँवू ई के, पूनम मरग्यो’ वो जोर देय’र बोल्थो ।

हमकें बा छोरी बूढे रा पग पकड़ लिया, ‘नी, झूठ मत बोली’

‘झूठ नी, साव साव घाई । वो कवळ-पूजा करो, घारें खातर । घर तूँ.....’

‘म्है काई कियो ?’

‘कियो काई ? हमें करई पई’

‘तो म्है काई करू ?’

‘मेघ सूँ भाग जा’

‘केत भागू?’

‘इया सू बी सामलें घोरे नै वार कर, घाघें कोम, पचदम में जाइजें । ओष भेक घोरो ग्रहूँ आवेला । बी रें सारें-सारें दो कोम दिसणाद कांती जाइजें । ओष भेक दांणी भौई । ओष तेनै भेक लुगाई घर भेक साण्ड मिळ जासी । बी रें कनै जाम पूछजे ‘आधी रेती, आधी चून’ वा लुगाई जे पाछी पडूत्तर देवें ‘भौव, भाङ्गी, डेरा सून’ तो बी रें सागें साण्ड ऊपर बेंठ, वा ले जावें ओष जाइजे परी ।’

‘पण पूतम?’

‘घरे पूतम री धा, पैला खुद नै साम्म’

‘पण पूतम बिनां मोमजें जीणें री सार?’

‘घरे हां, बी सूं बी मिळा देसू । जोवतो बंठीई तामजो बाप ।’

‘साच?’

‘हां हवें, हमें माय ओष सूं’

‘वो बूढो मापरें ऊपरला गाबा उतार, चम्पा नै पैराया घर नकली दाढ़ी रा केसां नै खांच मळगा किया । चम्पा मुळस दी । बूढो, चम्पा रा डोगा केमा नै कतर नै थोडा ओछा कर दिमा घर वां री नकली दाढ़ी-मूंछी बणाव, चम्पा री मिनसरूप बणा दियो । इतरें में ई भेक बीजो सिपाई भेक छोरी नै लियां उठें पूगो । आ छोरी वो घणो फूटरी घर जोध-जवान हो । ईं रें सरोर मायें कोई चींघरी ईं नो हो । पण, दिन भर ऊभी रेंवणें रें कारण सूजग्मा हा । मायें रें डीगा केसां सूं आ मापरो रसकुपिषा नै डांवी घर दोःखूं हाया नै सायळां रें भाडा देय लाज छिपावण री धणूती कोसिम की ही । ईं छोरी घर भेक सिपाई नै थोडें भागें सूं आता देख बूढो पूछियो ‘कुण’?

‘गज रा घोड़ा’ सिपाई पडूत्तर दे, उठें ई रहगयी ।

‘दोरा कै सोरा?’ बूढो पाछी सवाल किया ।

‘देवी रें दारू, मरद रें लुगाईं’

‘घाव म्हरा भाई’

वो सिपाई वो छोरी नै लाय बूढ़ें नै सूंपदी । खुदरें ऊपरला गाबा बी नै पैराया ।

बूढो, बी नै नांव, जात, ठिकाणा इत्याद पूछिया । पैला तो वा सकें सूं कीं बोली कोनी । पण जद बूढो बीं नै पूरी तसल्ली कगदी कै वो बी नै मुगल कराव, वो रें घरें पुगाव देसी तद वा जोर-जोर सूं रोवण ठूकनी । बूढो बी रें भूण्डे भाडो हाथ देय, चुप करी घर मायें हाथ फेर, बोल्पो ‘बेटी ! हूं मज हों, असल भाटी । तामजो मामा हौं, दुसमण कोनी ।’

हमें वा छोरी भांसू पूंघ'र दुसका दुमक ठिहयोड़ी बोली 'हू घटिपाळो रें
चुतरसिंग रो डीकरी भीई ।'

'चुतरसिंग की रो ?'

'वरजांग रो'

'घरे जद ती सूं धाट आळां री भांणजी भीई'

'हवे'

'वो की नांव भीई त्यागळं मामे रो ?'

'सांवतो'

'हां, हां, घोळल लियो । हमें याद आयो, सांवतो । हां, वो अक'र मुलतान
री खजानो लूटियो हंतो । धीन बादर भीई, छोरी ताम्रको मामो ।'

छोरी याकथोड़ी हो, बोली 'म्है बंठ जावूं ?'

'हां, हां, घरे म्है तो तर्न बंठवा रो वो कंवणी भूलग्यो बेटी' बूढ़े रो आख्यां
गळगळो व्हेगी ।

'हमें फिकर मत कर बेटी, अक सूं दो व्हेगी । आ कं'र वो चम्पा कानो
मूण्डो कर मुळकियो । चम्पा उठे सूं ऊठ'र बी छोरी सूं छिपती आय बंठगी । छोरी
डर नै थोड़ी लारें रिगसी । चम्पा बी रो हाथ पकड'र छांची अर भापरें खोळं मे
वीं रो माथो पटक दियो । छोरी घबरा'र ऊठल लागी । हमें चम्पा हांसी । बोली
'पारती, हमें छुडावणी मुमकल भीई ।'

'कुण ? च' छोरी अचम्बे मे पडियोड़ी घूर-घूर देखल लागी ।

'हं'

'चम्पा'

'सो...चुप...'

बूड़ी अकानो मूण्डो कर मुळक दियो । ओ दूजोड़ी सिपाई, केसरी हो ।

सूं कर, ई अक रात में वे दोन्यूं अर वारा बेली, सोळा छोरियां नै अक रात
रा दाम चुका'र मुलतान रें सेमै सूं छुडाय लाया । यां मे सूं पांच-सात री इज्जत
लूटीज चुकी हो । की रें ई, साथळां में सूं लोई टपकती, तो की रें ई गालां सूं, कीं
रें ई पूरे सरीर माथे दांतां सूं कियोड़ा घाव हा तो की रें ई टट्टो रें मारग सूं, लोई
बैवतो । अक छोरी तो इत्ती बुरो तरिया चिगदोजियोड़ी हो कं बखाण नी कियो जा
सकें । गज री टोळी रा पांच आदमी घणी चुतराई सूं यां छोरियां नै दुसमणां रें
चुंगळ सूं छुड़ाई । ई सारु वां नै साम, दाम, दण्ड, भेद सेग अपणावणा पड्या ।
यां सेग छोरियां नै सिपाइयां री पोसाकां पेर'र अक ऊँट माथे दो-दो रें हिसाब सूं

बैठाव मुलनान रें डेरें मू दारें निहाळण री उपाव धी मज, धाररी पुनराई ध
 हुनिदागी मू सोव निवो । बे सोम दगण दिमा रें तबमूं देवें तम्बु मे साव सगाशे
 साव सगाव, मयमू तेज दीटण दाळो साण्ड मायें मवार रहे, बेमरो उठें मूं धावें
 भागी । मागी, मागी, पकटी, पकटी करना धरा छोडिवां घर धी पांच पादभिवां
 मायें मज धा रें वारें भागी । धा रें मायें पांच-सान ऊँट मुलनान रें निवाइया रा की
 ग्राटा धा सागी भी मज बीछी बियो । मुलनान री फोत्रा रें पडाव मूं धी मंग घणा
 घण्टा धा पूसा हा पण बेमरी री साण्ड में नी पकड सकिया । घेत धोरें री घाव
 लेन मज रें हुकम मू की रा बेनी घर छोडिवां, मुलनान रें निवाइयां रा पांच-सा
 जेरा घर धी रें मयारी में मेर निवा । ब्याम मेर मू निरघोडा मुलनान रा निवाई
 हाव जेवा कर मयमू नीय दिया । मज धी रा कपडा की उतरवा मिया घर साव
 मी त्रावा कर हुकम दिया की ये प्राण साजा रावणी पावें ती पुरणार उठें मू
 मुलनान रें डेरें म पूग जावें । धी सोपी रा ऊँट धी मज सोम निवा । साजी मरता, रें
 द उठें मू पद भागा । छोडिवां दोर-दोर मूं हासण मागी । मुलनान री वहाव रें
 मू पाव बाम घटती ही । रात री देवी घटिवां, दोरा मीम मेवनी ही । घममान रा
 प्राण, धी री कुबडा निरग, धेत-दूजें मागी वूटिवां बाइरा भागा ।

बाणा रा बादल तावडे न बिचवै ई रोक लियो । जमी मे जागा जागा खाडा रे गुवणू सून खाडा पडग्या हा । जाणू कोई माणस न मगोड न आधी धरती मे गड दियो व्हे, विणो मांत अं खाडा दुसमण रे आधे तरीर न आपरें सागें लेव जमी मे ऊण्डा गड जाता । केई कटियोडो मूडकियां धरती माथे ज्वाटी खावती तो केई कटयोडा, हाथ फुडकता निजर आवता । असफडा रा ढेर लागग्या हा । केई केई घोडे रे मूण्डें मे चार चार पांच पांच तलवारा फसियोडो ही तो केई रे तरीरां मे पांच-सात भाला येक सागें ई इण पार मूं उण पार निकल्पोडा हा । आज रौ जुद् खास करनै घोडां रे कमाल रौ हो । घोडा केई दुसमणां री तलवारा आपरें जबाडा मे झाल'र खोसी ही । ई मू वारा मूण्डा चोरीजग्या पण घोडा लातां मारनै बो दुसमणां न रगदोळता रया ।

आज रे जुद् मे पांच हजार भाटी सिरदार वीरमत पाई । यां रे इलाका येक हजार घोडा बी रणखेत रया । पांच सौ ऊँट अर चार हाथी मार्या गया । इत्ती भारी हाण व्हेनां थका बी भाटिया रे जोम अर हीमत मे कोई कुमी नो भाई । अरेक अरेक आंगळ जमी सारू सो सो प्राण गया पण पावण्डो पाछो नो पडियो । बादुर भाटियां रा घड, माथा काटिया पाछें बी लडता रया । वारी बादुरी देख यवन सिपाई दांता हेऊं आंगळियां दबावणा मरू व्हेणा । केई ती या न देख काला व्हेणा । केई सस्तर ताख यां सामे भुक्त्या अर केई यां न जिन्न समझ मंदान छोड भागा । सुनतान खुद अडे बादुरी पैली बार देखी ।

भाटी रणबांका सारें दिन भूखा, तिरसा जलमभोम ताई जूझता रया । चारी एक ई घेय हो अर एक ई मत्तो, वीर भोम री परस्पर रो वे पूरी निभाव कियो । प्राणां री घाउनी देयनै बी अं लोग जलमभोम री सत्कृति अर धरम न कायम राख्यो । अडे तो कोई भाटी सिरदार हो ई नी जकी के बिना दुसमण न चोट पोचाया ई मर खुटी व्हे । सैग मुळकता मना सून जलमभोम माथे प्राण निछरावळ किया हा ।

सिक्क्या टळण सून आधी पोर पैला सुलतान री फौजा तन्नोट नगर री सीव मे घुमगी । नगर तो सून बी लालो ई पड्यो हो पण छिडिया विछिडिया हांडा, जिनावर नगर में खासी चक्कर लगावता हा । वे पूछ्छो ऊंचो कर घठी उठी फडाका लगावण लाग्ता । बाराह, लंगा अर यवन तीनू री फौजां अंजू गड सून घाघो कोस अळगी हो । बारा बी सात हजार सिपाई मार्या जा चुका हा । बाराहा पर लंगा री फौजां घा जावण सून सुनतान खुदरी फौजां बोत कम कटाई । हाई हजार सून बी जादा सिपाई घायल अर अघमरिया व्हे चुका हा । सुलतान रा आधे सून ज्यादा घोडा, ऊँट अर बीजा जिनावर बळद, खच्चर गधा इत्याद मारया जा

चुका हा । पांणी री टकिया, पखाला इत्याद सँग खाली व्हे चुकी हो । सिरफ व
हजार सिपाइयां सारु श्रेक टक पीवण जोग भूगली पाणी भचियो हो । स्यात इणी
कारण सँग रगत सूं तिरस बुझावण सारु तडफा तोडता रेंया । मंमूद नै हाल मरोमी
नी हो । आज रें जुद्ध मे वीरो पलडो भारी रेंवतां थका बी उणरें मन मे रें रें नै कोई
चोर खोलतो कै भाटिया नै हरावणो इत्तो सोरो कोनी जित्तो कै वो काल
ताई समझतो हो ।

खालो नगर री सीवा में घुसण मे ई वीरो आधी बटक री सफायी व्हेगी
हो । हमें पांणी री कुमी बी माखर दाई सांमी आय ऊभी व्हेगी । पांणी बिना तो
खाणो पकावणो बी सोरो कोनी हो । बी री फौज रें सांमैं काची मास खावण रें
इलावा कोई चारो कोनी रेंयो । अरे छेडे पांच, दस कोस तक पाणी री टोटी ई हो ।
तावडो, सारें दिन आकरो तवियो हो ईं वास्तें गरमी भर उमस बघगी हो ।
मरीर जाणें तवें माथें तळोजण लागो । होट, खोरा दाई चंयता भर कंठ गरमी रें
कारण फूलग्या । गळें मे धूक गिटणी बी दोरी व्हेगी । अठें आयनै वे वुरी तरें
सूं फसग्या । ज्यां मुसकिला भर दुवयावा नै पार कर मुलतान अठें तक पूग्यो
हो वे सारी पाणी री कुमी सारें हळकी लागण लागी अठें ठंरणी कै पाछो
मुडणो दोन्यू अकें सार हा । पण मुलतान पुरो जिद्दी हो । बळ री जागा यवन
सिपाई श्रेक श्रेक कुरलो करने ई संतोख कर लियो । भूख भर तिरस सारी
मरजादावां, पाप-पुत्र री विचार भर नखरा नै भाग मेल दिया । गड सूं
बारें वेंवतें मळभून रें सुगलें नाळें री पांणी चमीडण सूं बी तिरसां मरता सिपाई
कोनी चूक्या । ऊंटा रा पेट चोर वां मे सूं पाणी निकाळनै बी केई जणा तिरस
बुझाई । यां सारी घबखाया रें व्हेता थकां मुलतान, आपरें सिपाइयां री होसनी
बधावतो रेंयो । बी ने पुरो मरोमी हो कै वो दूजें दिन गड ने फर्त कर लेंला ।
सू, बीनै आपरें भन्दाज सूं केई गुणा जादा मुकाबलो करणी पड्यो भर नुक्साण
बी उठावणो पडियो । बी रें केई सिपाइयां रा हाथ तलवार चलावतां थकड्या हा ।
पायला री झंझ गिणतो बी नी व्हे सकी । नी वारें उपचार री ई पुरो साधन
व्हे सकियो । वे पांणी पाणी करता हा, हार रा सारा लवण सामा निजर घावता
थकां बी, मुलतान, आखरी दाव भजमायां पेंला पाछो मुडण ने स्यार नी हो ।
तप्तोटी री घोरा धरती लोई वो'र छक व्हिथोटी हो । पण ई धरती माथें
जीतरा पत्र रोण सारु सवण बाळा यवन, यागह भर लगा तिरस सूं हारग्या ।
धरती माथें बिसर्पोटी लोई बी नीचें सूं घांच देवण लागो ।
संठा मोर्चा माथण सारु मुलतान, सिपहसालार, लंगा भर बाराही रा
सेनापतियां भर सुदरा मोटा भक्तारां नै सलाह री गरज सूं सुदरें तम्बू में बुसाया ।
बी दूजें दिन हर हालत में गड माथें कब्जो करणो घायतो । ई, सारु बी मुद हाथ

में सस्तर द्वाय भगवांणी करण सारू तयार हो । प्रधान सेनापति जुद्ध रैं मैदान रो नक्शो तयार कर सुलतान सामें पेस कियो । सबसूं मोटो भबखाई गढ नै तोडण रो ही । ई रैं एक ई पोळ हो, बाकी सँग दिसावो में खाई हो । सुलतान, लवार खातो भफसगो नै हुकम दियो कैं वे खाई पार करण सारू तजबीज करै । गढ रा किवाड बी दस भांगल जाडै लोवै सूं तयार कियोडा हा । याँ किवाडां नै खोलण सारू दस हाथी मुकर हा । इत्त जाडै लोवै नै काटणी तलवारां, भाला भर बाणां रैं बम रो रोग कोनी हो । किवाड दो हथणी ऊँचा भट वेढ़ हाथी चवड़ा हा । पर-कोटो बी अकदम सीधी हो । ई वास्तं बी रों सई ऊँचाई रो भन्दाजो लगावणी भसखेल रो काम नी हो । परकोट रो भीता सपाट हो । खाई ढाकर यां भीता कनै पौज्या पछै बी भीता माथं चढणों । सोरो कोनी हो । ऊभी भीता चढण भर ढाकण सारू खास रूप सूं तयार कियोडा सिपाई हाथ भटक दिया । वानें ई बात रो कळपना बी नी ही कैं अँडो सीधो भर ऊँची भीता बी चुणो जा सकैं ।

रात दो पौर दळ चुकी ही । सुलतान खुद सेनापतियों नै साथे लेय मोकै रो मुघायनी कियो । अँकर तो बी रो बी प्रकल चकरीजगी । बी, लोवारां, सिलावटां भर खातिपां नै हुकम दियो कैं किणी तरें सूं भीता माथं चढण रो सपाव करै । सिलावटां रो हुकम दियो कैं वे मोटा मोटा सिरिया ठोकण मारू निसरणी माथं चढ'र भीता फोड़ै भर वां मे मजबूत सिरिया रोपे । यां सिरिया रैं घासरें रस्ता भर निसरण्यां लटका'र सिपाई गढ रो भीता ऊपर चढ़े । पण ओ काम इत्तो मोटो भर मुसबिल हो कैं हजार कारीगर, भर मजूर मिलने बी रातोरात नी कर सकता । सबसूं पैली मुसोबत तो खाई नै पार करण रो ही । ई वास्तं सबसूं पैला वे लोग ई रो भटकल काढण मे जुतग्या । दिनुगें तक बीस लाम्बी लाम्बी निसरण्यां तयार व्हेगी । अँ निसरण्यां खाई रो चवड़ाई सूं बी दस हाथ लाम्बी हो । यां रो वजन इत्तो भारी व्हेगी कैं पचास आदमियां बिना नी ऊँचें । पैला तो वे सोची कैं या नै खाई मे उतार दे भर बी पर सूं सिपाई खाई मे उतर जावै भर खाई मे सूं ई निसरण्यां गढ रो भीता रैं घासरें ऊभी कर, सिरिया ठोकण रो काम सरू कियो जावै । पण अँक निसरणी घाधी ऊपर, धूड़ में दबगी । दोरा सोरा वे सेवट खाई पार करण रो जुगत जमाली । सुलतान कनै समंचार पूगतां ई बी घणी राजी न्हियो । आज पैलड़ी बार, बी रा सिपाई, बी रैं होटां ऊपर मुळकण देखी ।

(२८)

आज भाटियों रो दिन बीत दोरो हो । भाग फूटता ई रण रा बाजा बाज सव्या । घमासाण जुद्ध विहयो । आज रै जुद्ध रो बखाने स्यात सजय बी करण मे चूक जातौ । वयू के आत्र मोरचा जागा जागा खुलियोड़ा हा । पूरै नगर रो गळी गळी मे, सेनां माथे, घरा रै सूना डगळा माथे बी, मोरचा मडग्या । गढ़ रो भांयली पठियाळां मे तैनात भाटी सिरदार अर भटियाणिया सुलतान रो रात रो सारी कारवाई नै या तीणा मे सूं झांकर देखता रंया । ई वास्तं वे रात रा ई भटियां चेतावी अर वा मे कद सूं तेल अर पाणी उबळ-उबळ'र बारें दुळण लागग्यो । तीरन्दाज लोग बाणा रा नुका तीक्षा कर, वां नै जैर रै घोळ मे मिजोय नै सुखावणा सरु कर दिया हा ।

गढ़ रै बारें, भाटी फौज सिरफ दुसमण नै उलझामोड़ी राकण सरु ई तैनात ही । बाकी आज रो दिन तो गढ़ रै माय तैनात भाटी सिरदारां अर भटियाणियां रै किरतब देसावण रो ही ।

बारें, भाटी सिरदार दुसमण नै सूब छका-छका'र फोडिया । कदेई बांरा घोड़ा घरां रो छनां माथे कूद'र पीच जावता तो कदेई उठै सूं ई छळाग लगा'र दुसमण रै घोड़े माथे कूद पडता । दुसमण नै जागा-जागा खाचें मे ले'र मारया । पैदल सिपाईं तो घटै बीं काम रा ई नो हा वयू के वे सी सपाटें सूं दोड़ता घोड़ां रै पगां हेटे ई किचरोज नै चटणी बण जाता ।

दुसमण, खाई पार कर, गढ़ रो भीतां में मिरिया ठोकर रो स्वारी में ही । निसरणिणां रै सारें कोई पांच सो सिपाईं खाई नै पार कर परकोटे रो ओटो लेय सिरिया ठोकर मे मदद करण लागे । नगर मे सूं पैदल सिपाईं भाग-भाग'र घटै पीचणा मरु दिह्या । सूं कर तकरोबन हजार, दो हजार सिपाईं परकोटे रै ओटें भाय ऊभा । ओ मोकी ठीक देस गढ़ रै भांय तैनात तुगाया पनाळां मे सूं उबळती-उबळती तेल अर पांणी बूझणी सरु कियो । तहातड पनाळां नीचें पड़णी मरु बड़ी । अर परकोटे रै सारें ऊभा सिपाईं या घल्ला, हे घल्ला, बरता-कस्ता धड़ाधड खाई मे बूझणा सरु दिह्या । केई पूरी तरिया बळग्या । कोई रो माथो घर मूखो बळग्यो तो कोई रा हाथ-पग । सेण सुधबुध सोम भागणा सरु दिह्या । पण भाग नै जावता कठे ? आनें तो खाई हो सो घबाघब खाई में बूझणा सरु दिह्या । अर उठै पड़िया पड़िया गिगकता रेया । वेई निसरणी सूं खाई पार करण रो मोवण लागे । दतरें मे ई ऊगर सूं भाटी रा गोठ्या पड़णा मरु दिह्या अर निबरणी गमेन बीं माथे जमोड़ा सिपाईं खाई मे धहाम करता पड़या । वां रा माया फाटया अर मोई सूं

सारी देही सिनान कर चुकी ही। खाई रै दूजी कानो रा, इमदाद सारु टुकड़ियां तेहरा नै दोड़त, पण यों रै पाछल फोरता ई यों माथे बाणां भर साण्डों रो बिरसा करु व्हेगी। इण भांत भाथे सूं जादा ती घायल व्हे, छूड़ पाटण लागी। कियो रो मूंडकी साण्डे रै साथे जमीन में गडगो ती कियो रो हाथ हवा मे उछळग्यो। की सिपाई मरता-गुड़ता, लुकता-छिपता जाय डेरै मे खबर करी। उठे सूं इमदाद सारु दूजी टुकड़ी दोड़ती भाई पण बी रा बी सस्तर काम नी भाया। ये ज्यूं ई सांभा प्राता, जैरीली नोक बाळा तीर बां रै सोने में भाय सुभता। सुलतान रो फौज में तैलको मचग्यो। सुलतान रा सारा सुपना खुर व्हेगा। वो अक तरियां मूं चितबगती व्हेगी। वो घोड़े माथे सदार व्हे उण दिसा मे जावण लागी। यों रा अफसर यो नै समझायो, ती बी सुलतान नी मानियो। पण घोड़ी भागें बधतां ई सडासठ आठ-दस बाण बी रै मरीर सूं अक सांगळ भागें सूं निचळण लागी। अक साण्डो यों रो पाग उडा लेदग्यो। सुलतान उलटा पगां पाछो डेरै माथे पूगो। सुलतान बाकी बचियोड़ी फौज रो टुकड़ियां नै नगर मे जोरदार घावें सारु बहीर करदी। घोड़ा कम पड़ता देख वो सच्चर गधा बी सवारी रै काम में ले लिया। देढ-दो हजार भाटी सिपाई सारे नगर मे तैलको मचायोड़ा हा। सुलतान रा तीन हजार सिपाई पैला सूं ई यों सूं मोरचो ले रैया हा। हमें दो हजार सिपाई अरुं भाय पूगो। अक-अक भाटी सिरदार नै चार-चार यवन सिपाइयां घेर लिया। जुद्ध रो संग मरजादायां त्याग, छळ-कपट रै जरिये जुद्ध जीतण रो होड लागगी।

दिल छळण मे अक पीर बाकी ही। पण तकरीबन सारा भाटी सिरदार वीरगत प्राप्त व्हे चुका हा। ई वास्तै दिन रै चानणी में ई जुद्ध खतम व्हे चुकी ही। रीस मरघा यवन, नगर रा कागेमरो अर कोरणी कियोडा घरां नै धुड़ावण लागी। सारा मिन्दरा रो अक-अक खण्डो छळगी कर मिन्दरां रा नांव निगाण भिटा दिवा। पण नगर मे मिन्दरां रै नैड़ी, बचियोड़ी दो-तीन ममीतां नै देण याने मचग्यो दिह्यो।

सुलतान जाणतो ही कैं वो आज रो जुद्ध जीत नै बी कीं हागल नी पर सकिणी है। बी रो गड नै आज रो आज फतै करण रो मनगूबी माटी में मिलग्यो। सूं बी आज रै जुद्ध मे सुलतान रा ई जादा सिपाई मारघा गया हा। अवे, भी नै सुदरें पैला रा अन्दाजां रो भरोमो ऊठग्यो। वो आछी तरिया जाणगी कैं अजुं फां पागी है। तासो रात गयां वो नुंवी उपाव सोवती रैयो। आज बी नै कोई आग रा गुपबुप नो ही। वो आज नी तो बज्ज ई कियो, नी रोजो ई गोतिवी ही। हा, संकाम घूंट पांगी जरूर पियो ही। वो सारी रात पण्डाल मे धूमनी रैयो अर सोनगी रैयो। यों रो भायो सूं जादा सगती, रसद अर फौज खतम व्हे चुकी ही अर अजुं भी है

हाथ नो लागो । गढ जीतण मारु जित्ती नागत री दरकार ही, वित्ती तागत तो बी री पूरी फौज मे बी नो हो । पण सुलतान कन बी री होसली अर दिमाग घं दो ई चीजां तो झंडी अणमोल ही जहां रं भरोमं वो पंजाब अर मुलतान फत करिषा, अरब मे सिकु जमायो अर भाटियानगर नै फत करण रा मुपना देखतो ही । दिमाग रं बल सूं वो अंक बात घड़ी-घड़ी सोचण लागो कं जुद् तागत मू नो जुगत मू जीख्यो जावै । भाटियां सूं तीन दिन रं जुद् मे बी नै केई नुंवा अनुभव दिह्या अर वो मन ई मन भाटिया री तागत, अटकल अर जुगत री तागीफ करण लागी ।

खाई मे पड़्या सिपाइयां रा टसका अर सिसकारा वो रं कानां मे रं रं नै पड़ना पण वां नै बचावण मे वो लाचार ही । अठो-उठो बिबरी पड़ो लासां नै भेली कर वां नै बी खाई मे अंक कानी फंक बीं माथे अंक-अंक मुठ्ठी धूड़ सँग बचियोड़ा सिपाई अर सुलतान खुद नांखी । ई बिच्चं वो अटकल सोचतो रंयो । आवण बाळं काल री उड़ीक में, वो आख्यां में ई गत काटदी ।

(२६)

गढ़ रं मांय आसरी जुद् री जोरदार थारियां सुरू व्हेणी । दिन ठगयो पण गढ री प्रौल बन्द ही । सुलतान री फौजां घड़ी घड़ी रण रा बाजा बजावती रंयी पण विरथा । सुलतान री फौजां फेरूं खाई कानी बघण लागी पण अठो नै आगे बघताई बां माथे बाणां अर खाण्डा री बरखा व्हेणी सुरू व्हेणी । सुलतान, फौजां नै हुकम दियो कं वे विरथा प्राण नी गमावै अर गढ री प्रौल तोड़ण सारु तागत लगावै । कोई दो हजार सिपाई प्रौल तोड़ण मारु पूरी तागत अजमाई पण सारी मेनत अर अटकल बेकार गई ।

दोपारी दळती निजर आवण लागी पण गढ री प्रौल नी मुसकी । सेवट सुलतान सिलावटां अर दीगर कारीगरां नै हुकम दियो कं वे प्रौल रं नाचै री फरस तोड़ै । ई काम में सिपाइयां नै इमदाद करण सारु हुकम दिषो गयो । सिलावटा अजून सिरफ दो हाथ फरस खोद सकिया । पण गढ रं मांय घुसण सारु अजून कोई मारग निजर नो आयो । सुलतान रा सिपाई, पांणी सारु ग्राही-ग्राही मचादी । बी सिपाई मसीतां मे नमाज पढ़ण री नीत सूं गया नै बां नै, अंकाअंक याद आयो कं मसीत रं मांय कूबो व्हेणी जोइज । श्री बिचार भाता ई वे घापरं अफसरां नै बतायो । पांणी री सर्वां नै उड़ीक ही । ईं घातें मसालां अर राख लेयने दो तीन सौ सिपाई अर सिलावटा पाँचग्या । वे पूरी मसीत री फरस खोद नांख्यो पण कठे ई कूबो निजर नो आयो । सेवट सार सायोड़ा वे पावती ऊभी अंक कोटड़ी नै

घुड़ादी । अठ वाने वेरे रो घेनांए ला'दो ईं सूं वारी आसा बघी अर वे दस गज रे घेईं छेईं जमी खोदणी सुरू की । दो हाथ जमीं खोदतां ईं तीन चार सिलावां निकळी । यां सिलावां माथे हवींही मारतां ईं थोथ गूजण लागी । सिपाई हडकें सूं सिलावां खिमकावण लाग्ता अर ईं रें समचे ईं जमी मांथ सूं रंगहीण हवा, दळकी उवाज करती यकी वारे निसरी । ईं हवा रें लातां ईं पाखती ऊभा सिपाई सिलावां खाय नीचें पडणा सुरू व्हियां अर पडताईं सोघा जमलोक पूगया । यां नें नीचें पडता देख दूजा सिपाई ज्यूं ईं यां कांनी आगे बधता अर वां रो बी आई गत व्हेण लागी । दो--चार सिपाई नाक अर आंखियां भाडा हाथ मेजर उठे सूं ऊंभा भागा पण वे बी घरणाटी खाय नीचें पडया । तीन सो सूं बघिक सिपाई अठे मर-खुटा । सुलतान कर्न समवार पूगा तो बी अकर ती घबराव्यो पण दूर्जे ईं छिन बो सम्मळव्यो अर पूरी जाणकारी लेवण सारू अक मोटे अफसर नें भेजियो ।

दुजी कांनी कीं सिपाई अक दूजी कुवो खोद काडियो । हमे यां लोगांरो खुसी रो ठिकाणी नी रेंयो । वे दोडिया दोडिया गया अर टंकिया डोल अर डोरी ले भाया । गिडगिडी लगा'र दो दो डोलां सूं पांणी सीच टकी भरणो सुरू की । पण अक टंकी बी पूरी नी भर सकीजी कें कुवे रो पांणी खुटव्यो अर रेत भावण लागी ।

पांणी पीवण सारू सिपाइयां रो भीड़ लागी । संगे नें अक अक चुल्ही पांणी, पीवण सारू देवण रो हुकम ह्यो । पांणी रो टकी भाघें घंटे मे ईं खाखी व्हेयो । अर सिरफ दो हजार सिपाई पांणी पी सकिया ज्यां नें कें जोरदार तिरस लागोडी ही । वे दो चुल्हा बी मुसकिल सूं पी सकिया । परयम बात ती आ कें पांणी बीत खारी हो, दूजी बात घा कें पाणी हलक सूं नीचें पेट मे पूगता ईं अंई लागो कें पेट रें मांथ कोई भाटी फंसगी हो । जका लोग अक अक गुटकी ईं लियो हो वां ग बी पेट फूलणा सुरू व्हेगा अर पेट मे जोर सूं अट्टा आणण लाग्ता । यां सूं ऊंभो नी रेंयो जावे । वे छटपटावणां सुरू व्हिया । दो पार घटा मे ईं दो चार सो सिपाइयां रा प्रांण निकळया । की लोगां नें दस्तां अर उलटियां ताळ व्हेगी । दिनुगे तक सात भाठ सो सिपाई फीत खेलया । पांणी पू गोती व्हेली पूं सिपाइयां मे खळबळी मचगी ।

वे लोग हर्मे सुलतान नें संग करणा सारू व्हिया के तो वासी मुद्द जावे । बें लायां बिना रें सकें पण बिना पांणी तो अक दिन बी गी रें मक्के । गुलातग वा नें पणी ईं समआवण रो कोसीस करी पण वे लोग ज़िद भङ्गया । सुलतान रो पूरी कोसीसो, सोभ अर इस्लाम रो दुवाई विरया गई । चापी फौज वासी आवाज सारू पूपरा बांध लिया ।

सांभ दळतां पूनम आपरें सागें तीन सो ऊंटां मायें पांणी रो पखाला भर ल्यायो भर यां ऊंटां नै गढ़ रें पिछवाडें कांती भेक दिपा । पूनम आपरें सागें भेक भरूं बेली नै ले'र मुलतान रें डेरें कांती आयो । मुलतान रा सिपाईं यो नै बन्दो बणा'र सेनापति कर्ने पेस कियो । सेनापति यां दोन्हु कांती घूर नै देखियो ।

“काई नांव है थारो ? ” पूनम कांती आंगळी उठावतां थका सेनापति पूछियो ।

“पूनम सिग भाटो”

“पूनमसिग ?” सेनापति थोड़ी गौर सू देखियो ।”

“थनै म्है सायत पैला कठै ई देखियो है । याद नी आ रैयो है ” सेनापति थोड़ी दिमाग मायें जोर देय फेरूं गौर सू पूनम कांती देखियो ।

पूनम आपरी घन्टळ सू सेनापति रें दियोडो सेनाण निकाल'र सांभ कियो ।

“हा याद आयो नज्जमी, पूनम ।”

“हुकम” पूनम थोड़ी झुक'र बोल्थो ।

“बोल ! काई सजा दो जावै थनै ?”

पैला तो म्है तीन सो ऊंटा ऊपर मोठे पाणी रो पखाला भर ल्यायो हूं, वां सू आपरें तिरसा सिपाइया रो तिरस बुझावो, पछे जो दण्ड देवोला, वो भुगतण नै तयार हूं । ”

“कठै है पखालां ?”

“गढ़ रें पिछवाडें”

“वे बयूं ल्यायो ? किण रें वास्ते ल्यायो ? ”

“हजूर ल्यायो तो आप सारू ई हो ”

“ई बात रो काई भरोसो कै पांणी पीवण जोगी है ?”

“हजूर !” हुकम फरमावो तो म्है खुद पी'र बत्तावूं”

“ठीक है, थारो सेनाण दे, सो पखालां घटे मंयाई जा सकै”

“पूनम दूजी घटळ सू भेक दूजो सेनाण काढ'र सेनापति रें सामो कियो । सेनापति रें इसारें ऊपर भेक अफसर, तुरत पांच सो सिपाइयां नै सायें ले'र गयो । उठें जाय वो पूनम रो सेनाण बत्तायो । सेनाण रें समर्थ तीन सो ऊट मुलतान रें डेरें कांती इहोर छेगा । ई रें बिच्चे सेनापति, पूनम नै आपरें तम्बू में तेहायो । सेनापति रो मरजीदान सिपाई पूनम रा दोन्हु हाथ कमर रें पूठे बांध'र वीं नै तम्बू में ल्यायो ।

“हां तो पूनम ! याद है वा खजाने वाली बात ? म्है जानतां थकां वो थनै उठै सू आवण दियो, या म्हाारी मतमानसत हो । म्है चावतो तो.....”

'ठिकाणी तो पूनम ई जाएँ'

'गढ़ मे जावए री ओरू' कोई मारग ?'

'वहेला'

'यनं नी मालूम'

'नी हज़ूर ! म्हे मुलतान री बाबिन्दो हूँ अठं पैली दफा धायी हूँ '

'यनं नी मालूम कै सुलतान री फौजा अठं जग लड़ रीयी है ?'

'मालूम है इणो वास्तं तो खजानी लूटए री सुभीती है '

'हूँ तो लूटियो नी खजानी ?'

लूटए सारू कम सूं कम हजार आदमी जोइजं । म्हारे दल में सिरफ पचास आदमी है ।'

'ठीक'

सेनापति हुकम दियो कै ई नै ओक दूजं तम्बू मे भारी पोरे में बन्द राकियो जावै ।

यां सूं निमत'र, सेनापति, सुलतान कर्न गयी । सारी हथोगत बी नै बताई । सुलतान घर सेनापति खासी ताळ सला मसबरा करता रिया । इतरे में तीन सौ अँटा री काफली, पांखी री पखाला ले'र आध पूगी । सुलतान रै हुकम माफिक सेनापति यां तीन सौ पखालियां नै बन्दी बणा लिया अर पखालां री पांखी यां लोगां नै पाय, तसल्ली करली कै पांखी मीठी है । ईं पछै तो पांखी पीबए सारू जठे भारी भीड़ लागगी । पांखी पियां सूं सुलतान री फौज में ओक नुं'वो जीस बावड़िया । सुलतान रै हुकम रै माफिक पूनम घर रमजान नै सुलतान रै सामे पेश किया गया । वे दोगूँ गन्दनां भुका'र सुलतान नै सिजदो कियो ।

'पूनम अर रमजान ! म्हे सारी बात सुएली है । एए इए बात री काई सबूत कै धै बाबियां खजाने री है ?'

'सबूत तो बाबियां लागिया सूं ई व्हे सकै सुलतान यामिनुद्दौला !' पूनम बोल्थो ।

'एए ई में राब री चाल बी व्हे सकै ।'

'सुलतान नै म्हारो यकीन नी व्हे तो म्हारं कर्न सूं कुरान लठवा सकै' धबकै रमजान बोल्थो ।

यो सब ठीक है, एए म्हे खजानी चावू'

'खजानी है, अर भरपूर है, सुलतान ! ओक बात आपनं बी मानणी पड़ैला कै ओक दुसमए दूजं दुसमए साथे दगो कर सकै एए ओक लुटेरी दूजं लुटेरे साथे घोसी नी कर सकै,' रमजान बोल्थो ।

‘काई मुतळव धारी ?’ सुलतान घोड़ी कटक’र बोल्थो ।

‘मुतळव धो हजूर कै श्रेक मुसलमान दूजें मुसलमान साथे दगो नी कर सकें ।’

‘पण काफिर ?’

‘काफिरां रो भरोसो तो म्है बी नी करूं भालमपनाह, पण.....’

‘पण काई ?’

‘खजाने रो ठिकांणी भर मारग ई काफिर नै ई मालुम है ।’

सुलतान, पूनम नै बारे लेजावण रो हुकम दियो । सिपाई पूनम नै बारे लेयग्यो । हमै सुलतान रमजान नै पूछियो—

‘धारी बात रो यकीन करलूं ?’

‘भालमपनाह ! यकीन माथे दुनिया टिकी है । म्है आज तक ई काफिर रो भरोसो करतो प्रायो हूँ भर ओ अजताई मने कठे ई दगो नी दियो । दरअसल ओ काफिर कोनी । ओ श्रेक मुसलमानी रै पेट सूं ई जलमियो है ।’

‘फेरूं बी.....’

‘राव, गढ मांय सूं भाग चुको है भर गढ़ अबे खाली पड़यो है । खजाने रो दखाली खातर की सिपाई गढ़ में है ।’

‘सबूत !’

‘म्है खुद राव सूं मिळ’र पछें भठी नै भाया हां ।’

‘वो बयूं ?’

‘खजानो लूटण सारूं’

‘भवे था रो काई विचार है ?’

‘बोयो पांती में बात तै रहे सकी ।’

‘पण म्हारी इसी मोटी फीज रै सार्मि था खजानो लूट’र रो जा सकीला ?’

‘वा कूबत म्हां में है’

‘तो आज आजमाइस रहे जावें ।’

सुलतान, सेनापति नै हुकम दियो की वो दो हजार सिपाइयां नी ते’र पूनम भर रमजान साथे खुद जावे भर गढ़ रै मांय पून’र प्रोळ कोण वे । पूनतान लज्जा रो दोनू चाबिया खुद रै कब्जे में लेली ।

रात आयो दळ चुकी ही । गढ़ मांय आज गगाली क्षेम नी म्ही । सेनापति, पूनम भर रमजान नै साथे ते’र पूनम रै बतायोई मारग कोनी भागी भयमा भायो । वो रै पाछे दो हजार सिपाई रातर शियोका ऊँची गली भाग रिया हा । गुरा मूण्डे कने पून’र, पूनम, सेनापति नी कोयी कं ईं मांगली भीर नी हवागो लागी ।

रै हुकम सूं पचास सिपाई तुरत धोरो साफ करण में लागग्या । थोड़ी ताळ में धोरो साफ व्हेग्यो । हमें जमी मार्ये पड़ी तीन सिलावां नै खिसकाईं तो सुरंग में उतरण साहू पागोटिया निजर आया । सेनापति दो सिपाइयां नै हुकम दियो कैं वे मसाला लेय मांघने उतरै अर आगे रो मारग देख'र इतला करै । दो सिपाई, डरता-डरता सुरंग रै मांघ उतगिया । अं दस कदम ई आगे बघिया अर हड़बड़ा'र पाछा आयग्या । या रो मसाला बुझ्यो हो ।

'काई बात है ?' सेनापति कड़क'र पूछियो ।

'हज़र आगे तो कोई मारग नी सुझै ।'

'मसाला पाछो जगावो अर मालुम करौ ।'

सिपाई बापड़ा मसालां चेतन कर, पाछा सुरंग में उतरिया । ई बार अै बीस पचीस पावण्डा आगे गया अर यां नै चार फांटा निजर आया । अै दोन्युं पैला तो अेक मारग कानी ई आगे बघिया पण सार्ग जातों फेह' तीन मारग फंटता । हमें अै पाछो मुड़ण रो मतो कियो बड़ी मुसकिल सूं अै पाछा बारें निकळ'र सेनापति नै हंगीगत बताई ।

हमें सेनापति खुद दस सिपाइयां नै साथे लेय सुरंग में उतरियो । आगे जातों ई, वीं नै चार मारग फांटता दीस्या । वो चार सिपाइयां नै साथे लेय अेक मारग कानी खुद गयो अर लारला छवां नै दो-दो रै हिसाब सूं लारला तीन मारगों में बघण रो हुकम दियो । सेनापति पचासक पावण्डा आगे बधाया अर वीं नै तीन फांटा दीस्या । वो, दो सिपाइयां नै खुद रै साथे लिया अर लारला दो मांघ सूं अेक-अेक नै दूजा दो मारगों कानी आगे बघण रो हुकम दियो । थोड़ी ताळ सेग सिपाई मांघ नै झठी-उठी फिरता रेंया । पण वां नै मार्ग जावण रो बठेई मारग कानी लादयो । उठे तो मारग मांघ सूं मारग निकळता अर सिपाई घूम-फिर नै साथे जाग पाछो पूग जावतो । आ ई गत सेनापति रो रह्यो । संवट वो कायो व्हेग्यो अर मुसकिल सू पाछो बारें घायो । लारला आठ सिपाइयां रो बाबड़ नी लागी । हमें सेनापति, पूनम नैं कैंयो कैं वो असली मारग बतावै । पूनम कैंयो कैं मांघने जठे बी फांटो आवै उठे हावै हाथ रै फांटे में घुस जावो । सेनापति हमें सिपाइयां नै हुकम दियो कैं वे जैतों नैं छोड़, सेग ई सुरंग में अेक-अेक कर उतरै । जद अेक हजार सिपाई सुरंग में उतर चुका तद सेनापति, पूनम अर रमजान नैं साथे ले'र खुद सुरंग में उतरग्यो । दो सिपाई यां रै आगे अर दो सारें, नागो तलवारां लियोड़ा चामता हा । यां सारें, लारला अेक हजार सिपाइयां में सूं, बी जैतों रो दसाळी साहू सुरंग रै बारें ई दकग्या अर बाकी सेग सुरंग में उतरग्या । पूनम यां नै सुरंग में सूब भटो सूं उठी घुमावतो रेंयो । मसाला पण्डरी बुझ चुकी हो । आगे जावतों सुरंग रो मूण्ठी छोटी रहेयो अर ऊबाई बी

बम रहेगी । ई सारू अरें दो सिपाई अरें सागै, भागै बघ सकता भर वे बी बैठैर ।
 पण सुरग रो मारग लंगोलग ऊपर कांती ले जावती । ई सूं सेनापति नै भरोसो रहेगी
 कै वो गढ़ में ऊपर कांती चढ़ रैयी है । सेनापति पाछें मुड़ैर जोयो तो बी नै दस-पन्दरा
 सिपाई घावता निजर आया । पांच-सात भागै जावता हा । हमें घणी सांकडी जागा
 पायगी अर अेक मिनख ई निवळ सकती, भर वो बी सूर्य नै हाथां रें बळ पर । भागै
 मारग खुलासै रो हो, अो अंठै सूं साफ निजर आवती । नागो तलवारां बाळा सिपाई
 तलवारा, भ्यानां मे घालैर हाथां रें बळ पर अेक-अेक कर नै भागै रंगता थका बध्या
 भर भागै जा'र ऊमा रहेगा । ई विचै भागलै सिपाई रो मसाल बुझगी रंगैर जावण
 रो मारग दस-पन्दरा पावण्डां रो हो, ई वास्तै सारै सूं मसालां मिलावणी बी दोरी
 हो । लारै रैयोहा पांच-सात सिपाइयां मे सूं तीन रें हाथां में मसालां ही पण अे बी
 मन्दी ब्हियोड़ी हो । यां रें चानणै सूं मारग दोसती जरूर हो । पूनम बोल्पो कै बी रा
 हाथ खोलदैं तो वो लगती मसाल अेक हाथ मे ले'र अेक हाथ सूं रंगती भागै बघ
 सकै । सेनापति, पूनम भर रमजांन रा हाथ खोलण रो हुकम दियो । भागै गयोड़ा
 सिपाइयां नै वो सावचेत कर दिया । पूनम अेक हाथ मे लागती मसाल ले'र अेक हाथ
 सूं रगड़ीजती, ई खाचै नै पार कर लियो । हमै बी लारै सेनापति बी रंग नै घायग्यो
 भर बी लारै रमजांन । अंठै पूगतां ई पूनम भर रमजांन अेकै भागै मसालां फूंक दे'र
 बुझाय बी । लारै रैयोड़ी अेक मसाल बी गुल बहे चुकी हो । रमजांन भर पूनम,
 सेनापति भर भागै रा दो सिपाइयां रें सातां रो मचकाय अन्धारै में भागै भागग्या ।
 सेनापति भर सिपाई उठै जमी माथै पड़ग्या हा । पाछा ऊठैर सम्भळै बी पैला तो
 पूनम भर रमजान घणा भागै पूग चुका हा । भागै जा'र वे यानै हेली मारियो । अे
 वा रो उवाज रो पोछी करता, सम्भळ-सम्भळैर अन्धारै मे भागै बधता भर आपस
 में टकरीजता । सूं करतां अे आपस मे ई अेक-दूजै नै मारणा सख रहेगा । फेरुं बोली
 सूं ओळख नै पछतावता ।

सेनापति भर घणकरा सिपाई रात भर, ई भूलभुलइया में चकरी चढ़ियोड़ा
 रैया । यां रा हलक सूखग्या । अन्धारै मे घणी रघडां खाय यां रा हाथ, पग भर
 भूण्डा छुलग्या । या में सूं केई चिलकी देख बी कांती लपकता पण भागै जाय भीत
 सूं भचीडो खा जावता । सेनापति मन ई मन पछतावण लागी कै जे वो पूनम सूं
 सोदो तै कर लेतो तो बी नै फोड़ा नी भुगतना पड़ता । हमै वो साव अेकलो रैयग्यो
 हो । वो जोर-जोर सूं कूका करण लागी भर अल्ला रें नांव रो दुवायां देवण लागी
 पण उठै बी रो कुण सुणतो ? सुलतांन रा सो सवा सो सिपाई दोरा-सोरा गढ़ में
 पूग सकिया पण उठै पूगतां ई भाटी तिरदार बां नै ठिकाणै पूगाय दिया । बाकी रां
 में केई तो सुरग मे ई पड़िया-पड़िया टसकता हा । घणकरा सिपाई तो सुरग सूं

निकळ'र खाई में फमग्या । सुरंग मांय सूं श्रेक मारग खाई में ले जावती हो । दस बीस सिपाई पाछा सुरंग रें मूण्डें तक पूग सकिया । पण भठं दो सिलावां पाछो घरीजयो ही घर बिच्चं रो श्रेक सिला री ठोड़ निकळण रो मारग हो । बीवली सिला कम चवड़ी हो । इत्ती सोकड़ी जाणा मांय सूं व्हेर बारें निकळणो बीत दोरी हो । श्रे लोग मांय सूं घणां ई हेला पाड़िया पण भठं यां री कृण सुणती ? जेंटां री ख्याळ सारू बारें रेंयोडा सिपाइयां नें तो पूनम रा घादमी कदका बग्दी बणाय चुका हा भर जेंटा समेत बां नें उठें सूं आपरें सागें लेयग्या ।

(३०)

आमै-सामै री लडाई मे भाटी हार चुका हा । ईं वास्तं वानें गढ़ साली करणो पडियो । सुरंग रें मारग, तीन हजार भाटी सिरदार गढ़ मांय सूं बारें निकळग्या । स्वामी श्री, देवी री मिन्दर छोड़ण नें राजी नी गिह्या । राव भर दूजा सिरदार वानें घणा ई मनाया पण स्वामी श्री री श्रेक ई पडुत्तर हो— “मनै मां री इग्या नी मिळी । मां री ख्याळो सारू म्हारा प्राण जावें तो म्हारो जीवण किरतार्थ है । पण मनै भरोमो है कै दुसमण रा पग, ईं दिमा में नी बघ पावेला ।”

गढ़ सूनी ब्हेग्यो । गढ़ में मां रें मिन्दर री ख्याळो सारू श्रेक हजार सिपाई लारें रेंया । इत्तै मोटे गढ़ मे एक हजार सिपाई ह्रींग री गरज बी नी साज सकें हा । पण भड़ किवाड़ भाटी कदैई रण सूं पूठ देखावणो नो सीखिया । राव, श्रेक श्रेक हजार री तीन दुकडिया बणार्ई घर तीन दिसावा में सुलतान नें पाछे सूं घेरण नी निश्चं कियो ।

सुलतान री आधी फौज, सुलतान नें छोड़ पाछो ब्हीर ब्हेगी । वींरा चार मोटा अफसर, सुलतान री हुकम मानण सूं नटग्या, घर श्रे ई लोग, दूजा सिपाइयां नें पाछा जावण सारू तयार किया हा । सुलतान रा घणकरा सिपाई ती मार्या जा चुका हा की सिपाई सेनापति भर पूनम सागें खजाने री खोज मे जा चुका हा । पाछा मुड़ण बाळा सिपाइयां री सबसू मोटी सिक्कायत रोटी-पांणी री हो । घुड़ो उडणें सूं रोटियां भर साग में किड़किड़ घावती । लारला दो दिनां सूं या लोग नें, नी ती मांस मिळियो नो धापमो पांणी । सुलतान री सारी कोसीसां बेकार ब्हेगी । चार-पांच हजार सिपाइयां रें ब्हीर व्हे जाणें सूं सुलतान री खुदगे फौज रा सिरफ तीन हजार सिपाई लारें रेंयग्या । यां रें इलावा डेढ-दो हजार सिपाई बाराह भर लंगा रा हा ।

रात रो पैलो पीर निकळग्यो पण सेनापति पाछो नी आपो तो सुलतान गैर सोच मे हूबग्यो । वो आपरा की भरोसबन्द सिपाइया नै सेनापति नै जोशण मारु भेजिया, पण वां नै ग्यां नै बी घणी देर व्हे चुकी हो । सुलतान हम्मे घणे सोच मे पड्यो । अकर तो वो खुद घोडें माथे बंठ'र जावण नै तयार व्हेयो पण बी रो निजू सलाकार, वो नै समझा-बुझा'र रोकियो । अठी प्रकृति बी सुलतान सून बँर बाढण सारु तयार व्हेयी । पच्छम सून आंधियां छडण लागीं अर वीं रे सागें ई घुडो, तम्बुवां में बाढण लागी । तेज तोफाण रँ कारण केई तम्बुवा रा खूँटा छलळग्या, कनातां फाटयी अर तम्बू फाटग्या । घोर अन्धारी व्हेगी । मसालां कद की बुझ चुकी हो । आंधियां खोलतां ई, वे घुड सून बूरीज जावती ।

भाटी ईं मोर्क रो फायदो उठायी अर वे सुलतान रँ डेरें माथे धावो बोल दियो । पण अंधी अन्धारी हो के हाथ सून हाथ नी सूझतो । ईं वास्ते भाटी मिरदार, बोत सम्मळ-सम्पळ'र आगें बधिया । हडबडाट में यवन सिपाईं अठी-उठी भागण लागे । सुलतान ईं तुंबी आफत सून धवरायग्यो । पण वो हीमत नी हारी । वो फौज नै हुकम दियो के संग गड रो दिसा मे भाग'र मोर्चा जमा लेवे । सुलतान रँ हुकम दियां पैला ईं निरा यवन सिपाईं गड कानी भाग चुका हा क्यूं कं वीं दिसा मे भागण मे भी तोफाण बी वां रो मदद करतो अर लारें सून घुडो आवण रँ कारण थोड़ी-थोड़ी ताळ सून आंधियां खोल'र देख्यो जा सकती ।

ईं बिच्चे भाटी सिरदार, सुलतान रँ खजाने रो पेटिया तक पूग चुका हा । उठें जम'र तलवारां कटकी पण यवन सिपाईं घणी ताळ नी टिक सकिया । सुलतान थोडो ताळ पैला खुद बी गड कानी भाग चुकी हो ।

पण पुनम रँ सागें गयोडा सिपाइयां मांय सून कोई पचासक यवन सिपाईं, मलें पांणो रो निकासी रँ मारण सून गड मे घुमग्या । वे खासी ताळ अठी-उठी छिपता फिरता रेंवा । गड मांयला हजार भाटी मिरदार जाणता हा कं सुलतान रो बाप बी गड नै नी तोड सकें ईं वास्ते वे निसंग दारु पो नै सूयग्या । दस-वीस सिपाईं निगराणी सारु जरूर जागता हा ।

गड में घुसियोडा अं पचास यवन सिपाईं, चार-पांच भाटी सिरदारा माथे भेकें सागें धावो बोल'र वां नै जमलोक पोचा दिया । हम्मे वे अकर तो खजानो लूटण रँ सोम सून मन्दर अर मोलां कानी दग धरिया पण उठी नै घणकरा भाटी सिपाइया नै देस मे उठें सून घुपवाप पाछा ब्हीर व्हेगा । हम्मे अं गड रो प्रोळ खोलण रो मतो कियो । जद मे प्रोळ बने पूगा तो मांयने लागोड़ी सांकळां देखने ममळग्या कं वे, पचाम छोट सी सिपाईं बी भेळा व्हे जावे ती यां सांकळां में काटणी शोरी हे । पण केडें बो अं सोग प्रोळ खोलण सारु खासी मायाकोड करता रेंवा या रो खटखट रो

सवाजां सुण च्यार हाथी अठी-उठी सून निकळ आया । अकेर तो अ हाथियां न देव
 चढरायग्या । पण अ समझत्या क या हाथियां र जोर सून ई अ साकळां तोड़ी जा
 सकें । च्यार-पांच जणा न तो हाथी भावरी फेट मे जेर ठिकाणे लगा दिया । पण
 सेवट अ लोग हाथिया न काबू कर लिया अर हाथियां रो मदद सू साकळां खांबेर
 प्रोळ र अके क्वाड न थोड़ी सीक खोल लियो । हमे या रो खुती रो ठिकाणो नी
 रयो । या मे सून च्यार-पांच सिपाई, सुलतान न खबर करण सारु दोड़िया । पण
 बारें तो जोर रो तोफाण ही, सो यां रो आखियां बूरीजगी अर अ ज्युं पग प्रागे
 बधावे ज्युं पाछो पड़ें । काया व्हेर अ पाछा गड र मांय घुसग्या । तोफाण र तेज
 वेग सून गड रो कुंवाड बी धूजण लागो । तोफाण रो सांय-साय र इलावा की नी
 सुणीजतो । ई तोफाण सारु हाथियां रो बी ऊमो रेवण रो होमत नो व्ही । वे बी
 उल्टा पगां पाछा भापे ठायो ऊपर जाय बंटा । घोर-घोर असमान मे हलकी सीक
 चानणो व्हेण लागो । हमे तोफाण रो वेग बी की कम व्हेणो हो पण घुडी बरोबर
 उडतो हो ।

हमे अ लोग पाछा सम्मिया । दस जणा अके सागे गड सून बारें निकळया
 अर पडता-गुडता अ खासी ताळ पछे सुलतान कने पूगा । यां सून आ खबर सुणता
 ई सुलतान न जाणे गडियोडी खजानी मिळग्यो व्हे ज्युं वो उल्ल पड़्यो । वो हुकम
 दिपो क संग गड मे घुस जावें । गड न लूट लै, मिन्दर अर मूरतिया तोड़ दे अर राव
 न जीवत न बन्दी बणाय त्यावे । राव न जीवतां न बन्दी बणाय लावण सारु,
 वो, पांच सो मिश्कळ रो इनाम देवण रो बी कोल रियो । सुलतान रा हारया-याका
 सिपाइया मे, गड र दूटण रो सुण न नुंवे जोस बावड़ियो । वे भूला-तिरसा ई,
 दूणे जोस सून गड कांती लपकिया । हमे वांन संग सुपना पूरा व्हेता लखाया । गड रो
 सम्मत लूटण र जोस में, वे, संग दुबधावां भूलग्या । तोफाण हमे कीं धोमी पड़ग्यो
 हो पण सुलतान रो फीजा तोफाण र वेग सून गड मे चढण लागी ।

सुलतान रा तीन हजार सिपाई हडाके सून गड रो टेडी मेढी घाटियां
 चढग्या पण टेठ ऊपर पूर्ण पछे बी अके दुबधा वां माभी आ ऊमो । लाख
 गड, जठे क भोल, मिन्दर अर मण्डार इत्याद हा, वो अके बिसरके परकोटे
 सू घिरयोड़ी हो अर बी रो रुखाळो सारु अके मोटो अर मजबूत प्रोळ मठे बी
 बन्द पडी हो । पैला तो अ प्रोळ र मचोड़ा देणा सारु किया अर या पल्ला
 अर बिसमिल्ला इत्याद करता रया । पारें हाके सून मापला भाटो सिपाई बी सावचेत
 रहे चुका हा । वे कमरा कसली अर मूछा र बट्ट देय करडालट्ट व्हे, सम्मलग्या ।
 जद यत्रन सिपाई मधीडां सून प्रोल न नी तोड़ सकिया तद वे सेवट सिपाई र
 सांवां ऊपर सिपाई न ऊमो अर, गोसडां तक पूगाय दियो । सबसू ऊारतो

सिपाई जद गोखई में पूगयी तर वो ऊपर कैकिपोठै रस्ते ने गोखई रे थम्बे सून बाध दियो। हमे ई रस्ते की मदद सून दस बारा सिपाई, दाता बिचने नाथी तलवारां दबाय, घबाघब ऊपर चढ़या। पण अठ बी मांय घुमण रो मारग बन्द हो बमू के आडी भाटी रो जाळियां लागोड़ो हो। कोई बस नी चालती देख, मैं लोग जाळियां रे मचीड़ा देवणा सुरू किया। ई सून दो सिपाइया रा खांवां हटया घर अरे रे माथे सून भगग भगग लोई बंदणो सुरू व्हेगी। बी रो भगनाळ खुलगी हो। इबे यां ने ग्रेक दूजो उपाव सूझियो। मैं नीचे सून भाटी रो ग्रेक गोळी ऊपर भगायी अर वीं सून ठोक ठोक'र, जाळी रो थोड़ी सो भाग तोड़ लिया। हमे एक सिपाई मांय घुसग्यो अर बी लारे दूजा, चार रतले तरीर रा सिपाई बी मांय घुमया।

मांय घुमियां पछे मैं लोग आगे बधिया। च्पारुं मेर निजरां फेरता यकी मैं सम्मळ सम्मळ'र आगे बधणा सुरू व्हिया। मैं अजूं ग्रेक खुले डागळे ऊपर हा। ऊठे सून याने मांयली कान्नी नीचे उतरण रो मारग अजूं कान्नी लादी। यां ने ऊपर फिरता ने नीचे सून भाटी सिपाई देख लिया। वे नीचे सून ई याने लजकार्या अर ई रे समचे ई नीचे सून दो-चार तीर अर खाण्डा ऊपर आया पण मैं लोग बी सून फेट बचाय दूजो कान्नी भागया। अठे याने नीचे जावण सारु ग्रेक नाळ दोसगी। यां में सून ग्रेक सिपाई, नीचे ऊमा सिपाइयां ने हगोगत बताई तो कोई तीन-चार सो सिपाई रस्ते ऊपर चढ़'र ऊपर पूगया। हमे नीचे जावण लागे। मैं लोग बैठा बैठा मैदक चाल सून आगे बध रया हा, ई वास्त बचया। इतरे मे भाटी सिपाई बी ऊपर जम'र तलवांगं कड़काई। यवन सिपाई धाने सून नीचे पोंच चुका हा। जद मैं प्रीळ रे मांयली कान्नी पूग तो उठे तीन भाटी सिपाइयां सून यारों मुकाबली व्हियो। अर वे तीनु श्री जो सरण धरे। हमे या मे सून ग्रेक सिपाई मांय सून प्रीळ रा किवाड़ खोल दिया अर ई रे समचे ई यवन सिपाइयां रो दळ मांय घुसग्यो। भाटी गिणतो मे थोड़ा रयाया ग्रेक हथार मांय सून तीन सो ती डागले ऊपर लड़ता हा, दो सो देवो रे मिन्दर अर मोला रो रसाळी सारु उठे मोरची लियोड़ा हा, बाकी अठे खुले आगणें में दुमण रे रोक्ण सारु जूकता हा सून कर घमासाण लड़ाई चालतो रयो अर आधा ऊपर भाटी सिपाई मारिया जा चुका हा। बी अथमिया टसकता हा ज्याने चीय ने यवन सि ई मिन्दर अर मोला कान्नी आगे बध रया हा।

मिन्दर में स्वामी श्री, देवी रो पूजा में लागोड़ा हा। बारें रा हाका अर तलवारां रो कटाकट सून वे समझ चुका हा कि हमे दुमण वा तक पूगण वाली है। वे देवो रो पूजा पूरण कर, गरभग्रह रे बारें घाय बैठग्या। गरभग्रह रा किवाड़ बन्द कर दिया अर स्वामी श्री, आमण मार्चे बैठ'र देवो रो रवुति में संगीत छेड़

उवाजा सुण चार हाथी अठो-उठो सू निकळ आया । अकर तो अ हाथियां न देल
 घबरायया । पण अ समझया के या हाथिया रे जोर सू ई अ सांकळां तोड़ी जा
 सके । चार-पांच जणां न तो हाथी आपरी फेट मे ले'र ठिकाणे लगा दिया । पण
 सेवट अ लोग हाथिया न काबू कर लिया अर हाथियां रे मदद सू सांकळां खांच'र
 प्रोळ रे अक किवाड़ न थोड़ी सीक खोल लियो । हमे या रे खुसी रे ठिकाणी नी
 रीयो । या मे सू चार-पांच सिपाई, मुलतान न खबर कण मारु दोड़िया । पण
 बारें तो जोर रे तोफाण ही, सो या रे आंखियां बूरीजयो अर अ जू' पण आगे
 बघावे जू पाछो पड़े । काया व्हेर अ पाछा गढ रे माय घुसग्या । तोफाण रे तेज
 वेग सू गढ रे हुंवाड बी धूजण लागो । तोफाण रे साय-साय रे इनावा की नी
 सुणोजतो । ई तोफाण सामे हाथियां रे बी ऊमो रैवण रे होमत नी व्ही । वे बी
 उल्टा पना पाछा पाप' ठायां ऊपर जाय बंठा । धीरे-धीरे असमान मे हलकी सीक
 चानणी व्हेण लागो । हमे तोफाण रे वेग बी की कम व्हेणो ही पण धुड़ी बरोबर
 उडतो ही ।

हमे अ लोग पाछा सम्मिया । दस जणा अकें सागे गढ सू बारें निकळया
 अर पडता-गुडता अ खासी ताळ पछे मुलतान कने पूगा । यां सू आ खबर सुणता
 ई मुलतान न जाणे गढियोडी खजानी मिळयो व्हे जू वो उछळ पड़यो । वो हुकम
 दिथो के मंग गढ मे घुम जावे । गढ न लूट ले, मिन्दर अर मूरतियां तोड़ दे अर राव
 न जीवते न बन्दी बणाय ल्यावे । राव न जीवतां न बन्दी बणाय लावण सारु,
 बो, पांच सौ मिशकळ रे इनाम देवण रे बी कील रियो । मुलतान रा हारद्या-थाका
 सिपाइया मे, गढ रे टूटण रे सुण न तुं'वो जोम बावडियो । वे भूला-तिरसा ई,
 दूणे जोम सू गढ कांनो लपकिया । हमे यां सेंग सुपना पूरा व्हेता लखाया । गढ रे
 समरत लूटण रे जोम मे, वे, सेग दुबधावा भूलग्या । तोफाण हमे की धीमो पड़ग्यो
 ही पण मुलतान रे फोजां तोफाण रे वेग सू गढ मे चढण लागो ।

मुलतान ग तीन हजार सिपाई हडाके सू गढ रे टेढी भेड़ी घाटिया
 चढग्या पण टेठ ऊपर पूगा पछे बी अक दुबधा वां सांमो आ ऊमो । साव
 गढ, जठे के मोल, मिन्दर अर भण्डार इत्याद हा, वो अक बिसरके परकोटे
 सू घिग्योडी हो अर वो रे रुखाळी साम् अक मोटी अर मजबूत प्रोळ अठे बी
 बन्द पठी ही । पैला तो अ प्रोळ रे अचोड़ा देणा सारु किया अर या धरना
 अर बिमबिल्ला इत्याद करता रिया । बारें हाके सू मामला माटी सिपाई बी सावचेत
 रहे चुका हा । वे कमरां कसली अर मूछां रे बट्ट देण करडालट्ट व्हे, सम्मनग्या ।
 जद यधन सिपाई अचोड़ा सू प्रोळ न नी तोड़ सकिया तद वे सेवट सिपाई रे
 ऊपर सिपाई न ऊमो अर, गोसहां तक पुगाय दियो । सबसू ऊपरलो

सिपाई जद गोखड़े में पूगयी तद वो ऊपर फेंकियोड़े रस्मे न गोखड़े रं थम्बे सूं बांध दियो । हमै ईं रस्मे री मदद सूं दस बारा सिपाई, दाता बिच्च नागी तलवारां दबाय, धबाधव ऊपर चढ़या । पण अठे बी मांय घुमण री मारग बन्द हो वयूँ के आडी भाटे री जाळियां लागोड़ो ही । कोई बम नी चालती देख, अं लोग जाळियां रं भचीड़ा देवणा सुरू किया । ई सूं दो सिपाइया रा खांवां हूटग्या घर अंक रं माथे सूं भगग भगग लोई बैवणी सुरू व्हेगी । बी री भगनाळ खुलगी ही । इधे यां नै अंक दूजो उपाव सूंभियो । अं नीचे सूं भाटे री अंक गोळी ऊपर मगायो अर बी सूं ठोक ठोक'र, जाळो री थोडो मो भाग तोड लियो । हमै एक सिपाई मांय घुसग्यो अर बी लारं दूजा, चार पतलं सरीर रा सिपाई बी मांय घुसग्या ।

मांय घुसिया पछे अं लोग आगे बघिया । क्याहूँ मेर निजरां फेंकता यकां अं सम्मळ सम्मळ'र आगे बघणा सुरू व्हिया । अं अजूं अंक खुले डागळे ऊपर हा । ऊठे सूं याने मांयली कानी नीचे उतरण री मारग अजूं कौनी लादो । यां नै ऊपर फिरतां नै नीचे सूं भाटी सिपाई देख लिया । वे नीचे सूं ई याने ललकार्या अर ईं रं समचे ई नीचे सूं दो-चार तीर अर खाण्डा ऊपर आया पण अं लोग बी सूं फेट बचाय दूजो कानी भागग्या । अठे याने नीचे जावण सारू अंक नाळ दीसगी । यां मे सूं अंक सिपाई, नीचे ऊभा सिपाइयां नै हगीगन बताई तो कोई तीन-चार सौ सिपाई रस्मे ऊपर चढ़'र ऊपर पूगग्या । हमै नीचे जावण लाग्या । अं लोग बैठ बैठ मँडक चाल सूं आगे बघ रया हा, ईं वास्ते बचग्या । इतरे मे भाटी सिपाई बी ऊपर जम'र तलवारां कडकाई । यवन सिपाई छाने सूं नीचे पींच चुका हा । जद अं प्रोळ रं मायलो कानी पूगा ती ऊठे तीन भाटी सिपाइयो सूं यारों मुकाबलो व्हियो । अर वे तीनू श्री जो सरण व्हेगा । हमै या मे सूं अंक सिपाई मांय सूं प्रोळ रा किवाड खोल दिया अर ईं रं समचे ई यवन सिपाइयां री दळ मांय घुसग्यो । भाटी गिणतो मे थोड़ा रयग्या अंक हजार माय सूं तीन सौ ती डागले ऊपर लड़ता हा, दो सौ देवो रं मिन्दर अर मौलां री रुखाळी सारू ऊठे मोरचो लियोडा हा, बाकी अठे खुले आगस्पे में दुममण रं रोकण सारू जूझता हा यूँ कर घमासाण लड़ाई चालती रयी अर आधा ऊपर भाटी सिपाई मारिया जा चुका हा । की अधमरिया टसकता हा जवागे चीय ने यवन सि । ई मिन्दर अर मौलां कानी आगे बघ रया हा ।

मिन्दर मे स्वामी श्री, देवो री पूजा मे लागोडा हा । बारें रा हाका अर तलवारां री कटाकट सूं वे समझ चुका हा कं हमै दुममण वा तक पूगण बाळी है । वे देवो री पूजा पूरण कर, गरभग्रह रं बारें आय बैठग्या । गरभग्रह रा किवाड बन्द कर दिया अर स्वामी श्री, आसण माथे बैठ'र देवो री स्तुति में संगीत छेड़

दियो : दुसमण मिन्दर तक पूग चकी ही भर हूँ जं मां तन्नी भर घल्ला बिस-
मिल्ला री घुनिया साफ सुणीजती ही । पण स्वामी श्री, निरलेप भाव सून सगीत
रै समदर में गोती लगावण सारू किनारै तक पूग चका । हूँ वां नें खुदरै सुरां
रै इलावा कोई घुनी नो सुणीजती ही ।

यवन सिपाई, मिन्दर में घुसण सारू तागत लगावता रैया पण मठें भेक
भाटी सिरदार पांच री गरज सामती । मू कर मिन्दर रै बारें सोई री नन्दी
बैवणी सरू व्हेगी । हूँ मन्धारो बो पड़ चुकी ही ईं वास्तें हारपोडा यवन, रात भर
री नैचो धारिलियो ।

(३९)

राव रै पीढण रै मौल सून से'र मा तन्नी रै गरमग्रह ताईं भेक गुपत पारग
हो । हमेस ऊटताईं राव पैला देवी रा दरसण करता पछें वारा नैण केरू कीं देखता ।
वां री मुख साकळीं पैला देवी री स्तुति करतो पछें वे कियी सून बोलता । ओ राव
री नितनेम हो ।

राव नें गढ दूटण री ठा पड चुकी ही । इवें माखरी जुद व्हेणो बाकी ही ।
राव घापरी सारी सगती लगा चुका हा । इवें वां नें सिरफ मा तन्नी री घामरी ही ।
भर वा नें पक्की भरोसो हो कै मां, वां री मसा पूरी करेला । ईं वास्तें सारी बातां
सोच-विचार, वे घाघी रात में मां तन्नी रै मिन्दर, वीं गुपत मारग सून बहीर व्हिया ।

क्याहं मेर सुनियाड़ ही । दूटोडा मौलां रा खण्डा, खुदरै खण्डण री कांणी
कैवण सारू चतावळा हा । कठैईं भळण सून सिपाळिया री दरद भरपोड़ी हूक, हरपा
जावती । जागा-जागा हाडकां रा किंचा खीर दाईं लुकछिप नें घापस में बंतळ करता
हा । यां रै दरद री टीसां सून ऊळीयोड़ी दुरासोसां, यवन नें गिन्दा दी । ईं काळस री
कुळटा रात ये विघवां रै सवाग दाईं उभडियोड़ी, ईं नगरी री रूप, डाकण दाईं डरा-
वणी व्हेगी ही । मसाला भर दीवडां कदकी सूट चुकी ही । कोई-कोई तारा घण
चुनर हा भर वे ईं डाकण नें डरावण सारू दात काढता रैता । मळवें मावें पडती
वा री दीठ सून कोठ रा दागा उघड़ जावता । उभडियोड़ी बागीची, पांसियां बिनां
भूतां रो डेगे व्हे ज्यू लागती ।

गरमग्रह रा किवाड़ बन्द हा । हळको सो पक्की दियां सून किवाड़, राजा री
मान करण सारू छीदा पडया । राव विजय राज, गरमग्रह में घुस'र भेक जोत
जणाई : भेरर वे क्याहं मेर निजरां दोडाय नें सका भेटण री करी कै. उटें, वां रै
इलावा दूजो बोई जीव नो है । वे देवी रै सांमो सीस भुकाय नें नैण मूंद लिया ।

अक विधरमी ई मिन्दर नै तोड़ण मारु हजारों, मील री जातरा कर, अये आयी है ।

मिन्दर में मझाटी चक्कर लगावती ही ई वास्ते हलकी सीक सांय सांय रै इलावा कोई उवाज नी ही । घर घा सांय सांय, सायत बाना री मूँजता रैवण री घादत रै ई कारण व्हे । केई दिनां पछै राव नै अँड़ी भुनियाड़ घर सान्ती मिली ही । निस री मून बी स्यात न्यूतो देतो । भूँ प्रकृति सान्त ही । अँड़ी लवावतो कै प्रकृति धिर व्हेगी है, बैवतीडो वगत, मुस्तावण लागग्यो है । राव सांय सूँ किवाड बन्द कर दिया ।

वे छठै सूँ सिगार री मौड़ी में गया घर नठै सूँ टाळ'र देवी रा बढिया सू बढिया आभूषण घर वेप लियो, देवी रै सिणगार री पूरी सामग्री रै साथ अन्तर पुसप, धूप दीप, इत्याद लेयनै पाछा गर्भग्रह मे आयग्या । सिणगार री मौड़ी मूरती री पूठ मे ही घर गरभग्रह रै मांय सू, ई मे प्रवेम करणी पड़ती । राव खुदरै हाथां सूँ देवी री पूरण मूरत री बड़ै चाव सूँ सिणगार कियो, अन्तर, धूप, घर पुसपां री भेली मैक सूँ गरभग्रह सुगन सूँ भरग्यो, राव, मूरत रै केसर घर चन्दण रचायो, घर सिन्दूर घर काजल बी जागा सर लगाया, आभूषणां सूँ सिणगार कियो घर चूडो पैरायो । अन्तर चढाय नै पुसपां री हार चढायो घर गजरा मूँथ नै देवी रै हाथां मे पैराया । घी री दियो कियो, धूप की, घर माथे ऊपर मुगट पैरायो । पूरी सिणगार कियो पछै वे अक चितरांम माडणियै कलाकार दाई आपरै बणायोई चितरांम नै निरखियो । देवी री मूरत जाणै सजीव व्हेगी । देवी रै होटा घर नैणां सूँ फूटती हलकी सीक मुळकण सू, राव नै घवाणचक यसोधरा री इस्मरण व्हे आयो, वे सोच्यो कै देवी री मूरत नै देख नै ई विघाता, यसोधरा नै पड़ो है ? वे मन ई मन मे तरक कण लाग कै मौमजै सांमो यसोधरा देवी है कै देवी यसोधरा ? वे आपरो आंखियां मसळ नै भरम सूँ मुगत व्हेण री चेष्टा करी पण आख्यां खोलतां ई पाछी वा ई उलभण सामे ही । वा नै विचार आयो कै अँड़ी बिलिया वारी चित्त कठै ई भटकग्यो है । वा नै संताप व्हेण लागो । ई पवितर काम मे बिघन देख, वे घबरायग्या । वे सोचै ती बस आ ई कै बां मे आ कमजोगी कद, क्यूँ घर क्यान घुमगी ? अद्धा री जागा नेह क्यूँ उलड पड़्यो ? ओ कित्ती भारी पाप है कै देवी माथे कोई माणस आसक्त व्ह जावै ? वा री मन खिन्न व्हेगी, माथी चकरावण लागी घर सरीर पसीनै सूँ तर व्हेगी । वारी आख्यां भागै अंधारो छावण लागी घर घावेग मे वे खुदरी तलवार म्यान सूँ बारै काढ़ली । जोवण री अक-अक छिन वा नै भार लागण लागी । वा री माथी तीचे भुकग्यो घर तलवार तणगी । भागल छित मे वे, आपरो माथी काट, देवी नै प्ररण करण री पङ्की तेवड़ली । कंवळपूजा री आखरी चरण ओ ई ही । वा रै निश्चै रै साथ ई बां

रो तलवार वालो हाथ, काठो तणायो घर हाथ नै वेण देवण सारु जू ई तलवार ऊपर ऊठो घर अचाणचक सुणोज्यो "मौ मौ" ।

हडबडाय नै राव ओक दम मूण्डो ऊँचो कर क्याहूँ मेर निजर दोड़ाई । वां नै की नो दोस्यो । देवी रो मूरत पैला दाई मुळकतो हो । राव मन मे मोचिणी "भा, मन रो कमजोरो ओई जी सू कानो नै भरम व्हेणो, घर मन भजूं मुद्द नो बिड़योई हें खातर वो मोघजें सकळप सूनं मनै दिगावणो चावै" । वे भापरें निस्चें नै केहूँ पड्यो किमी भर पाछो मायो भुकाय तलवार ताणलो । केहू वा ई धुनी वां रै काना नै वेण दिमा ।

तीजी वार, राव भापरें निस्चें नै पूरण करण सारु मायो भुकायो ई हो के हँसी रो सुर, वां नै केहू शोक दियो । हमें वां नै लखायो के व्हे, नो व्हे, कोई वम-त्कार है के पछे देवी, वां रो परीवसा लेवै ई । वा नै लागी जाणी वां रै कानां नै कोई कँवई "विजयराज ! मूं तांघजी पूजा मान ली । इवें तेंनै कंवळपूजा करण रो जरुरत कोनो" । पण वा रो विवेक, वां नै भा ई समझावतो रियो के मन रो कम-जोरो रै इलाका की कोनो । समार रा जजाळ भरम रै रुर मे प्रगटे घर भादमी रै सकळप नै तोडण सारु माया आपरा न्यारा-न्यारा खेन रचै । ई वाम्ते साबी पारस रो कठण घड़ी मे बी, भादमी खरो उत्तर सके वो ई, सकळप पूरी कर सकै । भा सोच, वे ओकर केहूँ क्याहूँ मेर निजर फँको । जाणी प्रकृति धिर व्हेणो । वा रै हाथ सू, तलवार छूटगी, ओक छिन सारु वा रो सांसां, निजरां, देहो, मन, विवेक इत्याद धिर व्हेगा । अँही घड़ी हरेक रै जीवण मे भावै जद भा लखावै के से की ओकें सागें धिर व्हेणो है, काई प्रकृति, काई जड घर काई चेतन । काई दोठी, कोई घणदोठी । संग सम्या हीण, अन्धारी । अन्धारी घर अवाय अन्धारी ।

"मौ काई व्हेणो ? ई बिळिया यसोधरा अठे वर्षान आयगी ? तो काई भा यसोधरा ई तो नो हो जकी घड़ी-घड़ी मौ-मौ कँवतो ही । के पछे कठे ई चोर दाई यसोधरा रै प्रति नेह तो नो लुबयोड़ी ही जी खातर देवी इण ने अठे भेगी । ओकर यसोधरा रा दरसण करण सारु ई तौ देवी म्हैने नो रोक दियो ?" पण दिये रै चान्नी में यसोधरा रै आतां ई, वां रो मौ भरम कूडो पड़्यो । यसोधरा माथे निजर पड़तां ई राव रो अक्कल चकरायगी । वे देवी रै जको वेण घर आभूषणां सृ सिणगार कियो ही सागें वो ई सिणगार यसोधरा रै कियोड़ी हो ओही सूनं ले'र चोटो तक सिणगार मे कोई फरक कोनी हो । जठे केसर थेवड़ी उठे केसर, जठे चन्दण चर्पाड्यो उठे चन्दण, वो ई मोतियां रो हार, वे ई बिडिया, वो ई वैणो, घर वा ई वमक-दमक, रत्तो रो बी कठे ई कोई फरक नी । राव गौर सूनं देखिबी, निजरां गाड नै देखियी । देवी रो मूरत घर यसोधरा में, कठे ई कोई फरक वां रो तीखी निजर नी सोध

सकी। वे घड़ी-घड़ी देवी घर यसोधरा नै बारी-बारी सर निरखी, पण वे कोई भेद दोनूँ में नै कर सक्या। अठैं तक कै दोनूँ रै होठा री मुळण, नैणां घर मुखई रा थाव बी सागै वे ही। वे इत्ती फुरती भू निजरा देवी घर यसोधरा रै बिच्चै घुमावता रया कै इण क्रम मे वे आ ई भूल बैठै कै किसी जड मूरत है, अर कुण चेतन पूतली? वे चितवगना रहेगा। हळक सूखग्यो, सासां री वेग बधग्यो, वे हांफण लाग्या। लिलाड मार्य पसीन रा मोती उभरग्या। दिमाग, सोचण री अवस्था त्याग जड रहेगी। जबान, मांय री माय खीचीजणो सरु रहेगी। वा नै लखायो कै वे हमै नै घरती मार्य है नो आभै मे। वे अघर मे भूलग्या है। कोई वां नै मार नै नाखग्यो है। वे बोलणी अर सोचणी चावता। पण खुदरी ओलखांण बी भूल बैठै। वे बन्नाटी खाय ज्यूँ ई घरती मार्य गुड़ण लागा कै यसोधरा रा कोमळ हाथ, वा नै साम्म लिया। यसोधरा आपरै आचळ सूं वां रै हवा करी अर पाखती पड़ी भारी मे सूं गगाजळ रा छाटा दिया, वा रै गळै मे गगाजळ उतार्यो। थोड़ी ताळ, राव बेसुध फंफेडियोई कवूतर दाई, यसोधरा रै खोळै मे चिपियोडा रया। जांणे डाकण भू डरियोडा टावर सासां रोवयोडो मां री गोदी मे छिपनै, दुबक ग्यो है। जद वां नै चेतो आयो तो यसोधरा अळगी व्है, आपरी सागै पैली वाळो जागा लमी रहेगी। ये, अजताई देवी अर यसोधरा मे कोई फरक करण मे समरथ नै हा। वां रै मूण्डै सूं बोत ई दोरी निकळियो 'य...सो...ध...रा...'। यसोधरा अर देवी री मूरत दोनूँ मुळण लागी। राव कवळपूजा री बात बिसर नै इण दुबधा मे अळू भग्या कै दोनूँ मे सूं किसी मां है अर किसी नेह री नाव? अंकर फेरु ई री भेद लेवण सारु, वे पलकां मूंदी, संग इन्द्रियां नै बस मे कर, चित नै अंकाग्र कियो अर तीजो आख सूं ओलखण री चेष्टा करी। पण वांरा ग्यान, ध्यान अर तरक, संग, फीका पड़ग्या। हाड मांस री अंक पूतली, वां रै मार्य ऊपर सवार रहेगी। यसोधरा, यसोधरा, यसोधरा; वा रै रुं-रुं मे फुरकण लागी, वां री अंक-अंक सास मे यसोधरा धुलगी। वा री बुद्धि, वां नै अघर मे लटकाय विलुमगी। विवेक जांणे कुण खोस नै लेयग्यो। पण कुळवेधी तपो सारु वा री श्रद्धा मे कठई फरक नै आयो। ई वास्तै ई वा नै कम सू कम ई बात री चिन्ता जहर रहेगी कै साचै मन सू देवी रै अरपण रहेण री कामना राकतां यवां बो, वा रै मन मे ससार री मोह कठै छिपियोडो हौ? स्यात आदमी जद अणूतो मरजादावा रै निभाव मे आपरी मंसावां नै दबाव ऊपर दबाव देवतो जावै, तो अंक दिन या तो वो आदमी दूट जावै या पछै ई दबाव सू, अंक अंडी घमाकी व्है कै सारी मरजादावां रा किरचा-किरचा व्है जावै। ससार अर समाज री मरजादावां री पखघर, खुद यां मरजादावा रै धोयैवणे नै उजागर कर, समाज नै अरपण कियोडी आपरी ममोसियोडी मंसावां री बढली लेवै। छोलियोई तीतर दाई, वो तड़फतो जरूर रैवै, पण जदली लेवण री बी री भावनावां अर

उड़ण री मसावां मरें कोनी । ई भांत रें उलटै-सीधे तरकां रें जजाल सू मुगत व्हेण साहू वे घापरौ आतमा नै फेरुं टटोलण री कोसिस करी, पण जद भावनावा भर पिरतख री मेळ व्हे जावं तद आतमा री दगसण, फीकी पड़ जावं ।

यसोधरा ! देवदासी ? यसोधरा अक श्रेष्ठ कलाकार ? यसोधरा ! नेहू री नाव ? यसोधरा ! दुख री दरियाव ? यसोधरा रूप, जोवन भर कोमलता री सरूप ? यसोधरा ! जुद् री आग मे भुलमियोडी भर मसोमीजियोडी अक आतमा ? यसोधरा ! गंगा रें जळ सूं निर्मळ भर पवितर ? यसोधरा ! देवी रें रूप, दया भर माया री दरपण ? समरपण री जागती जोड़, मंसावा नै मार नै विजोग री आग मे बळती मारवणो री भून । जाणै किसान-किसा भर्लकार भर उपमावा यसोधरा सांभो फीकी पड़गो । अंडो यसोधरा भर राव विजयराज री संसर्ग अक नुवं लोक नै जलम दे सकती, पण विजयराज सूं भिल्लियां पैला ई वा देवी रें चरणां मे चढ़ चुकी ही भर देवदासी बणगी । यसोधरा आज जीवण री अक मातर, साच है, अक मातर ययारय । वा नै याद आयो कै रिपि विद्वा मित्र री मनका माथे मोहित व्हेणो समाधी नै सोडणो, भगवान संकर री मोवणी रूप मायें दुळणो, जीवन री साच हो । यसोधरा मे मदस्त्रिक्ये जोवन री चचळता ही । मरद री हिवडो छळण री चुतराई भर चपळता ही । यसोधरा रें रूप भर जोवन में देवतावां रें समय नै बी ललकारण जोग सिमरय ही । बी रें नैणां री घबळीपण भर वां सूं भगतो नेह, कियी री बी मान भर गरव हुळावण जोग हो । विजयराज कनै सत्ता हो, रूप भर जोवन हो, सूरता रें साथे ई तीखी बुद्धि ही । पराकरम रें सामे ई तेज हो, नेह रें सामे ई निष्ठा ही, आस्था भर समरपण हो, हठ भर निबळाई ही भर भोग-विलास रा संग साधन भर सुवधावां ही । वा मे सिमरय रें सामे ई सगती ही, नगर री आघी सूं जादा लुगणां वा ऊपर जोव हुळावती ।

X

X

X

पिरतख में ती यसोधरा रें हाव-भाव सूं राव विजयराज साहू कोई लगाव कै सोम, कठ ई नी लखावती, पण पैलपोत राव रें सामे निरत करता हुयो जद बी बी री निजरां, राव री निजरां सूं मिळी ती बी रें सरीर मे घडयडो छूटण लाग जावती भर सांसां री घड़कणां, आंमरियां दाई भणकार कणो सरू व्हे जाती । बी रें सरीर मे अक उजब उद्रेग सौ भर जावती । राव बी सायत यसोधरा रें सरीर री ई उदबुद भाषा रें अक-अक घासर री भरय समझ लेवता घर वां रें सरीर में बो, ई अण्य री उधेळी देवण साहू गरमास वापर आतो ।

यसोधरा रें भावां मे समरपण री व्याख्या हो, क्रिया नी प्रेम नै घरपावण री घाडी, बी रें सामे उलझ जावती घर घाडी री भरय अणुसमझी ई रें जावती ।

वी रं मन मे स्वामी श्री सारु प्रयाग अहो ही । राव सारु वी रं हिये मे काई हो? इ नं रं मोचणें, समझणें घर प्रगट करणें मे प्रस्ताई ही । स्वामी श्री गी मनेह, घाचरणें घर तपस्या री तेज, यमोधरा सारु लिछमण री कार ही । देवी री घरचना, पवितरता री पांखां फेलायोही, वी मायें छंथां करती घर वी नं इस्मरण कराती रेंती, कं छंथां छोड, तावडें मे गई नो, घर बळ जावेली, कुम्भळा जावेली वा देवदामो वण गुकी हो । वी री घराधना, जीवण री भोग, नेह री नागर, सिरफ देव रं घरपण व्हेणो हो । वी नं देवी री घराधना मे ई जीवण गी सुख सोधणो हो । समार रा सुखां सूं, वा नो ती घणजांण ही नो विमुख वी व्हेणी चावती । समय; साधना री मारण जरूण ही पण ईष्ट नो । जीवण नं रूखी राकणो; वी नं घणो प्रसरतो । वा मुस्तान री राजकवरी वी ही, ई बात नं वा बिसरी कोनो ही । ई सारु राव विजयराज कानी, वी रा संस्कार खीच नं ले जावता । समय री घीच सू वा, मांय री मांय प्रभूभक्ती । वा तिरमी हो, अतिरपत घर बिना कोई ठाये-ठिकोणें, वातनावां रं समदर मे छोडियोही ग्रंही किस्ती ही, जको सद्याळा रं समचें घाय नं किनारां सूं टकरीजती, तोफाण मे भव जाती, केरू किनारां सूं टकरायती पण वी नं, उबारण सारु बोई तिराकू, कठें ई निजर नो घावतो । स्वामी श्री री मानखो, ईं किस्ती नं, ईं समदर री छोळा मे छटपटावण सारु दबावतो । मगदूर है कं कोई रोवडयो कं तिराकू ईं मे बीचबचाव करे ? घा ई ती स्वामी श्री, वी नं सरूपोंत मे दीक्षा दियी ही कं भोग-विलास री सारी सामग्री, वातावरण घर साधन व्हेतां घकां वो, वी नं वण श्रीकणें घई दाई रेंणो पडसी जकी तिरसा लोणां ऊपर पांणी स डेळें पण शुध तिरमी ई रेंवें । स्वामी श्री रं खुद रं रूप, तेज भरूयें चरें, प्रणयाग ग्यान घर समय सांगी यमोधरा री प्रबोली कामनावा, ममोसीज नं तिसकती रेंती । पण भावनावां रं पवाळा-मुखी रं फाटण री भो, वी नं बण्यो रेंतो । वा पचभिष्ट गी व्हेणी भावती, पण जीवण री अपूरणता मे अंक खोळळपण री सलाय, गी गी क्षायो अगतो । मा जलम सूं राजकंवरी ही, देवदासी नो । राजकाररी सू, देवदासी भण. मा भगती घर घराधना मे जीवण री सुख हेरण सारु निकळ पडी ही । पुगती री गणा, वी नं मुस्तान सू खीच नं तप्रीट तक लिमाई ।

×

×

×

राव फेरू बोलण लागा "देवी यमोधरा ।"

"देवी नो राजन् ! दाती । देवदासी । देवता पुरात, भाटी राजा विजयराज रं चरणों री धूड ।"

"की ? को की कंवई ?"

"म्है. ठीक ई कंवू राजन् ! घाय मारेळ पावरी गीत दिमी, भीं सूं ग्हाई काई फरक पड्यो । म्है तो मग ई मग में अंक देवता रं पड गुकी ही ।"

“मां तन्नो साची माता श्रीई ! साचें मन सूनं कियोही पूजा भर भगती रो मां, परचो भवस देवई !”

“मा म्है जाणू राजन् ! ईं सारु ईं तो मुलतान छोडेर.....”

“मुलतान ?” राव थोडे अचूम्बे सूनं बोल्या !

“हां, राजन् ! मुलतान सूनं !”

“मुलतान रा लणां, सूनं तो मीमजा, वैरी श्रीई, पण देवी यसोधरा ! आप माटी राजा रो सत्कृति रें घरब नें बघावण मे जकी संपीग दियोई, वो पूजनोक श्रीई !”

“राजन् ! भगती रो धूड नें माथे चढायां सूनं, वा, किली काम रो नी रेंवें ! धूड जद तक धूड रेंवें तद तक वा सों कोई रे पग टिकावण रो भघार व्हे, पण माथे चाडियोही धूड नें भेलण रो सामरय बी धरती मे ई व्हे, बस धरती मे ई !”

“देवी ! आप अक कळाकार इज नी पण गुणवान भर ग्यानी बी श्रीई !”

“नी राजन् ! ओ आपरी भरम है !”

“अं मीमजी आतमा सूनं निकळियोडा बोल श्रीई, देवी यसोधरा !”

“आतमा तो दगो बी दिया करे, राजन् ! कयूं कं आतमा रा पणकरा निरणे बी सरीर रें पल मे ई दिह्या करे, जो सरीर मे आतमा रो वासो व्हे !”

“ओ आपनै भरम श्रीई देवी ! दगो, आतमा नी, मन घर नेंण दिया करे !”

“जद म्है चावूंला राजन् ! कं आपरी आतमा, आपनै घोली देव !”

“देवी ! आप म्हैने समभण मे भूल करोई !”

“आप घडी-घडी म्हारें नांव आगें ‘देवी’ जोडेर मनं छिछा जोग कयूं बरणावी राजन् ?”

“हां, देवी ! जे म्हैने ओ इधकार व्हेतो कं म्है आपनै बस यसोधरा ई कंर बतळा सकतो !”

“माटी राजा रा सिरे मोंड, भर समर भर ग्यांन मे मोटा व्हेणे रें कारणे ओ इधकार तो आपनै है, राजन् !”

“ओ ईं तो मीमजी दुरभाग श्रीई कं म्है राजा हों ! प्रजा रो पाळणहार, व्हेणे सूनं म्हैने रोग माणसी, राजसी, घरभ भर समाज रो मरजादोर्वा मे बन्धियोही रेंवणो पडई ! खुद रें मन रो वात बी किलो नें बतावतां सकी भर पडदी राकणो पडई !”

“ओ तो घांरो त्याग है विजयराज....., राजन् ! विमा करो ! सेवट तो लुगार्ई जात ईं है ! बोली भर करमां दोभूं सूनं दोसीली !”

‘नी यसोधरा ! जोकारे अर राव रे सम्बोधण सूं म्है बीत भारी व्हे जावूं । तू कारे मे जकी रस ओई, सनेह अर अपणायन ओई, वा जोकारे मे केत ?’ ओंढी लागे के जीवण मे पैलडो बार, म्है धरनी माथे ऊभो हूं जीव करे के ई अके तू कारे ऊरर जीवण निछरावळ कर हूं ।”

“जीवण तो बीत प्रमोल है, राजन् ! जीवण ई सबसूं मोटी साच है । जीवण ई रस है, जीवण ई चेतन अर गत है । जीवण री गत मे ई, ई री रस है । जद तक जीवण है तद तक ससार है, से की है । ई वास्त ई राजन्, आपने म्हारी भ्रज है के इण प्रमोल जीवण ने यूं खतम करणी ठीक नी । घरम, संस्कृति, धरती, मुलक, जाती, संग जीवण रा आधार है । या माथे जीवण ऊभो है । जद अ खतम व्हे जावें तद जीवण आप ई खतम व्हे जावें । पण जद जीवण ने ई खतम कर दिगो जावें तद अ सारा आधार कूड़ा पड़ जावें । जड़ व्हे जावें ।”

“अर आ क्यूं नी यसोधरा, के जीवण री आधार तामजे सरोखी अके देवी, देवदासी, कळाकार अर लुगाई जात बी ओई ।”

“म्है तो राजन् ! अके नीच अर अधम लुगाई जात हूं ।”

“म्है समझ चुकी हों के देवदासी रे रूप मे, आ अके राजकंवरी बोलई । मुलतान री राजकंवरी ।”

“राजन् ! म्है आपसूं की नी छिपावूंला । केवूंला अर जरूर केवूंला, राजन् ! यसोधरा आपसूं नेह राखे । यसोधरा आप माथे आज सूं नी, बरसां सूं प्राण निछरावळ करण री हूस लियोडी बैठी है । आपने याद व्हे तो मुलतान सूं म्हारी, आपसूं सपण करण सारू, अकेर नारेळ आयो ही, जी ने आपरे अठे सूं पाछो भेज दिगो । यसोधरा तो बी दिन ई मर चुकी ही । सीभाग सूं के दुर्भाग सूं आपरी ई छनरछपा मे देवदासी बण, जीवण री जीत जीत जागती राकण री मोह, पाछो जागयो । यसोधरा तो जुद् री ‘लाय सूं’ बळती धरती री कूँल रे परस सूं ई मर चुकी ही, जद के वा मुलतान मे हजारों बेकसूर मरदां, लुगाया, टावरा इत्याद ने मरता देखा हा । राजन् री नेह, म्हारे जीवण री आधार बणयो अर अठे बी जुद् री इण प्रलेकारी अर विकराळ विनास सीला ने रोकण सारू, यसोधरा री काळजी बळतो रेंयो । पण वा जीव भरने, री बी नी सकी । हर घडो ओ ई डर हो के इण रोवणे-बळपणे सूं पूजा मे बिघन नी पड़ जावें । घरम, संस्कृति अर धरती लागे लुगाई जात बी जीवण री आधार व्हे । पण यां ने बचावण सारू जुद् ई जरूरी व्हे, आ कम सूं कम म्है नी मानूं । जद जीवण ई खतम व्हे जावें तो आधार री रेवणो नी रेवणो, की मंत नी राके । जठे जीवण हे उठे आधार तो आप ई पनप जाती, पण सासी आधार में, आ सगती कोनी के वो जीवण ने पैदा कर सके । वो जीवण ने

पाळ सकें, रुखाळ सकें पण पैदा नो कर सकें । यसोघरा उण जीवण री रक्ता खातर रोई ही राजन् ! जद कै मारे गढ में जुद् रो भूत सवार हो । यसोघरा आपरें नेह रें तोर सून बी जुद् टाळण रो उपाव करती, पण स्वामी थो री तेज घर ताप ई सताप नें दबा दियो । यसोघरा आपरें हिवई री कोर नें साण्डो कर, उडतें मन पाखी री अक-अक पाख खुद है, हाथां सून तोड़ फेंकी । बस अक ई कांमणा, जीवण रो बचियोडो घघार ही कै आपरें चरणां री घुड़ बण नें नी ती कम सून कम आपरी छयां रें परस सून ई जीवण रो गरमास घर मोठास सनोवती रेंवू । मा तन्नो री किरपा सून आज आपसू मिलणी व्हे ई गथो । म्हारो जीवण आज आपसून दो बातां कर पूरण व्हेगो । हयें कोई कांमणा बी मन में रेंयो कोनी । जीवण मे, जिण चोज री लगन ही घर जितो कुछ बी प्राप्त व्हेण री जोग ही बी सून घणी संजो लियो । हमें जीवण रो मूळ तो हासल व्हेगो, आज रो कोई इच्छा बी नी ही, नो है । ई वास्तें जे आपन कवळपूजा करणी ई है राजन् ! तो ल्यो, म्हारो माथो हाजर है, देवी नें घरपण करदी । ई सून बडो सनमान तो आप मनै महाराणी बणा नें बी कद दै सकता हा ? आपनै घजूं घणी जीवणी है राजन् ! राजा घरती री रुखाळ व्हे । मुलतान री राजा तो मिष्ट व्हे चुको है । यवन, पजाब नें बी तेंस-नेंस कर उठें रें गरब नें गाळ दियो है । आप वीर जोधा ही । बुद्बिबान, राजनीतिक, कुसळ राजा घर दयालु दाता हो । ई वास्तें, ई मुसक मे आप ई अक जगती जोत ही, जी सून ससार से चन्नण है ।

यसोघरा, आपरें चरणां री घुड़ माथें छपर चढाली है । आपरी नेह बी नें मिलियो । अरु बी नें काई जोडज ? सुरग तो बी नें अठे ई प्राप्त व्हे चुको ।”

“देवी यसोघरा ! आप म्हैने भीमजा बचना री पाळण करण सून रोक्ने, ठीक नो करीई ।”

“म्हारा देवता ! काई आप या चावो कै आपरें बलिदान पछै यवन, मळेछ घर वाराड, ई घरती माथे विनास करण सारु बच जावें । आपरी यसोघरा री मोळ मंग कर नें, यवन बी री जीवण बरबाद कर दै ?”

“देवी यसोघरा !” राव विजयराम री माथी पाछी अकरावणी सळ व्हेवो घर वे नुंवी उळमण में अळूमणा ।

“हा राजन् ! सारा हिन्दू राजा आपस रा राग-द्वेष घर कुळ नी पोधी मरजादावा सारें मवना री इमदाद करे है । अई यवन, यां सोमा री इमदाद सून आपां रें धरम, सत्यति घर सुतन्तरता माथे धाडो पाडें घर आपां नें छूटें । इली वास्तें मुसक कमजोर व्हेवो है । जीवण रो मोल कोडो सून बी गयी-बीती व्हेवो है । अक-अक जुद् में, हजारों मड़द-लुगामां मरें, लूटीजें, यां री मरजादावां लूटीजें, धरम

नष्ट रहे घर इतिहास पोटियों की जीवण बरबाद करण सार, यां पायायां सून रगीज जावें। इणो जुद् में संग, याराह घर दूजा राजपूत लोग, घापरें गिलाफ भेक विधरमी घर विदेसो मुलतान की पय लियो। बी की इमदाद करी। घातिर क्यूं ? क्यूं नो घटे की ई कोई राजा यां लोगों नें भेक डोर में बांध मर्क ? विदेसो घर विधरमी सून तो जादा नजोक भी गिस्तो घटे रा रेवासियो, घटे रें घरम, संस्कृति, मरजादायां घर घरती की है। घाव में ऊजळो तेज, पराकरम, मुद्दि, राजनीतिक ढोठ, मानवी घर समदर सून बी गैरी हिहदी है। घाव यां नें भेक डोर में बांध नें जीवण की, घापरी सारथकता की परघो दे सकी।"

'देवी पसोघरा ! जे घाव साचांणी मोमजी हेताळू घोंई, तो घाव भेक मइद की भावनायां नें घाछी तरिया पैचाण सकोंई, रास कर नें घों मइद की, जकी खुद घापरें नेह की बन्दी घोंई।' राव नैणां में उम्माद भर बोल्या।

"राजन ! महे घापरी भावनायां नें सिर-भोल्यां ऊपर राकूं घर यां की पूरी सनमान करूं, पण म्हारें कुळ की मरजादा की उल्लंघन करण मे, महे बी सिमरयहोण हूं। संग घापरा दूसमण है। महे संग की कवरी हूं। काई घाव समझ्यो कं घावसू ब्याव कर नें, महे खुसी रें सकूंला ! महे राजपूत कन्या है। ब्याव सून पैला समरपण करण नें रघार कोनी।"

उलटो पासो फंकता घका राव विजयराज घोडा कठोर सुर मे बोल्या "तो पछें झूठी ई नेह की नाटक क्यूं रचा रावयो है ? काई तूं बी घारें कुळ घर जात रें लोगों दाई घिरणा जोग घर बूझी नो घोंई ? महे सून प्रेम की झूठी नाटक कर नें मारग सून भटकावण सारू ई तो तूं भेय नो भाई ? जाणूं ? विजयराज नें बी रें संकळप सून डिगावण की सगती, देवतायां मे बी कोनी।"

"जाणूं राजन ! भा सगती देवां मे कोनी। पण मिनखजूण की, हाड-मांस की, भेक पूतळी मे जरूर है। पण महे घावने संकळप सून डिगावण की नीत सून नो, घावसू भीख मांगण नें भाई हूं।"

"कई भीख ? भेक विखकन्या रहे नें मने दसण की भीख मांग रीयो है ?"

"महे, देवी तनो की भीख मांगण नें भाई हूं राजन ! मुलक, देस, संस्कृति, घरम, समाज, जलममोम की रक्सा की भीख। महे नी तो पय सून विळग हुई हूं, नो घावने ई करणी चावूं। पण घाव खुद मारग सून भटक रीया हो। घावने याद है ? घाव घटे, इणी ठोड़ भेक दिन देस, घरम, संस्कृति घर मिन्दरां की रक्सा करण की प्रतिग्या ली ही।"

"हां ! जण प्रतिग्या नें पूरी करण रें साथे महे भी संकळप बी कियो हो कं यां की रुखाळी ब्हियां, महे कंवळपूजा करूंला।"

“रुखाळी कठिं हुई राजन ! गढ़ दूट चुकी है । दुसमण आपरें मैलां तक पूग चुकी है । किणी पळ, वो घठें वो पूगण वाळी है । आपरी सेना बिखरगो है । गढ़ मे बबियोडा भाटी सिरदार, जद आपनै नी देखेला, तो वा मे वा सरदा, हीमन अर भगती कद रै सकैला कै वे ई मिन्दर री अर मां री मूरत री रुखाळ कर सकै ? ईं बिळिया कंवळ-पूजा करणी अघरम है. कायरता है. अणसमझी है हीमत हारणी है ।”

“बस, यसोधरा, हमें की मत कै । मौमजी माथो चकरावई । म्हैर्न की नी सूझई ।”

राव नै फेरूं चक्कर आवण लागा अर वे जमीं माथे लुढ़कण लागा । पण यसोधरा, वा नै आपरी नरम कळाइयां रै सारें सूं थाम नै आपरी गोदी मे वां री माथो धर, आंचळ री हवा करी । वा फेरूं बोलणी सरू व्ही—

“राजन् ! बस आप अर आप मे ईं वा सगती है कं या संगीं सू भिड सकी अर दुसमण नै मात दे सकी । आप मे वा बुद्धि है कं आप जुद् नै टाळ बी सकी । आपनै जीवतो रैबणी है राजन् । यसोधरा सारू नी सही, आवण वाळी पीढिया सारू कै वे जुद् री भाळ सूं नी भुळसै । प्रेम री संभार बसावै, अर दुसमी नै मनेह सूं जीतण री सामर्थ सपजा सकै । राजन् ! ओक बात अरूं बता दूं कै सबळ विहवां ईं सनेह री जीत व्हे । सबळ सूं सींग डरै । ईं वास्तं सुलै करण री गरज, वां नै रैवै । सबळ व्हेणी ईं जुद् टाळण री उपाव है, समरपण तो आतमहित्या है । आपरी ओ बलिदान आतमहित्या ईं नी पण संगीं री भेळी हित्या री अरपाव है । अणजलमी पीढियां री बी हित्या री अपराध ।”

“यसोधरा ! तूं म्हैर्न आज मात देदी है । म्हैर्न धरम-सकट मे पटक दियो है । म्हैर्न काई करणी जोइजै, काई नी, आ सोचण-समझण री सिमरघ बी तूं सोस ली । म्है यजनी रै सुलतान सामें नी पण तांमजै सामें हार कवूल करूं । इण रै पैला तूं सिरफ मोमजै मन पर मोह नै जीत सकी ही, पण आज तूं, म्हैर्न पूरण मरद नै जीत लिथीई । बुद्धि, तरक, विवेक, आतमबळ संग तांमजै सामें सत्तर पटक नै, हार मानली ओई । अबे तूं ईं म्हैर्न मारग बता । तूं ईं चांनणी कर ।”

“राजन् ! इतो भारी वैन पाळनै म्है जीवती नी रै सकूंलां । म्है काई हूं ? आ म्है खुद भाछी तरिया जाणू । स्वामी श्री सूं म्है ओ ईं गुण हासल कियो है कं खुदने ओळख मळू । देवी तप्री री आ ईं मसा है, कं आप जीवता रैवो । संग देवी राजावां सूं आर भेळ करी । वाराह अर सर्पा नै बेलो बणावो अर हमेस सारू विदेसो रा, इण मुतक नै जीतण रा मनसूबां माथे पांणी फेरदो । आप आपरी तागत पडावो, कुमळ राजनीत सूं भोग पाहोसिया सूं भाइवो करी अर जुद् री हमेम-हमेस सारू काळी मुण्डो करी ।”

“पण मोमजो संकळप ?”

“हां, आपरो संकळप, लो ! ई नै फेरू मजबूत करो ।”

आ कैर यसोधरा आपरें चूड़ें मांय सूं अेक चूड़ उतार नै राव विजयराज रै हाथां मे खुद रै हाथां सूं पैराई अर बोली “इए चूड़ नै अंगीकार करो राजन् ! आज सूं आप चूड़ाला । आ चूड़ म्हारी सवाग है, आ चूड़ सिन्टी रो आदि-अन्त है, आ चूड़ जीवण रो परघ है, आ चूड़ सारी मण्डल है, आ चूड़ ई गत है, आ चूड़ ई चेतन है । चूड़ ई अमाण्ड अर चूड़ ई घरती रो रूप है । चूड़, बल अर सनेह, मर-जादा अर सनमान, गरब अर समरपण है । म्हारी तपस्या अर सतोपणी आपरो रुखाळो करेला । आ चूड़ आपनं अस्टपोर आपरें संकळप रो ध्यान दिरावती रैवेला अर ई रै सार्गे ई, कदैई जे दासी रो बी ध्यान आजावै तो नाराज मत व्हिया । बी नै खिमा कर दीजो ”

“देवी यसोधरा !”

“राजन् ! आप फेरू मन्न देवी.....”

“हां यसोधरा ! तूं यसोधरा नो, देवी भौई । मां ! तांअजा कांई-कांई रूप भौई ? मा, तूं घट-घट मे विराजै । मां, म्हे तैन की-को नांवा सूं पुकारूं ? तन्नोट राय ? यसोधरा ? यसोधरा ? तन्नोट राय ?”

राव, पूरा भावुक व्हे चुका हा । यसोधरा रै नेणां सूं इत्ती देर रुक्योड़ी आंसुवां रो भोटो, पलका रा बान तोड़र बेवणी सरू व्हेग्यो । थोड़ी ताळ, दोन्यू बिर्खे सुनियाड़ वापरणी । मून रो भाखर तोड़ती यसोधरा बोली—“राजन् ! आप पघारो, ठूणो जोस अर हीमत सूं दुसमण नै मार भगावो । आप जद जीत नै पघा-रोला, बी दिन, यसोधरा आप सूं व्याव रचावैला । बी दिन, म्हारी सवाग रात व्हेला, बी रात आप कवळपूजा करोला अर म्हे सतो व्हेला । म्हे उमर भर आपरो बाट जोवूंला राजन् ! उमर ई नो, जलम-जलम तक जोवूंला ।”

“देवी यसोधरा ! म्हे आपनै, मा रै रूप मे देखी भौई । मा रै रूप मे ई आप म्हेनं ग्यान दियो, मोमजै हिड़दै रा किंदाड़ खोल दिया । म्हे इवै नो डिगूं नो डिगूं । इवै तूं मां भौई । मा...मां...मां...”

गरभग्रह मे मां-मां रो लखां धुनिया गूंजण लागनी । राव, तलवार सूं आपरें अंगोठें माथे चीरो लगायो । लोई रो धार फूटण लागी । राव बीं लोई भरयें अंगोठें सूं यसोधरा रै तिलक लगायो अर माथो निवाय, सारी भगती उडेल दी । देवी तन्नो रो मूरत सूं मुळकण रा फूल भरण लागी ।

पांखी स्वात स्तुती सारू आपरो संगीत छेड दियो । हूजा मन्दरा रा टिकोरु...

शेक सांगे, तन्नी राय रे मिन्दर रा टिकोरा सांगे सुर मिळाय बाजण। सरु व्हेगा ।
गाया घर बाछड़ा रम्भावणा सरु व्हेगा ।

पूरब मे भाग फूटी घर सोने रो मिरगी, बन्वणा तुढाय भाग छूटी । च्याहूँ
मेर हवा मे सुगन वापरगी । राव विजयराज नै परम भानन्द सचिदानन्द रो अनुभव
विहयो । वे नैण मून्द नै बी भानन्द रस मे डूब्योडा हा । जद भाष्या खोली तो देवी
रो मूरत नी ही ।



(३२)

राव, ज्यूँ ई गरभग्रह रो किवाड खोलियो घर शेक कटियोडी माथी, माय
नै उछळ'र घायी । सांमै ऊभी सिपाई, बी माथे नै ठोकर लगाय उछळायी ही ।
कपाट खुलता ई चार सिपाई राव कांती भपटिया । श्री सारो इत्तो वंग मे विहयो क
राव, इचरज मे पढ़ाया । वां रै हाथ मे लागी तलवार धजूं ही, वे शेक-दो बार तो
बचाया घर पछै भूखें सेर दाई, यां च्याहूँ सिपाइया माथे दूट पढ़या । यमोधरा
शेकांती ऊभी, घग-घग घुजती ही । वा भीत रो सारो लेवण ज्यूँ ई हाथ, भीत रै
नैही लेजावण लागी घर शेक तलवार बी रो बांव नै चीरती निकळगी । बी रै शेक
बोवै रो लोयो, बच करतो भांगण पड़ियो घर बांव, लटकगी । लोई सून बी रो सारो
देही भरोजगी । वा बकराय नै नीचै पढ़ी । ई बिच्चै दो भूंडकिपां सिर चुकी ही ।
लारला दो सिपाइयां रा सरीर बी जागा-जागा सून चुवण लाग्या हा । राव रै
सरीर माथे बी पाच-सात घाव व्हेग्या हा । शेक हाथ सून, वे सीने सून बैवतै लोई रै
हाची दियो घर दूजै हाथ सून तलवार चलाता रेया । राव रो तलवार रो तीखी घार
घर पलटमी मार सांमै, लारला दोन्यूँ सिपाई बी नो टिक सकिया । वे जीव बचाय,
उठै सून भागण लाग। पण राव रो तलवार सून शेक रो सरीर फाडो व्हे ज्यूँ
व्हेयो घर दूजोई रो टांगां लटकगी । वे दोन्यूँ देवी रै भागण लुटग्या । हमै राव
गरभग्रह रै मांय पडिये माथे नै हाथ मे छठाय, भोळसांण करी । स्वामी श्री रो घड
बारै पड़ियो ही । राव शेक छिन सारु नैण मून्द स्वामी श्री रो इमरण कियो । वा
रै नैण सून मोती सिरग्यो । इत्ते मे निरा सारा भाटी सिरदार भाय पूग। राव, वां
में सून दो सिरदारां नै स्वामी श्री रै सरीर रो रुखाळी रो मार सून प दियो । गरभग्रह
माय सून टसकण रो उवाज गुण, राव मांय नै गया । राव रै हुकम सून घघमरी
यमोधरा रो उपचार, सीन सिरदारां नै सून प दियो गयो । स्वामी श्री सारो मोह त्याज'र
राव, लारला भाटी सिरदारां नै साथे सेय, मिन्दर सून बारै नीसरघा । जे मां तश्री
रा बोव गूजण लाग। राव घर भाटी सिरदार, गड में पुसियोडा यवन मिपाइयां सून

जुझता रँया । भाटी सिरदार, राव नँ उपचार घर आराम करण सारु ताकीद की पण राव क्कणी रो नी मानी ।

सुलतान बड़े चाव घर उमाव सूँ गढ़ में घुसियो पण गढ़ तो खाली पड़घी हो । सेनापति घर पुनम रो कोई बावड़ नी ही । सुलतान मौल में घुसण सारु मौल रो भीतां बी धुडवा दी । पण उठे बी नँ नी तो खजानी ई मिलियो, नी राव ।

सुलतान नँ इण बात रो घणी अफसोस ब्हियो कँ इत्ती मुसीबता नठायां पछे बी, बी रँ की हाथे नी लागी । राजा सूँ बी बी रो मुकाबलो नी ब्हे सकियो । सुलतान रा सारा सुपना चुर ब्हेगा । बी रा सिपाई बी, किले रँ खाली हूँडां मू भचीडा खाय आया, पण वा रँ हाथे की नी लागी । पैला रँ खूट्योड़ें घन-माल में सूँ पाँतो करण सारु, वे सिपाई, सुलतान नँ ताकीद करी । वे लोग दूज ई दिन उठे सूँ जावण रो अँलाण कर चुका हा ।

रात सुलतान रो फौज रा तीन चौथाई सिपाई गढ़ सूँ बारै जावण सारु नीचे उतरया । प्रौळ माथे दूगतां ई जोर रो मार-काट मचगी । केई सिपाई मारचा गया घर केई भाग छूटा । की सिपाई हड़बड़ावता सा पाछा भाग नँ ऊपर आया घर सुलतान नँ खबर की ।

सुलतान नँ आपरै डेर में पड़घे खजाने रो ख्याल आयी घर बीँ रो काळजी, आ सोच नँ बैठयो कँ जरूर लंगा घर बाराह खजानी छूट लियो ब्हेला । वो फुरती सूँ खबर लेवण सारु अफमरां नँ दोड़ाया । पण वे तो सुलतान नँ लाय नँ कोई दूजी रुक्की ई दियो । गजनी सूँ समंचार, लेय नँ हलकारा आया हा । गजनी माथे, काशगर रो तुरक राजा इलेक खा, हमली कर दियो हो । गजनबी नँ घोरां मे फँस्योड़ी जाण, इलेक खां गजनी माथे चढ आयी । जीत नँ पक्की करण सारु वो चीन रँ कादर खां रो इमदाद ली । वो जेहून (आक्सस) नदो नँ पार कर, तोफाण रँ बेग सूँ भागे बघ रँयो हो । वो पुगांणै बैर रो, बदळो लेवण सारु मोर्के रो ताक में ई हो ।

गजनी माथे इलेक खां रँ हमले रो खबर सुण नँ, सुलतान रँ पगां हेटली घरती खिसकगी । वो समझयो कँ हमें बी रँ खोटा दिन आग्रया है । वो अफमरां नँ हुकम दियो कँ फुरती सूँ कूच करण रो तयारी की जावै । ई समंचार सूँ बचिया-खुचिया भाटी सिरदारां रो हीसली बघयो । भाटी सावचेत ब्हेगा । वे पैला तो सोच्यो कँ किले मे ई जग करू करदे पण पछे, वां, तँ करी कँ गढ़ सूँ बारै निकळिया पछे ई सुलतान माथे हमली कियो जावै । गढ़ रो प्रौळ सूँ सुलतान रो बारै निकळणी मुसकिल ब्हेगी । चार घटां रो घमसाण रँ पछे, दो किले सूँ बारै निकळ सकियो ।

च्यारु मेर मार-काट मच्योडो ही । मुलतान नं तो गजनी जावण री उतावळ लागोडो हो ई वास्तं वो कियो तरें सू भेस बदळ नं उठें सू जान बचा नं भागी । वी रं पना तो भागण वाळा नं भाटी नो छोडिया पण पोडो ताळ सू ई वां नं पत्तो लागी कं सुलतान बी भेस बदळ नं मागयो है, तद वे वो रो पीछो करता घणी दूर तक सारें गया । माग म सुलतान री जिकी बी सिपाई धकें पडियो, बी नं वे घरती मायें बिद्यावता गया सुलतान री सारी फौज सतम व्हेगी । पण फौ अफमरा घर सिपाइया साथें मुलतान, जीवती भागण मे कामयाब व्हेगी हालाकें मुलतान मारग मे फोडा पाया । केई तकलीफां उठाई । कठें ई पाळो, कठें ई ऊंट माथें, कठें ई घोडें माथें, वो भूखी-तिरसो दिन-रात सफर तें करतो, सेवट भाटी राज री सोब सू जीवती भाग निवळण मे कामयाब व्हेगी । वी रं साथ रा बी केई अफसर भूज, तिरस, गरमी अर लू सू मर खूटा । इतें भारी लस्कर नं सुलतान लेप नं पायो हो, पण जावती बिळिया वो, साव अंकली हो घर प्राणां री रक्खा सातर, बी कर्न सिरफ अंक कटार ही ।

X

X

X

ई बिच्चें पूनम, राव रं मौल मे राव नं खुदरी जुगन रा समचार देवण सारु गयो तो मौल तैस-नैस व्हियोडो खाली पडियो हो । जागा-जागा कटियोडा, हाथ-पगां रा किरबा, चीथ्योडा घड घर कान कटियोडा माथा रुजना हा । जागा-जागा मांस रा लोथा अर लोई रा चिगडा हा । वो राव रं बी मौल मे पूगी जेत वो राव रं सागें दारु पियो हो अर वा सू वतळ करी । मौल रा किवाड माय सू जुडियोडा हा । वो किवाडां रं लात री मचकाई अर मांय सू जुडियोडो आगळ दूटयो । वो मौल मे घुसियो । मांय नं सारी चीजां सागें ठोड ही । वीं नं कद सू तिरस लागोडो हो । वो दारु पोवण सारु इलमारी रा कपाट खोलिया तो वी नं मांय उतरता पागोतिया मुडग्यो । ग्रैय ई राव री पोवण री मौल हो । वो माय घुसियो । राव री पगरवियां ओष पडो ही । पूनम रं सरौर मे घोडो सो ऋणाटो चाल्यो । अंक वंस वी रं मन में घुसग्यो । वी री मायो चकरावण लागो । वो राव रं पिलग ऊपर पडग्यो । खासी ताळ गयां, वी नं चेतो घायो । पूनम भीत मायें खुदरी छयां देख चबरायग्यो । वो भीत माथें अंक मुडो फडियो । भीत विसकगी । वी नं लागो कं वो, भीत रं मांय घुसग्यो है । वो चालतो रंयो । सेवट, वो वी मारग सू देवी रं मिन्दर मांय पुगग्यो । ओष, अंक लोय ऊपर राती मुगटो ओढायोडो हो अर दो सिरदार, हाथ मे नागी तलवारां लियोडा, मूग्डा लटकायोडा ऊमा हा । वो देख्यो, अंकांनी अंक लुगाई पडो-

पड़ी टसकती हो। बी रै पाखतो बैठा दो सिरदार हवा करता हा। लुगाई रै सरीर सूं लोई बँवती हो। मोय सेगा रै चँरां मायें उदासी अर काळम देख, पूनम रो काळजो धक-धक करण लागी। जाणे कुण बी रै कान मे कैयो 'राव...हवै...नी...' चो नी...नी...नी... कर जोर सू बोबाड़ा किया। वो रींग गावा फाड़ लिपा। बेसां नै खांच-खांच नै गुच्छा रा गुच्छा तोड़ लिया अर हाथों रै जागा-जागा डाचा भरनै मांस रा लोया, बारें लटका दिया। मायें नै गरभग्रह रै तणखल सूं मचीड़ा दे देनै भगनाळ खोल ली। अक सिरदार बी नै समझायी पण वो अणचेत हो। थोड़ी जाल सूं जद बी नै चेतो भायो तो मन्दर सूनो हो। दो पोताम्बर भागणे मे छीदा हा। बी दोनूँ पीताम्बरों नै उपाड़ा किया। अक पीताम्बर हेटें यसोधरा रो लोय पड़ी हों। बी रो अक बीबी कट चुकी हो अर बी जागा दोय बहेगी ही। पूनम जोर-जोर सू कूका करण लागी 'यसोधरा...' 'यसोधरा....' 'यसोधरा...'

"पूनम !"

"कुण घौई ? यसोधरा ?"

"यसोधरा नी, काला, म्है चम्पा हों चम्पा।"

"है ?"

"हवै, चम्पा, है, चम्पा घौई"

"तो यसोधरा ?"

"यसोधरा तो काला, कद की मरी।"

"है ?"

"हवै।"

"पूनम !"

"हवै"

"का...ळ...."

"की ? केत ?"

"बो...बो...सांवे...है खुणे...बीं खुणे...चीकेरु'। हूं, बीघाई।"

"काली बहेगी, काई ?"

"काली म्है नी, तें व्होई गया।"

"घो....म्हैन की नी सूकै !"

पूनम भाखियां फाड़ नै च्याखं मेर खोजण लागी। बी नै की नी सूझती, बी रो भाखियां फाटी रो फाटी रेंकी। चम्पा बी रो हाथ पकड़'र बोली—

"हड़ी करो...हड़ी...बी भावई।"

"को ?"

“काळ”

“म्हें, की नो सूझे !”

“हां, पूनम ! ओ काळ नी चक्कर ओहीई दिहा करे । ओ वातां में बिलमाय नै मिनम नै खुद नै मिट जावे । हें की मिट जावे । पगल्यां रा संनाए बी । घासग रो ओळव मिटादे, ओ काळ !”

‘पूनमी !’

“पूनम ! म्है इयें नो ठेर सकूं । मीपजी वादी पूरो दिह्यो । इवें म्है ओक घड़ी नो ठेर सका । तूं जा...तूं...जा...भागजा....!”

अर पूनम नै जद चेतो घायो तद तक बी रो ओचली आधी मरीर, धूड़ मे दब चुकी हो । वो हाथां नै वारें निकालण रो करतो पण चीं रे चौकेरूं घुठ जमा व्हेण लायगो । बतूळियो, पावळो दिह्योड़ी गोळ-गोळ घूमनी, पड्डें दाई । काळ रे चक्कर दाई । जद तक बी रे बाकें नै धूड़ नो वूर दिथो तद तक वो सगोलण होट हिलावती रेयो । ओक घुनीबिहीण बोन—

‘हूं काळ सू की बीवांनी ।’

फस-फस कर, होठां सूं निकळण लागो । वो नै खुरे पगल्यां रा संनाए मिटता दीसण लागा ।

